आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

जुलाई 2024

क्रान्ति

मासिक

सहयोग राशि
30/-₹

नफ़रत एवं क्रोनी पूंजीवाद के ख़िलाफ़

जन प्रतिरोध की सुगबुगाहट

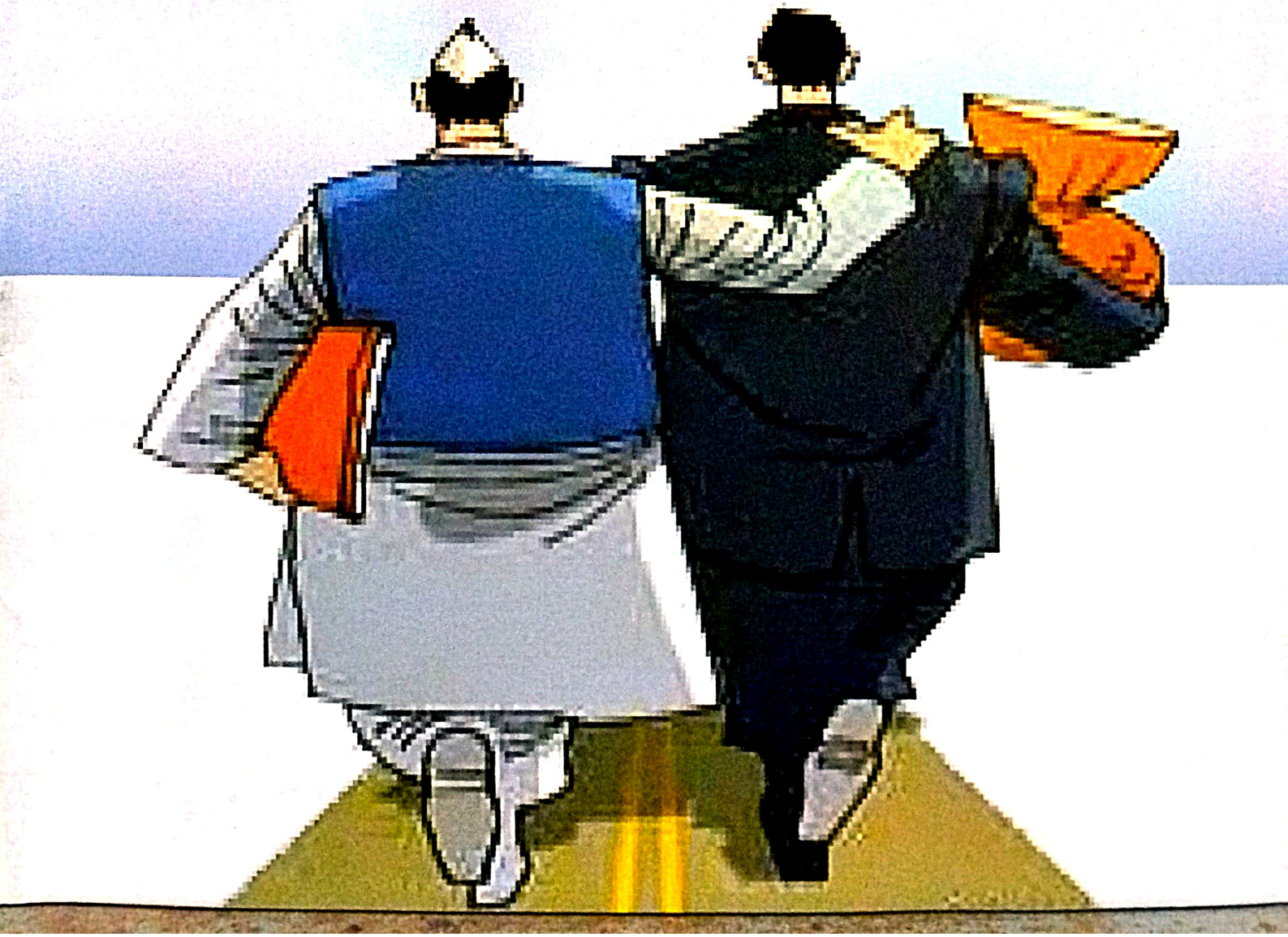

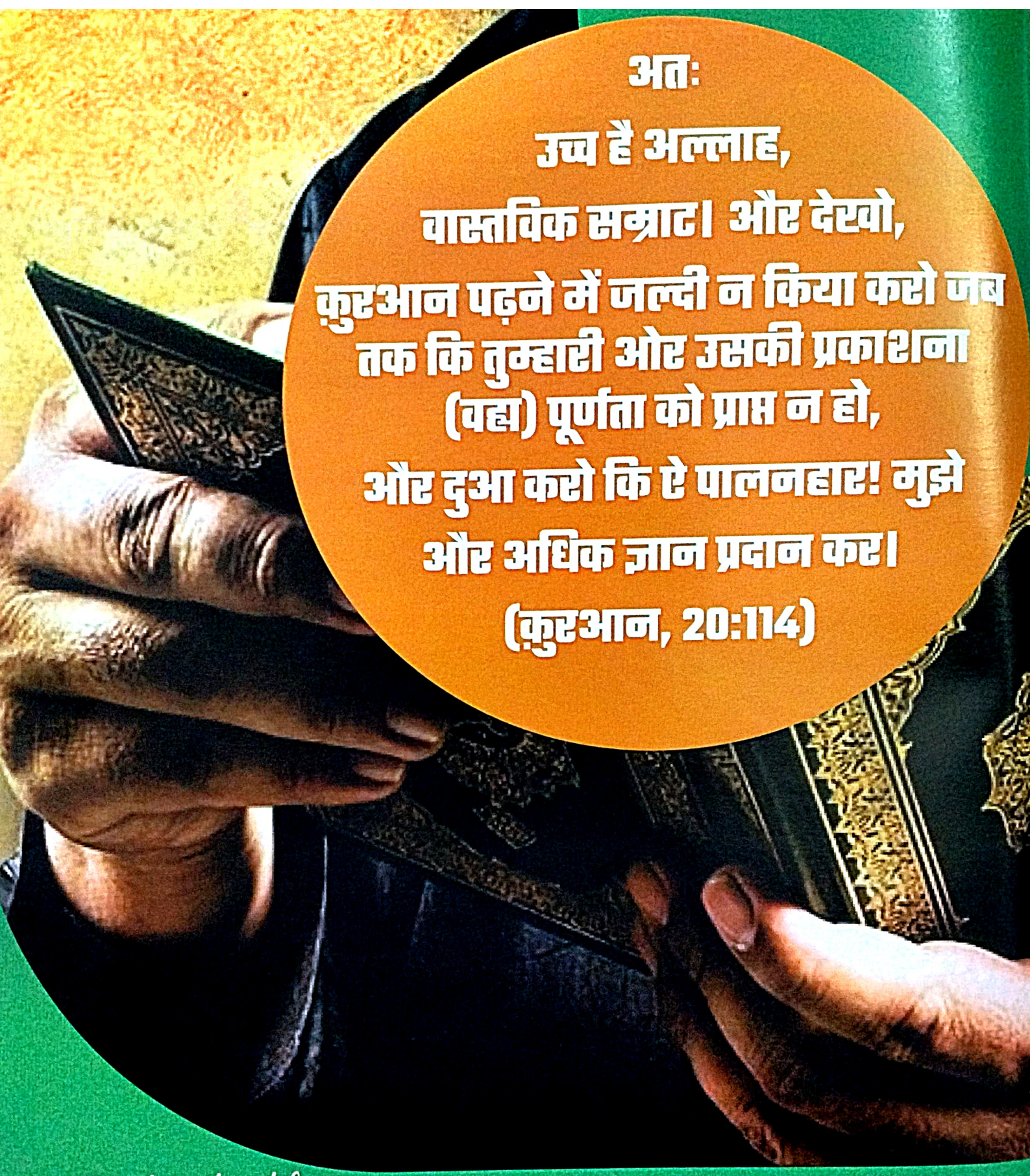

अतः

उच्च है अल्लाह,

वास्तविक सम्राट। और देखो,

क़ुरआन पढ़ने में जल्दी न किया करो जब

तक कि तुम्हारी ओर उसकी प्रकाशना

(वह्य) पूर्णता को प्राप्त न हो,

और दुआ करो कि ऐ पालनहार! मुझे

और अधिक ज्ञान प्रदान कर।

(क़ुरआन, 20:114)

with best compliment from

Md. Masoodul Hasan

Jabalpur (MP)

Website Link :
www.kantimasik.com

संपादक
शिब्ली अरसलान
abuaniqa@gmail.com

प्रबंधक
नईम ख़ान
+91 9891160829

सहयोग राशि

एक प्रति 30/- रु॰	एक वर्ष 350/- रु॰
दो वर्ष 670/- रु॰	तीन वर्ष 950/- रु॰
चार वर्ष 1200/- रु॰	पांच वर्ष 1400/- रु॰

आजीवन रु॰ 4000/-
सऊदी अरब और खाड़ी के देशों के लिए 110/- रियाल
यूरोप व अमेरिका के लिए 40/- US डॉलर

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए सम्पर्क करें :

कार्यालय :
कान्ति मासिक, डी-314, दावत नगर,
अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर,
ओखला, नई दिल्ली-110025

हेल्पलाइन न॰
9818799223

Account Detail
NAME : KANTI
A/C NO : 0990839195
IFS CODE : IDIB000J029
TYPE : CURRENT
BANK : INDIAN BANK
BRANCH : JAMIA MILLIA ISLAMIA
NEW DELHI - 110025

चेक / ड्राफ्ट 'कान्ति' के नाम से बनवाएं

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), डी-314 दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नई दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं
ASILA OFFSET PRINTERS
1299, KALAN MAHAL,
NEW DELHI-110002

संपादक : शिब्ली अरसलान

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है।

वर्ष 34 अंक 01 जुलाई 2024

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब



कान्ति
मासिक

इस अंक में

मूल प्रश्न 04
'धरती के बासियों की मुक्ति प्रीत में है'
शिब्ली अरसलान

चिंतन 07
विज्ञानवाद, विज्ञान और मानव जीवन की अवधारणा
डॉ. मुहम्मद रिज़वान

सौंदर्य बोध 11
बचाओ अपने आपको
नईम सिद्दीक़ी

मुख्य स्तंभ 15
नफ़रत एवं क्रोनी पूंजीवाद के ख़िलाफ़ जन प्रतिरोध की सुगबुगाहट
सुफ़ियान अहमद

अभिमत 19
असहमति का दमन लोगों को नामंज़ूर
अनिल सिन्हा

समाधान 23
ज़रूरी है अति का अंत
संपादन प्रभाग

कविता 25
यही घड़ी है परीक्षा की
मोनिका वर्मा

मंथन 26
हादसों की सड़क
जितेंद्र गौतम

समसामयिक 29
मिथकों का ध्वंस ज़रूरी
डॉ. प्रदीप कुमार

इतिहास का सच और... 32
बसौद का विद्रोह
ख़ुर्शीद आलम

इबारत 37
विश्व का पहला मानचित्र
संपादन प्रभाग

सेहत 39
तीन में से एक युवा हाई ब्लड प्रेशर की चपेट में
संपादन प्रभाग

करियर 41
सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनने के लिए डिग्री की ज़रूरत नहीं
संपादन प्रभाग

यात्रा वृत्तांत 43
मैं हाज़िर हूं...
लियोपोल्ड

आख़िरी पन्ना 47
धर्म का उद्देश्य
ज़ियाउल-हसन उस्मानी

मूल प्रश्न



शिब्ली अरसलान

'धरती के बासियों की मुक्ति प्रीत में है'

(नफ़रत और क्रोनी पूंजीवाद से मुक्ति ज़रूरी)

लोकसभा चुनाव संपन्न हो गए हैं, नई केंद्र सरकार गठित हो चुकी है। हमारा देश एक लोकतांत्रिक देश है। लोकतांत्रिक शासन प्रणाली के तहत हर पांच साल में जन-प्रतिनिधि निर्वाचित होकर देशवासियों के लिए नियम-क़ानून बनाते हैं और देश का नेतृत्व करते हैं। भारत को इस लोकतांत्रिक प्रक्रिया को अपनाये हुए लगभग पचहत्तर साल हो गए। इस प्रकार चुनावी लिहाज़ से भारत एक सफल लोकतांत्रिक देश है।



भारत जैसे बहुलतावादी देश में चुनावी राजनीति में लगातार मूल्यों की गिरावट की वजह से चुनाव के दौरान अपने-अपने वोटर्स-सपोर्टर्स को साधने के लिए राजनीतिक पार्टियां साम-दाम-दंड-भेद की नीति अपनाती रही हैं। संप्रदाय और जातियों को अपना वोट बैंक बनाने के लिए विभिन्न दल 'ध्रुवीकरण की राजनीति' (politics of polarisation)का भी सहारा लेते रहे हैं। परंतु इस आम चुनाव के दौरान देश के वातावारण को जिस तरह विषाक्त करने की कोशिश की गयी थी, वो बहुत ही डरावना था। चुनावी रजनीति से दूर बैठे देश के सारे सच्चे शुभ-चिंतक और सामाजिक-धार्मिक सुधिजन हैरान व परेशान थे कि पता नहीं चुनाव के बाद देश किस करवट बैठेगा। चुनावी सभाओं में राजनीति के शिखर पर बैठे लोगों द्वारा कैसी-कैसी नकारात्मक, भ्रामक और नफ़रत से युक्त बातें की गयीं, खुलकर समुदाय विशेष के विरुद्ध नफ़रत में बुझे तीर छोड़े गए। 'इस्लामोफ़ोबिया' अर्थात् इस्लाम और मुसलमानों के प्रति तर्कहीन घृणा और नफ़रत के पूर्वाग्रह को चुनावी हथकंडे के तौर पर इस्तेमाल किया गया। चुनावी ध्रुवीकरण के लिए कोई कोर-कसर शेष नहीं रखी गयी। मर्यादा और लोकलाज को तिलांजलि दे दी गयी। मगर 4 जून के नतीजों ने सभों को चौंकाया, ईश्वर की असीम कृपा रही, मानवता और मुहब्बत के मूल्यों पर विश्वास रखने वालों ने राहत की सांस ली, उन्हें अपने 'विश्वासों' पर और अधिक विश्वास बढ़ा कि मानवता और मुहब्बत ही सर्वश्रेष्ठ है। विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की परिपक्व जनता ने ये साबित कर दिखाया कि नफ़रत और विभाजन की रजनीति इस देश में नहीं चलने वाली। ये वो देश है जहां बच्चों और बूढ़ों के लबों पर ये गीत मचलते हैं...

"शक्ति भी शांति भी भक्तों के गीत में है
धरती के बासियों की मुक्ति प्रीत में है"

(इक़बाल)

अर्थात् ईश-भक्ति और प्रीत अर्थात् मुहब्बत, शक्ति व

शांति और मुक्ति के सोत हैं। नफ़रत की फ़सल यहां नहीं लहलहा सकती। नफ़रत के बीज अंग्रेज़ों ने ख़ूब बोये, एक हद तक वो अपने षड्यंत्र में कामयाब भी रहे मगर ज़्यादा देर टिक न पाए, उनकी बिसात लपेट दी गयी, उनका सूरज अस्त हो गया।

दूसरी तरफ़, नफ़रत और पक्षपात की ये राजनीति, आर्थिक सतह पर क्रोनी पूंजीवाद (crony capitalism)का सहारा लेती है। राजनीतिक वर्ग और चुनिंदा व्यावसायियों के बीच अपवित्र गठजोड़ को क्रोनी कैपिटलिज़्म कहा जाता है। क्रोनी कैपिटलिज़्म वास्तव में पक्षपात की एक प्रणाली है, जहां केवल कुछ चुनिंदा व्यवसायी या व्यापारिक घरानों को राजनीतिक वर्ग और नौकरशाही से विशेष व्यवहार (special treatment) मिलता है। पुरस्कारों और रियायतों की ऐसी वर्षा उनके पास मौजूद उत्कृष्ट प्रतिभा या विशिष्ट योग्यताओं के कारण नहीं, बल्कि पूर्वाग्रहों के कारण प्रदान की जाती है। भारत में, क्रोनी कैपिटलिज़्म 'लाइसेंस परमिट राज' और उसके बाद आने वाली सरकारों द्वारा उदार और नव-उदारवादी आर्थिक नीतियों को अपनाने का प्रत्यक्ष परिणाम है, इसका जनक मौजूदा सत्तारूढ़ दल नहीं, बल्कि पूर्व के सत्तारूढ़ राजनीतिक दल हैं, उन्होंने इसके बीज डाले और अब भरपूर खाद-पानी डाल कर इसकी फ़सल काटी जा रही है। कांग्रेस राज के विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ), स्पेक्ट्रम आवंटन और खनन अनुबंधों से लेकर मोदी राज के ताज़ा चुनावी बॉण्ड तक सभी क्रोनी कैपिटलीज़्म के घृणित उदाहरण हैं।

नई हुकूमत से जिसमें संख्या बल के लिहाज़ से कथित छोटे और क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की 'किंग मेकर' वाली हैसियत है और प्रतिपक्ष की भी अच्छी पोज़िशन है, ये उम्मीद की जा सकती है कि देश में व्याप्त इन दो नासूरों (नफ़रत और क्रोनी पूंजीवाद) को नियंत्रित करने की कोशिश होगी ताकि देश की वास्तविक भलाई और विकास सुनिश्चित हो।

दुनिया की लगभग सभी अर्थव्यवस्थाओं में क्रोनी कैपिटलिज़्म के अस्तित्व का पता लगाया जा चुका है, लेकिन कुछ संरचनात्मक समस्याओं के कारण भारत में इसकी उपस्थिति अधिक व्याप्त है।

द इकोनॉमिस्ट इंडिया द्वारा प्रकाशित "क्रोनी कैपिटलिज़्म इंडेक्स 2021" में भारत 7वें स्थान पर था, जहां देश के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में क्रोनी सेक्टर की संपत्ति 8% थी।

क्रोनी कैपिटलिज़्म भ्रष्टाचार को जन्म देता है, क्योंकि व्यवसायी अक्सर सरकारी अधिकारियों को रिश्वत देकर बाज़ार में अनुचित लाभ प्राप्त करने के लिये अपने राजनीतिक संबंधों का उपयोग करते हैं। अर्थशास्त्रियों ने लंबे समय से यह प्रमाणित किया है कि अमीर देशों की तुलना में ग़रीब देशों में सरकारी भ्रष्टाचार अधिक है। इन देशों में भ्रष्टाचार का प्राथमिक रूप,अर्थशास्त्री क्रोनी कैपिटलिज़्म बताते हैं।

यह क्रोनी पूंजीवाद क़ानून के शासन को कमज़ोर करने के साथ-साथ सरकारी संस्थानों में जनता के विश्वास को ख़त्म करता है। भारत में पिछले कुछेक सालों में सरकारी और संवैधानिक संस्थानों पर जनता के विश्वास में जो गिरावट आई है, वो बेहद चिंतनीय है।

यही नहीं, जब कुछ व्यवसायों को उनके राजनीतिक संबंधों के माध्यम से अनुचित लाभ दिया जाता है, तो यह बाज़ार की प्रतिस्पर्द्धा को विकृत कर देता है और छोटे व्यवसायों एवं उद्यमियों के लिये सफलता प्राप्त करना कठिन हो जाता है। इस तरह क्रोनी पूंजीवाद विकृत प्रतिस्पर्धा को जनम देता है। जिसने असमानता को बढ़ावा दिया है, धनी और अधिक धनी होते जा रहे और छोटे उद्यम नष्ट होते जा रहे हैं।

भारत में कई ऐसी कंपनियां हैं जो पिछले 6 सालों से भारी मुनाफ़ा कमा रही हैं। ये कंपनियां चुनावी चंदे के नाम पर भारी-भरकम पैसा दान कर रही हैं और कई अनुकूल पॉलिसी और टेंडर हासिल कर रही हैं और भारी मुनाफ़ा लूट रही हैं। अगर आप भारत के अरबपतियों की सूची देखें तो उनमें से कुछ ने पिछले कुछ सालों में अपनी कुल संपत्ति में कई गुना इज़ाफ़ा किया है।

ऑक्सफैम की 2019 की रिपोर्ट, जिसका शीर्षक है "सार्वजनिक वस्तु या निजी संपत्ति" से पता चला है कि भारत के शीर्ष 10% अमीरों के पास कुल राष्ट्रीय संपत्ति का 77.4% हिस्सा है। दूसरी ओर, सबसे निचली 60% आबादी के पास राष्ट्रीय संपत्ति का केवल 4.8% हिस्सा है।

नई हुकूमत से जिसमें संख्या बल के लिहाज़ से कथित छोटे और क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की 'किंग मेकर' वाली हैसियत है और प्रतिपक्ष की भी अच्छी पोज़िशन है, ये उम्मीद की जा सकती है कि देश में व्याप्त इन दो नासूरों (नफ़रत और क्रोनी पूंजीवाद) को नियंत्रित करने की कोशिश होगी ताकि देश की वास्तविक भलाई और विकास सुनिश्चित हो।

■■

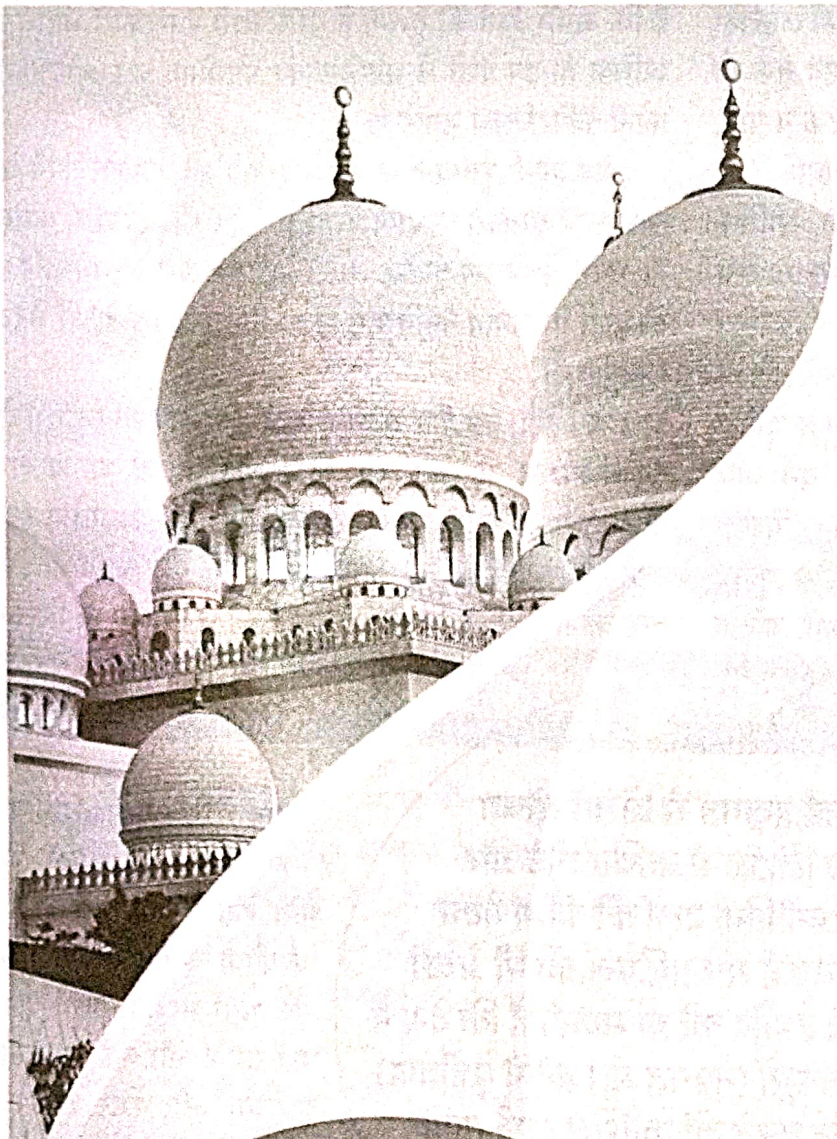

with best compliment from

Mohtarma Nasreen Jabalpur (MP)

"और याद करो जबकि तुम्हारे रब ने घोषणा कर दी कि "वह क़ियामत के दिन तक लगातार ऐसे लोग इसराईलियों पर नियुक्त करता रहेगा जो इनको बहुत ही भारी अज़ाब देंगे।" यक़ीनन तुम्हारा रब सज़ा देने में जल्दी करता है और यक़ीनन ही वह माफ़ी और दया से भी काम लेने वाला है।

(क़ुरआन, 7:167)

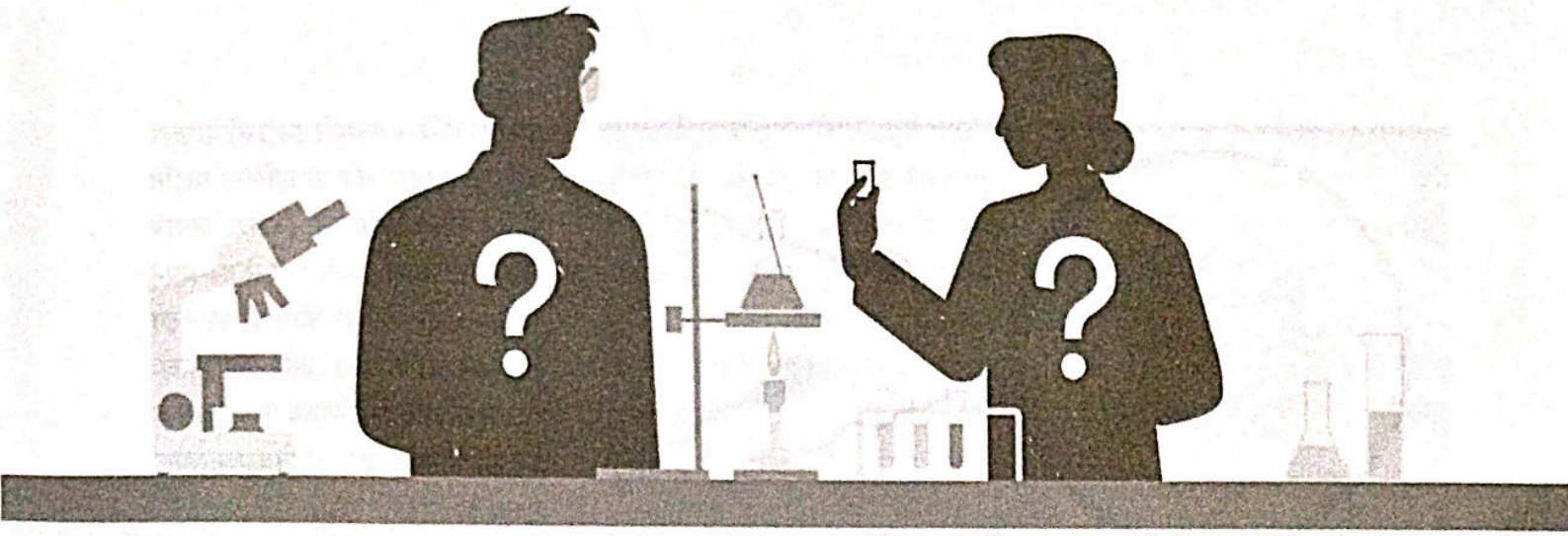

विज्ञानवाद, विज्ञान और मानव जीवन की अवधारणा

चिंतन



डॉ. मुहम्मद रिज़वान

विज्ञान के इतिहास में विज्ञानवाद (scientism) अपेक्षाकृत नया शब्द है। इसे विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया जाता है और इसकी परिभाषा में असाधारण विविधता पाई जाती है। इस शब्द की दो अलग-अलग व्याख्याएं हैं। वैज्ञानिक इसे सकारात्मक रूप से उपयोग करते हैं, आधुनिक नास्तिक लोग इसे सबसे अधिक सकारात्मक रूप से और बाइबल के आख्यानों को मानने वाले इसे नकारात्मक रूप में उपयोग करते हैं।

विज्ञानवाद वास्तव में प्राकृतिक विज्ञान (natural science) को, और केवल प्राकृतिक विज्ञान या भौतिक विज्ञान को ही ज्ञान का एकमात्र स्रोत मानने का नाम है। सरल शब्दों में विज्ञान को बहुत हद तक ग्लूकोसाइंटिज़्म कहा जा सकता है। अन्य परिभाषाओं का भी उल्लेख अनुचित न होगा ताकि पाठक यह जान सकें कि इसके विरोधियों, समर्थकों और अन्य समूह एवं संस्थान विज्ञानवाद को कैसे देखते हैं। विज्ञान के एक आधुनिक इतिहासकार रिचर्ड जी. विल्सन के अनुसार–

Efforts to extend scientific ideas, methods and practices and attitudes to matters of human social and political concern.

"वे सभी प्रयास जो मानव के सामाजिक और राजनीतिक मामलों में वैज्ञानिक दृष्टिकोणों, पद्धतियों और वैज्ञानिक व्यवहार के विस्तार के रूप में किए जाते हैं, विज्ञानवाद कहलाते हैं।"

टॉम सार्ल नामक दार्शनिक विज्ञानवाद की अपेक्षाकृत अधिक स्पष्ट परिभाषा प्रस्तुत करते हैं। उनके अनुसार, "विज्ञानवाद भौतिक विज्ञान को ज्ञान के विभिन्न स्रोतों पर अनावश्यक और बहुत अधिक प्राथमिकता देने का नाम है।"

एमआईटी के भौतिकी विशेषज्ञ विज्ञानवाद की ऐसी व्याख्या करते हैं जो विज्ञान को ज्ञान के सभी स्रोतों पर प्राथमिकता देती है, बल्कि वे इसे ज्ञान का एकमात्र स्रोत मानते हैं। इस परिभाषा के अनुसार, भौतिक विज्ञान तथा उसकी विधियों का प्रयोग करके ही वास्तविक ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। ज्ञान के अन्य स्रोत जैसे वह्य (प्रकाशना) और पैग़म्बरों द्वारा दिया गया ज्ञान (मुसलमानों के संदर्भ में), धार्मिक किताबें और हज़रत ईसा (अलैहि.) के कथन (ईसाई और यहूदी धर्म के संदर्भ में), रहस्योद्घाटन, ईश्वरीय ज्ञान या प्रेरणा, तप और साधना द्वारा अर्जित ज्ञान तथा जोगिया सांस्कृतिक ज्ञान, (हिंदू, बौद्ध और शिंतोवाद के संदर्भ में) सभी को अमान्य घोषित कर दिया गया है! वह परिभाषा इस प्रकार है–

"Science modelled on the natural science is the only source of real knowledge." (प्राकृतिक विज्ञान पर आधारित विज्ञान ही वास्तविक ज्ञान का एकमात्र स्रोत है)

अर्थात् प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष वैज्ञानिक तरीक़ों के अलावा ज्ञान का कोई अन्य स्रोत नहीं हो सकता। ज्ञान की कसौटी विज्ञान एवं वैज्ञानिक पद्धति 'ही' है। विज्ञानवाद की उपरोक्त परिभाषाएं स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं कि

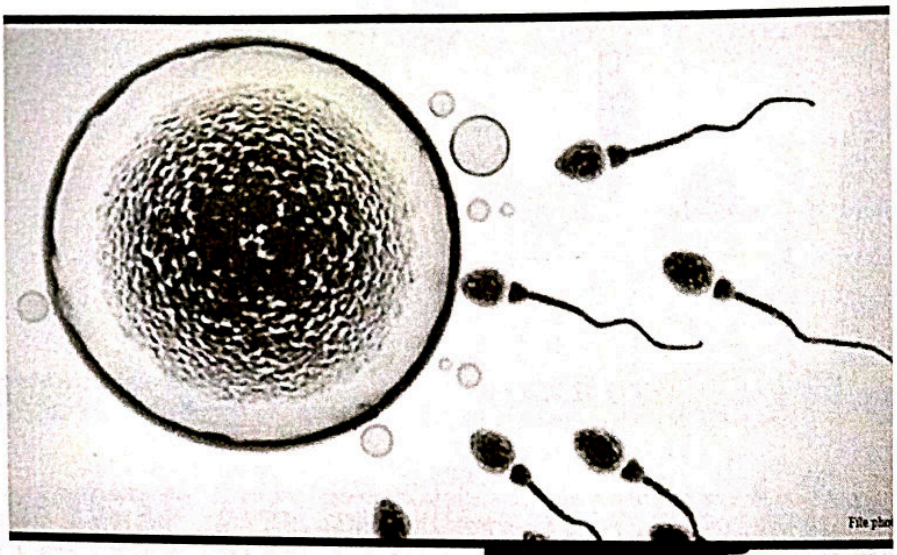

किस प्रकार अपने मूल में विज्ञानवाद इस बात की ज़बरदस्त शक्ति रखता है कि वह मानवीय ज्ञान की अवधारणा और मानवीय जीवन की अवधारणा को असाधारण रूप से प्रभावित कर सकता है और किस प्रकार इसने आधुनिक दुनिया और इसमें मौजूद विभिन्न सामाजिक इकाइयों के ज्ञान एवं जीवन की अवधारणा को आकार दिया है।

विशेषकर आधुनिक नास्तिकता का समस्त आधार इसी विज्ञानवाद पर है, ऐसा कहना शायद अतिशयोक्ति न होगी। विज्ञानवाद के इतिहास का संक्षिप्त अध्ययन इस संदर्भ में बहुत उपयोगी होगा कि किस प्रकार वह जीवन की अवधारणा को प्रभावित करता है। हमारे निकट विज्ञानवाद की पहली झलक (सकारात्मक विज्ञानवाद) दार्शनिक थेल्स (Thales) के यहां मिलती है। यूनानी सभ्यता में विभिन्न भौतिक परिघटनाओं जैसे भूकंपों के आने और बिजलियों के कड़कने को विभिन्न देवताओं से जोड़ कर देखा जाता था। उदाहरण के लिए, समुद्र देवता की नाराज़गी के कारण भूकंप या सुनामी जैसे हालात पैदा होते हैं। बिजली के देवता के हंसने के कारण बिजली कड़कती है, आदि। थेल्स ने सबसे पहले इन भौतिक

विज्ञानवाद की परिभाषाएं स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं कि किस प्रकार अपने मूल में विज्ञानवाद इस बात की ज़बरदस्त शक्ति रखता है कि वह मानवीय ज्ञान की अवधारणा और मानवीय जीवन की अवधारणा को असाधारण रूप से प्रभावित कर सकता है और किस प्रकार इसने आधुनिक दुनिया और इसमें मौजूद विभिन्न सामाजिक इकाइयों के ज्ञान एवं जीवन की अवधारणा को आकार दिया है।

परिघटनाओं को स्पष्ट करने का प्रयास किया। उसने कहा कि नदियों और समुद्रों में पानी के बहाव में बदलाव के कारण भूकंप और सुनामी जैसे हालात पैदा होते हैं। जब तेज़ हवा बादलों को काटती हैं तो बिजली कड़कती है। (हालांकि बाद में यह अवलोकन ग़लत साबित हुआ।) लेकिन थेल्स ने इन प्रश्नों के उत्तर भौतिक विज्ञान की अवलोकन पद्धति से देने की कोशिश की, जिसका जवाब उस समय के लोग कथाओं से या अपने पारंपरिक ज्ञान से प्राप्त करते थे। उसने इन परिघटनाओं को देखा और गहन सोच-विचार के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि इन परिघटनाओं की "भौतिक व्याख्या" संभव है।

यूरोप के पुनर्जागरण और फ्रांसीसी क्रांति के आसपास का इतिहास विज्ञानवाद के इस रूप को हमारे सामने लाता है, जिसने आधुनिक मनुष्यों, विशेषकर पश्चिमी लोगों के जीवन की अवधारणा के निर्माण और विकास में असाधारण भूमिका निभाई है। उदाहरण के लिए, फ्रांसिस बेकन (इंग्लैंड), रेनन डेसकार्टेस (फ्रांस) और गैलीलियो (इटली), इन तीन विचारकों और उनके शोध और अनुसंधानात्मक विचार ने जीवन की इस अवधारणा का निर्माण किया, जो उस समय ज्ञान और शक्ति में अपेक्षाकृत अधिक प्रबल दिखाई देता है। उदाहरण के लिए बेकन का प्रसिद्ध कथन है–

'Truth is the daughter of time not of authority.'

अर्थात् सत्य समय की पुत्री है, सत्ता की नहीं। पाठक देख सकते हैं कि फ्रांसिस बेकन कहना चाहते हैं कि सच्चाई को जानने के लिए समय लगता है। (यहां समय का तात्पर्य अवलोकन, प्रयोग, निष्कर्ष और अनुमान में लगने वाले समय से है) अतः किसी भी शाश्वत प्रश्न का उत्तर अंततः समय के साथ मिल जाएगा। यदि भौतिक विज्ञान की पद्धति का अनुसरण किया जाता रहे। फ्रांसिस बेकन दरअस्ल यह कहना चाह रहे हैं कि मनुष्य, आत्मा, नैतिकता, धर्म, मूल्य, इन सबके लिए किसी एक पूर्ण ईश्वर से

वह्य (प्रकाशना) की आवश्यकता नहीं है, बल्कि विज्ञान इसके लिए पर्याप्त है।

विज्ञानवाद और जीवन की अवधारणा पर इसके प्रभाव को देखने के लिए इसे दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है और इन दोनों श्रेणियों को इसके संक्षिप्त इतिहास में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। एक श्रेणी प्रतिबंधात्मक विज्ञानवाद (restrictive scientism) की है और दूसरी ग़ैर-प्रतिबंधात्मक विज्ञानवाद की। पहली श्रेणी विज्ञान का वर्चस्व या केवल उसे ही ज्ञान का एकमात्र स्रोत मानना की है, चाहे वह किसी विशेष क्षेत्र या विषय पर ही क्यों न हो। इसका उदाहरण और शायद सबसे स्पष्ट उदाहरण, कार्ल सागन (carl sagan) के यहां देखने को मिलता है। वह मनुष्य और उसकी रासायनिक संरचना को कैसे देखते हैं। देखें–

"I am a collection of water, calcium and organic molecules called Carl Sagan. You are a collection of almost identical molecules with different collective label. But is that all Is there nothing in here but molecules."

"मैं पानी, कैल्शियम और कार्बनिक अणुओं का एक संग्रह हूं, जिसे कार्ल सागन कहा जाता है। आप भी अलग-अलग सामूहिक लेबल वाले लगभग समान अणुओं का एक संग्रह हैं। लेकिन क्या यहां अणुओं के अलावा कुछ भी नहीं है?"

अर्थात् मनुष्य के सृजन या सृजनात्मक सामग्री के अनुसार विज्ञान ही अंतिम शब्द है। यह प्रतिबंधात्मक विज्ञानवाद (restrictive scientism) है। दूसरा उदाहरण प्रसिद्ध नास्तिक सैम हैरिस के यहां देखी जा सकती है, जिनके अनुसार, स्वतंत्र इच्छा (free will) जैसी कोई चीज़ नहीं होती है। वे कहते हैं कि चयन की स्वतंत्रता एक भ्रम है। हम अपने इरादों के निर्माता नहीं हैं बल्कि अंतर्निहित (Inherent) कारण हमारे विचारों और इरादों को तय करते हैं। इन कारणों पर हमारा कोई सचेत नियंत्रण नहीं होता, न ही हम उनके बारे में जानते हैं। हमारे पास स्वतंत्र इच्छा की वह आज़ादी नहीं है जिसके बारे में हम समझते हैं कि वह है।

अतः मूल्य और स्वतंत्र इच्छा के क्षेत्र में यह भी एक प्रतिबंधात्मक विज्ञानवाद का उदाहरण है। ग़ैर-प्रतिबंधात्मक (nonrestrictive) विज्ञानवाद उसे कहते हैं जब विज्ञान को संपूर्ण ज्ञान का एक ऐसा साधन माना जाए, जिसके माध्यम से सभी प्रकार की सच्चाई और अंततः ज्ञान या अंतिम सत्य की खोज की जा सकती है।

निम्नलिखित उदाहरण देखें–

आधुनिक विज्ञान का अर्थ यह है कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड यांत्रिक सिद्धांतों (mechanical theories) के आधार पर व्यवस्थित है। ब्रह्माण्ड में किसी भी प्रकार के उद्देश्यपूर्ण सिद्धांत नहीं हैं। कोई ईश्वर या उसकी कोई रचना मौजूद नहीं है, जिसे वास्तविक आधारों पर खोजा जा सकता हो।

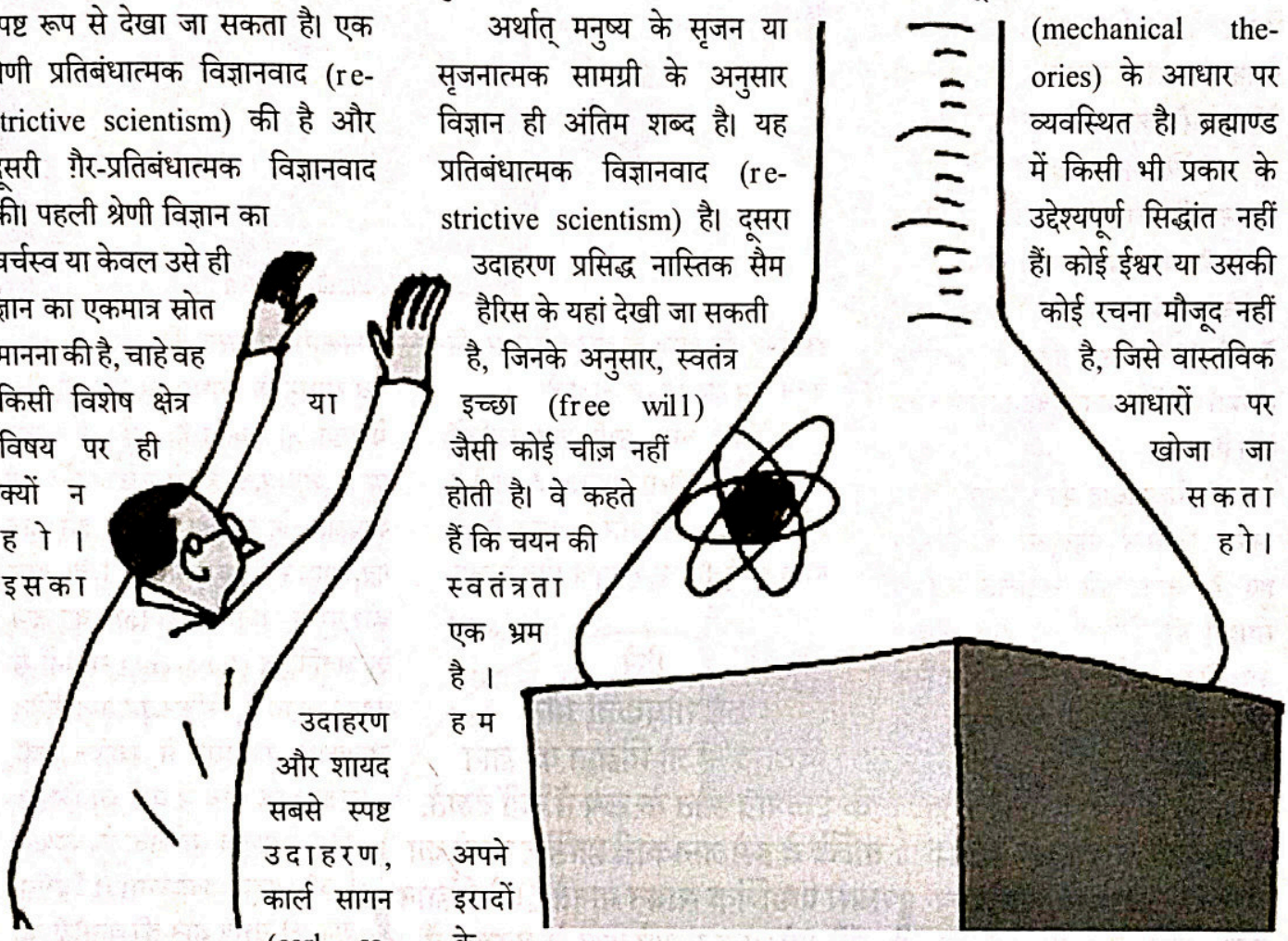

आधुनिक विज्ञान स्पष्ट रूप से कहता है कि कोई अंतर्निहित (Inherent) नैतिक या क़ानूनी नियम नहीं हैं। मानव समाज के लिए कोई ईश्वरीय मार्गदर्शन नहीं है। मनुष्य एक सबसे जटिल मशीन है। जब वे मरते हैं, तो केवल मर जाते हैं और यही अंतिम समाप्ति है। William Provine

इस प्रकार का एक अन्य उदाहरण एलेक्स रोसेनबर्ग की है, इन्होंने अपनी पुस्तक एथिस्ट गाइड टू रियलिटी (Atheist Guide to Reality) में

लिखा है कि हम विज्ञान को सच्चाई जानने का एकमात्र साधन मानते हैं।

अतः ऊपर दिए गए ऐतिहासिक मामले का विश्लेषण हमें निम्नलिखित निष्कर्ष पर ले जाता है–

1. विज्ञान और विज्ञानवाद दो अलग चीज़ें हैं, लेकिन आधुनिक समय में ये इतने घुल-मिल गए हैं कि इन्हें जन चेतना के स्तर से अलग करना एक बड़ी वैश्विक और व्यावहारिक चुनौती है।

2. विज्ञानवाद वास्तव में मानव जीवन की अवधारणा को प्रभावित करता है, वह शाश्वत प्रश्नों जिनके उत्तर प्रत्येक मनुष्य जान-बूझकर या अनजाने में खोजता है। उन प्रश्नों के उत्तर के साधनों को विज्ञानवाद बहुत सीमित कर देता है।

3. विज्ञानवाद की परिभाषा अपने अन्दर विभिन्न पहलुओं को समोये हुए है। अगर इसे संतुलित ढंग से समझने की कोशिश की जाए, लेकिन आधुनिक नास्तिक लोग, वैज्ञानिक और शोधकर्ताओं के बड़े समूह अब ग़ैर-प्रतिबंधात्मक (nonrestrictive) विज्ञानवाद के क़ायल हो गए हैं। उदाहरण के लिए, "स्टीफ़न हॉकिंग का यह कहना कि ब्रह्माण्ड स्वयं अपने बल पर अस्तित्व में रह सकता है।" या अधिकांश जीवविज्ञानियों का यह मानना कि, "मनुष्य केवल वृहत विकास (macro-evolution) के माध्यम से ही अस्तित्व में रह सकता है।" या स्टीफ़न वेनबर्ग का यह कहना कि जैसे-जैसे ब्रह्माण्ड समझ में आता जाता है उतना ही वह उद्देश्यहीन होता जाता है। बल्कि, इससे भी आगे बढ़कर ई.ओ. विल्सन की यह घोषणा कि एक प्रजाति के रूप में हम अपने आप पर गर्व कर सकते हैं कि हम अकेले हैं (अपनी प्रजाति के संदर्भ में)।

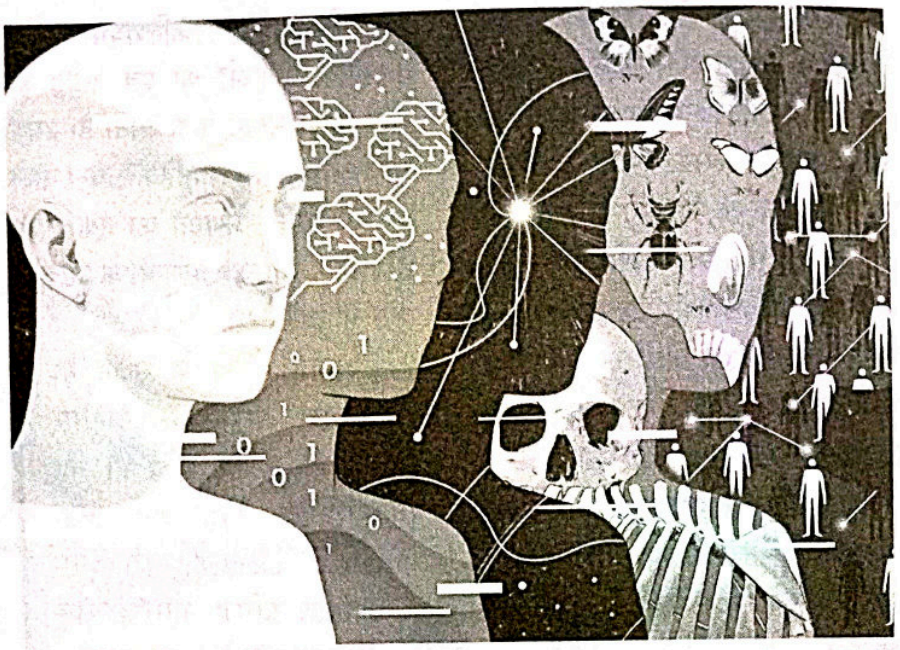

इस बिंदु की खोज के बाद हमें ईश्वर की बहुत कम ज़रूरत रह जाती है।

लेकिन क्या सभी शोधकर्ताओं का रवैया एक जैसा है? उत्तर है "नहीं।" ऐसे कई शोधकर्ता और विचारक हैं जो विज्ञान को ज्ञान के एकमात्र स्रोत के रूप में नहीं देखते, बल्कि (जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है) वे इसे जानकारी हासिल करने का सबसे प्रमाणिक साधन मानते हैं। दरअस्ल ध्यानपूर्वक अध्ययन करने पर मालूम होता है कि यद्यपि ऐसे शोधकर्ता एवं विचारक कम हैं, लेकिन उनको भी जानकारी या सत्य की प्राप्ति की विधि एवं साधन के आधार पर एक ही पंक्ति में रखा जा सकता है। इसके एक छोर पर वे शोधकर्ता हैं जो विज्ञान की पूर्ण सापेक्षता के क़ायल हैं और इसे मात्र एक साधन के रूप में देखते हैं। दूसरे छोर पर वे लोग हैं जो विज्ञान को ज्ञान के अंतर्निहित (Inherent) साधनों से बेहतर जानते हैं, लेकिन इन अंतर्निहित जानकारी को सिरे से ख़ारिज नहीं करते। इनके बीच में वे हैं जो विज्ञान की अपेक्षाकृत सापेक्षता के क़ायल हैं और वह्य (प्रकाशना) व ईश्वरीय ज्ञान को सच्चे ज्ञान की कसौटी के रूप में देखते हैं।

ऐसे कई शोधकर्ता और विचारक हैं जो विज्ञान को ज्ञान के एकमात्र स्रोत के रूप में नहीं देखते, बल्कि वे इसे जानकारी हासिल करने का सबसे प्रमाणिक साधन मानते हैं। वे विज्ञान की अपेक्षाकृत सापेक्षता के क़ायल हैं और वह्य (प्रकाशना) व ईश्वरीय ज्ञान को भी सच्चे ज्ञान की कसौटी के रूप में देखते हैं।

अतः यह जांचना आवश्यक हो जाता है कि सामाजिक जीवन की अवधारणा को विज्ञानवाद एवं विज्ञान दोनों ने कैसे प्रभावित किया? विज्ञान की दृष्टि से अगर देखें और विज्ञान को उसकी मूल परिभाषा पर फिट करके जांचें तो यह समझ में आ जाता है कि विज्ञानवाद और विज्ञान दो बिल्कुल अलग-अलग स्तरों पर सामाजिक जीवन की अवधारणा को प्रभावित करते हैं। ■■

सौंदर्य बोध



नईम सिद्दीक़ी

बचाओ अपने आपको
(क़ू अनफ़ुसकुम)



मनुष्य के चरित्र का निर्माण दुनिया का सबसे नाज़ुक और बड़ा ही मुश्किल काम है, लेकिन इसी के साथ ज़रूरी और बड़ा अहम भी है। मानवता जब तक नैतिकता के ऊंचे आदर्शों व उसूलों पर क़ायम न हो जाए सभ्यता को अच्छी राहों पर विकसित करना संभव नहीं है। आज हम फ़साद व बिगाड़ के जिस सर्वव्यापी दौर से दो-चार हैं और जिसके सुख व चैन तबाह करने वाले फ़ितने हमारे घरों के सीमित माहौल से लेकर संयुक्त राष्ट्र की अन्तर्राष्ट्रीय संस्था तक हर जगह चिंगारियां छोड़ रहे हैं, उनसे छुटकारे की कोई राह इसके अलावा नहीं है कि मनुष्य का चरित्र, सोच-समझ, धारणाओं व आस्थाओं से लेकर उसकी सियासी, सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों तक में मौलिक एवं क्रांतिकारी परिवर्तन पैदा हो और आदम की औलाद भौतिकतावादी चरित्र से मुक्ति पाकर ईश्वरवादी चरित्र को अपनाए और एहसास रखने वाले लोग एक-एक करके इस अंधेरे में सितारों की तरह उभरें।

एक राष्ट्र की हैसियत से, हम ख़ुद एक नैतिक क्रान्ति के बड़े ज़रूरतमन्द हैं। हमारे समाज में अनगिनत नैतिक रोग बहुत बड़े पैमाने पर फैले हुए हैं। हमारे यहां व्यक्तिगत और ख़ानदानी, सामाजिक व सामूहिक, दफ़्तरी और कारोबारी तथा राजनीतिक और राष्ट्रीय जीवन के सभी मैदानों में नैतिक बिगाड़ का ज़हर फैला हुआ है। इस ज़हर के असर ढके-छुपे नहीं, बल्कि अच्छी तरह प्रकट व स्पष्ट हैं। व्यक्ति अच्छे उसूलों, अच्छी रिवायतों और उच्च नैतिक मूल्यों से ख़ाली होते जा रहे हैं। यह नैतिक गिरावट हर तरह की तरक़्क़ी में रुकावट बन रही है। और इसी वजह से हमारी सभी ताक़तें और क्षमताएं नष्ट होती जा रही हैं। जीवन का एक नया दौर शुरू करने के लिए हमारा पहला क़दम यही हो सकता है कि हमारे अन्दर एक नैतिक क्रान्ति आए।

इन्सानों में नैतिक क्रान्ति केवल बाहरी उपायों व कोशिशों से पैदा नहीं की जा सकती। केवल क़ानून और नियम, बोर्ड और कमीशन, दफ़्तर और संस्थाएं, डराने-धमकाने की कोशिशें, अदालतें और जेल, जुर्माने और सज़ाएं आदमी को अच्छा नहीं बना सकते। नैतिक क्रान्ति हमेशा आदमी के अन्दर शुरू होती है। जब तक कोई नई विचारधारा उसके दिल-दिमाग़ में घर न कर ले, कोई मक़सद उसको अन्दर से प्रेरणा न दे, जब तक ख़ुद उसे यह एहसास न हो जाए कि मौजूदा हालत एक ग़लत हालत है, और जब तक वह उस ग़लत हालत से निकल कर अच्छी हालत तक पहुंचने के लिए स्वेच्छा से काम न लेने लगे, उस वक़्त

इन्सानों में नैतिक क्रान्ति केवल बाहरी उपायों व कोशिशों से पैदा नहीं की जा सकती। केवल क़ानून और नियम, बोर्ड और कमीशन, दफ़्तर और संस्थाएं, डराने-धमकाने की कोशिशें, अदालतें और जेल, जुर्माने और सज़ाएं आदमी को अच्छा नहीं बना सकते। नैतिक क्रान्ति हमेशा आदमी के अन्दर शुरू होती है। जब तक कोई नई विचारधारा उसके दिल-दिमाग़ में घर न कर ले, कोई मक़सद उसको अन्दर से प्रेरणा न दे, जब तक ख़ुद उसे यह एहसास न हो जाए कि मौजूदा हालत एक ग़लत हालत है, उस वक़्त तक कोई बड़ा नैतिक परिवर्तन नहीं आ सकता।



तक कोई बड़ा नैतिक परिवर्तन नहीं आ सकता। मानव अन्तःकरण में जब तक अपना ही दीप रोशन नहीं हो जाता, बाहर के सूरज और चांद उसको अंधेरों से छुटकारा नहीं दिला सकते।

इस्लाम अपनी व्यापक सामाजिक क्रांति की शुरुआत इसी प्रकार की नैतिक क्रांति से करता है। वह इन्सान के चरित्र में बुनियादी तब्दीली पैदा करने का आमंत्रण देता है। इसी मक़सद से वह एक-एक व्यक्ति के अन्दर की क़ुव्वतों और क्षमताओं को जगाता है। वह व्यक्ति को ईमान जैसी ताक़त से माला-माल करता है। वह ईश-प्रेम और ईश-भय जैसा निगहबान उसके अन्दर बिठाता है। वह अन्तरात्मा जैसा गाइड और सलाहकार उसके साथ लगाता है और ईश्वर के भेजे गए ज्ञान की मशाल उसके हाथ में थमाता है, जो सही और ग़लत का अन्तर उस पर स्पष्ट करती है। वह उसके अन्दर एक ऐसा साहस जगाता है जो उसे नेकी और भलाई के मार्ग पर निरन्तर पग-पग आगे बढ़ाता रहता है। आज हमें और हमारी पूरी दुनिया को इस्लाम की अपेक्षित क्रान्ति की ज़रूरत है।

व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व को बनाने-संवारने के लिए सही व भले सामाजिक माहौल की बहुत ज़रूरत है और सामूहिक माहौल में अकेले किसी आदमी की अपने व्यक्तित्व के सुधार तथा निर्माण की कोशिश करना, एक ऐसी कठिन परीक्षा है, जिसका विचार ही दिल को दहला देता है, लेकिन इसके बावजूद यह हक़ीक़त अपनी जगह बिल्कुल सही है कि ईश्वर की ओर से उसके प्रति हर व्यक्ति अपना ज़िम्मेदार आप है। हर व्यक्ति को अपने बारे में ख़ुद

कान्ति साप्ताहिक और कान्ति मासिक के सभी पाठक

कृपया ध्यान दें!

अपना पूरा नाम : .....

पता : .....

पोस्ट ऑफिस : .....

डिस्ट्रिक्ट : .....स्टेट : .....पिन : .....

कांटेक्ट नंबर : .....

नीचे दिए गए व्हाट्सऐप नम्बर पर भेजने की मेहरबानी करें।

धन्यवाद!

व्हाट्सऐप नंबर : 98187 99223

नोट : अपना कांटेक्ट नंबर लिखना न भूलें।

जवाब देना है।

हर व्यक्ति से उसकी ताक़त और क्षमताओं के बारे में, उसके चरित्र व आचरण के बारे में अलग-अलग सवाल-जवाब होना है कि उसने उसकी हिफ़ाज़त में किस दरजे की चौकसी दिखाई? उसके इस्तेमाल में कहां तक एहतियात और समझ-बूझ से काम लिया और उसकी बढ़ोत्तरी के लिए कौन-कौन से संभव उपाय किये? वहां तो हर व्यक्ति को ईश्वर की अदालत में उस समय तक अपने पैरों पर खड़ा रहना होगा, जब तक वह यह हिसाब न दे ले



कि उसने अपनी उम्र किन मक़सदों के लिए और किस-किस काम के लिए खपाई? उसने अपनी जवानी की ताक़त का ख़ज़ाना किस मुहिम में ख़र्च किया? उसने किस तरह कमाया और अपनी कमाई को किन रास्तों में ख़र्च किया?

सच्चाई की जितनी कुछ जानकारी तथा अपनी ज़िम्मेदारियों और दायित्वों तथा हलाल (वैध) व हराम (अवैध या वर्जित) का जितना कुछ इल्म उसे हासिल हो सका, उसके अनुसार अमल करने में कहां तक सरगरमी दिखाई? अपनी ज़िम्मेदारियों के इस बोझ में वह किसी दूसरे को अपना साथी न बना सकेगा। दोस्त व रिश्तेदार उसके साथ खड़े होकर उस घड़ी उसकी मुसीबत में कोई मदद न करेंगे।

"कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा।"

(क़ुरआन, 39:7)

इस बात की पूरी संभावना है कि नकारात्मक माहौल के कारण एक व्यक्ति को ईश्वर की अदालत में हिसाब-किताब के वक़्त कुछ छूट मिले और ज़बरदस्ती की जिन रुकावटों तथा अपने बस से बाहर की जिन मुश्किलों से घिर कर वह बेबस हो जाता रहा हो, उनका उसे बोनस दिया जाए, लेकिन विपरीत माहौल से जूझने की अपनी ज़िम्मेदारी से वह किसी भी हाल में बरी नहीं हो सकता। आख़िर एक पवित्र सामूहिक व्यवस्था, एक साफ़-सुथरा समाज और एक साज़गार माहौल मुहैया करना भी तो ख़ुद व्यक्ति की ही अपनी ज़िम्मेदारी है, और इस मक़सद को पाने के लिए कोशिश की शुरुआत एक व्यक्ति की ही अगुवाई से होती है।

अब अगर व्यक्ति पर बुनियादी और आरम्भिक ज़िम्मेदारी न रखी गई हो तो एक प्रतिकूल माहौल लोगों के लिए एक हमेशा का बहाना व कारण बन जाएगा। यह चक्कर फिर कहीं से टूट ही नहीं सकता।

ईश्वर के पैग़म्बरों की ओर से दी जाने वाली सुधार की शिक्षा में सबसे पहले और बुनियादी तौर से व्यक्ति को ही सम्बोधित किया जाता है। उसका पहला पैग़ाम 'क़ू अनफ़ुसकुम' (बचाओ अपने आपको) का पैग़ाम है। ईश्वर की सारी व्यवस्था का मक़सद यह है कि हम अपने लिए, अपने ही अन्दर एक मुरब्बी (सुधारने वाला) और मुज़क्की (संवारने व साफ़-सुथरा करने वाला) उपलब्ध करें।

यही वजह है कि ईश्वर के पैग़म्बरों की ओर से दी जाने वाली सुधार की शिक्षा में सबसे पहले और बुनियादी तौर से व्यक्ति को ही सम्बोधित किया जाता है। उसका पहला पैग़ाम 'क़ू अनफ़ुसकुम' (बचाओ अपने आपको) का पैग़ाम है। ईश्वर की सारी व्यवस्था का मक़सद यह है कि हम अपने लिए, अपने ही अन्दर एक मुरब्बी (सुधारने वाला) और मुज़क्की (संवारने व साफ़-सुथरा करने वाला) उपलब्ध करें। हम बाहर से मिलने वाली मदद पर भी निर्भर हैं और ज्ञान प्राप्त करने तथा अपने कर्मों को सुधारने के काम में बाहरी मदद हमारे लिए बड़ी आवश्यक भी है, और बहुत लाभप्रद भी। मगर अपने व्यक्तित्व के अस्ल निर्माता हम ख़ुद हैं, और हमें अपने सुधार के लिए सबसे बढ़कर ख़ुद अपनी मदद की ज़रूरत है। ■■

"लोगों, हमने तुमको एक मर्द
और एक औरत से पैदा किया और फिर
तुम्हारी क़ौमें और बिरादरियां बना दीं ताकि
तुम एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में ईश्वर की
दृष्टि में तुममें सबसे ज़्यादा प्रतिष्ठित वह है जो
तुममें सबसे ज़्यादा परहेज़गार (संयमी) है।
निश्चय ही ईश्वर सब कुछ जानने वाला
और ख़बर रखने वाला है।"
(क़ुरआन, 49:13)

with best compliment from / **Hifzan Ahmad Hashmi**
Bhopal (MP)

नफ़रत एवं क्रोनी पूंजीवाद के ख़िलाफ़ जन प्रतिरोध की सुगबुगाहट

मुख्य स्तम्भ



सुफ़ियान अहमद

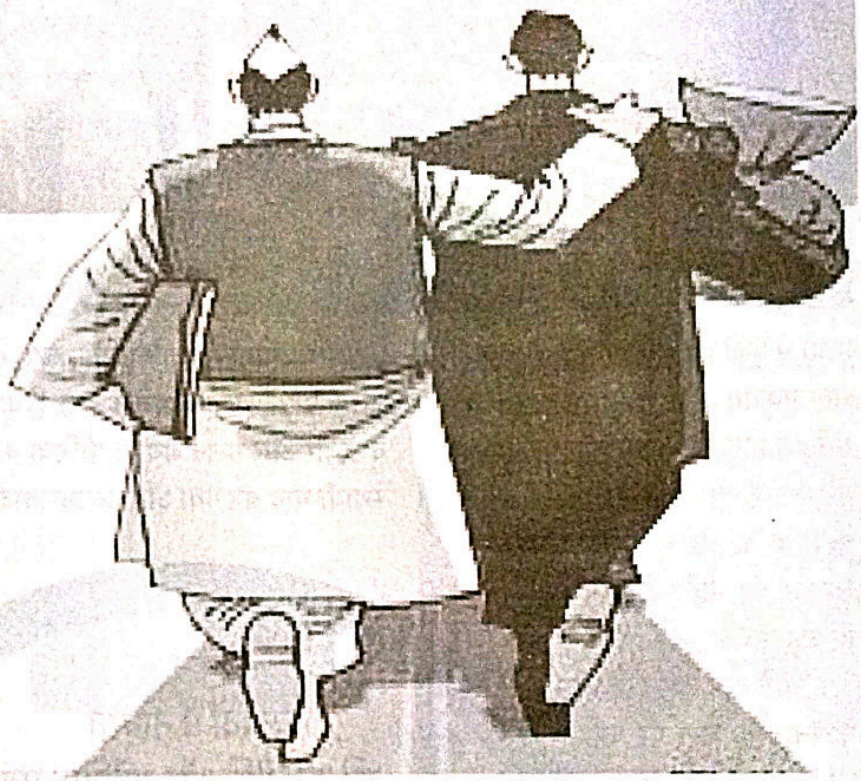

इस बार के लोकसभा चुनाव नतीजों से उत्साहित विपक्ष का कहना है कि "जनता के जनादेश ने भाजपा और उसकी नफ़रत और भ्रष्टाचार की राजनीति को करारा जवाब दिया है। यह जनादेश भारत के संविधान की रक्षा और महंगाई, बेरोज़गारी व क्रोनी पूंजीवाद के खिलाफ़ तथा लोकतंत्र को बचाने के लिए है।" नफ़रत की राजनीति से तो पूरा देश परिचित है, किन्तु जो लोग क्रोनी पूंजीवाद (Crony capitalism) से अनजान हैं उनके लिए इसके ख़तरों को समझना ज़रूरी है।

किसी भी देश का विकास तभी होता है, जब वहां पर स्वस्थ प्रतियोगिता का माहौल क़ायम रहे, लेकिन इसकी जगह पर यदि कुछ चुनिंदा उद्योगपतियों का पक्ष लिया जाए और उनके लिए नियमों में बदलाव होता रहे, तो विकास का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है। इसे ही क्रोनी पूंजीवाद कहते हैं। राष्ट्रहित के बजाए सरकार उन्हें टैक्ट छूट, परमिट आवंटन और टेंडर में पक्षपात जैसे क़दमों के ज़रिये उनका समर्थन करती है। इसमें किसी व्यवसाय की सफलता बाज़ार की शक्तियों के द्वारा नहीं बल्कि राजनीतिक वर्ग और व्यापारी वर्ग के बीच सांठगांठ पर निर्भर करती है।

दशकों से सरकार ऐसे ही कुछ व्यवसायियों का पक्ष लेती लेती आ रही है जिनका उद्देश्य राष्ट्रहित नहीं, बल्कि पैसा कमाना है। उनके आगे बढ़ने का आधार व्यवसाय उत्पादकता और उद्यम की दक्षता नहीं बल्कि सरकार का पक्षपाती रवैया है। यदि संक्षेप में कहा जाए तो क्रोनी पूंजीवाद समाज में उच्च असमानताओं को जन्म देता है, जहां न तो आर्थिक विकास होता है और न ही लोगों का व्यापक विकास। क्रोनी पूंजीवाद के मूल में राजनीतिक पार्टियों की फंडिंग है। राजनीतिक पार्टियां चंदे मांगती हैं और व्यवसायी निजी लाभ के चक्कर में उन्हें मालामाल करते रहते हैं। भारत में राजनीतिक पार्टियों पर इनकम टैक्स भी नहीं लगता है।

लोकसभा चुनावों से ठीक पहले चुनाव आयोग को प्राप्त आंकड़ों की जांच से पता चलता है कि सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी को अरबों रुपयों का चंदा प्राप्त हुआ। इनमें से मात्र 10 कंपनियों ने 2119 करोड़ रुपये का चंदा दिया है। यह राशि भारतीय जनता पार्टी को प्राप्त 6060 करोड़ रुपये के चुनावी बॉन्ड का 35 प्रतिशत है। दूसरे दलों की तुलना में यह सर्वाधिक है।

किसी भी देश में लोकतंत्र और चंद

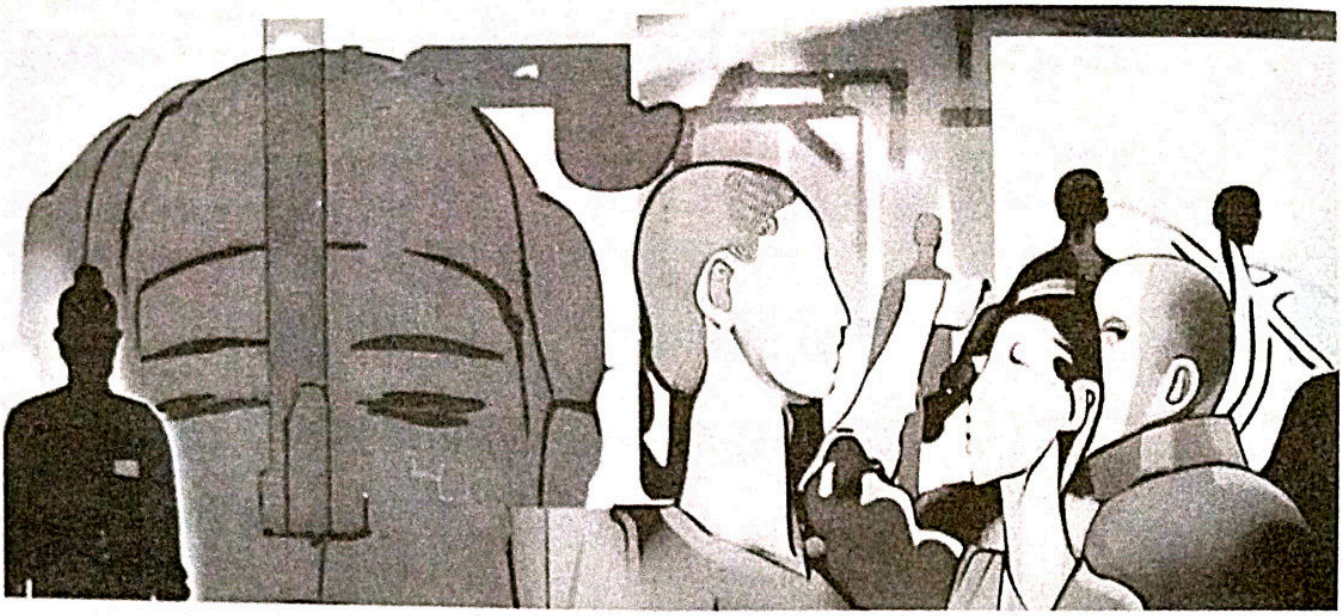

हाथों में पूंजी का संकेंद्रण एक साथ नहीं चल सकता। अगर चंद हाथों में पूंजी का संकेंद्रण होगा तो लोकतंत्र महज़ मखौल बन कर रह जाएगा और अंततः वह पूंजी के हाथों का खिलौना बन जाएगा और सरकार की नीतियों पर पूंजीवाद हावी हो जाएगा।

बीते एक दशक में क्रोनी पूंजीवाद के बल पर कुछ चुनिंदा व्यवसाई घरानों के उत्थान ने भारतीय राजनीति के नैतिक पतन का एक नया अध्याय लिखना शुरू किया। देखते ही देखते उनकी संपत्ति में इतनी तेज़ी से बढ़ोतरी कैसे हुई यह आम लोगों ही नहीं, अर्थशास्त्रियों के लिए भी जिज्ञासा का विषय बना रहा। देश की आर्थिक नीतियों के निर्माण पर इन घरानों की पकड़ जगजाहिर रही है।

बीते वर्षों में भारत में चंद हाथों में पूंजी का संकेंद्रण बेहद ख़तरनाक तरीक़े से बढ़ा और मीडिया पर बढ़ते कारपोरेट प्रभावों और राजनीति के नैतिक पतन ने आम लोगों को वैचारिक रूप से दरिद्र बनाने का अभियान छेड़ दिया। दुष्प्रचार और ग़लत बयानी मीडिया का स्थायी भाव बन गया और नवउदारवादी नीतियों की अवैध संतानों के रूप में जन्मे नव धनाढ्य वर्ग ने समाज में नेतृत्व हासिल कर लिया।

समाज में बढ़ती विचारहीनता ने अनैतिक जमातों के नेतृत्व हासिल करने में प्रभावी भूमिका निभाई और भारतीय राजनीति ने पूंजी के क़दमों तले बिछने में शर्माना छोड़ दिया। चुने हुए जनप्रतिनिधियों की ख़रीद फ़रोख़्त अब खुलेआम होने लगी और पूंजी राजनीति के सिर चढ़ कर अपने खेल खेलने लगी। नतीजा, मतदाताओं का निर्णय अपनी जगह, राजनीति और कारपोरेट के अनैतिक गठजोड़ के खेल अपनी जगह, लेकिन इन चुनावों में नफ़रत की राजनीति और अनैतिक एवं अलोकतांत्रिक गतिविधियों के विरुद्ध जन प्रतिरोध कुछ सुगबुगाहट नज़र आई।

पिछले एक दशक का सामाजिक क्षेत्र धर्म या सांप्रदायिकता के इर्द-गिर्द घूमता रहा। सामाजिक न्याय, बेरोज़गारी और विकास के मुद्दे उठाने की जगह सामाजिक स्तर पर ख़त्म सी हो गई थी। इन चुनावों ने दिखाया है कि सामाजिक स्तर पर दोबारा से ज़मीनी राजनीति नई

इन चुनावों में नफ़रत की राजनीति और अनैतिक एवं अलोकतांत्रिक गतिविधियों के विरुद्ध जन प्रतिरोध कि कुछ सुगबुगाहट नज़र आई। पिछले एक दशक का सामाजिक क्षेत्र धर्म या सांप्रदायिकता के इर्द-गिर्द घूमता रहा। सामाजिक न्याय, बेरोज़गारी और विकास के मुद्दे उठाने की जगह सामाजिक स्तर पर ख़त्म सी हो गई थी। इन चुनावों ने दिखाया है कि सामाजिक स्तर पर दोबारा से ज़मीनी राजनीति नई करवट ले रही है।

करवट ले रही है। इन चुनावों से कई बड़े अर्थ निकलते हैं, जिनसे भारत के भावी लोकतंत्र की तस्वीर तय होगी।

ताज़ा परिणाम इस बात का संकेत हैं कि जनता के लिए उसकी ज़रूरत से जुड़े मुद्दे ज़्यादा मायने रखते हैं। क्या यह सच नहीं है कि नीचे के वर्ग, ख़ासकर किसान, श्रमिक और दिहाड़ी मज़दूर की आय हाल के वर्षों में लगातार घटी है और महंगाई इस वर्ग को बुरी तरह आहत कर रही है? क्या सीएमआईई की विगत अप्रैल की रिपोर्ट चीख-चीख कर नहीं बता रही थी कि पिछले दस वर्षों में ओबीसी और अनुसूचित जाति वर्गों में बेरोज़गारी सबसे ज़्यादा बढ़ी है।

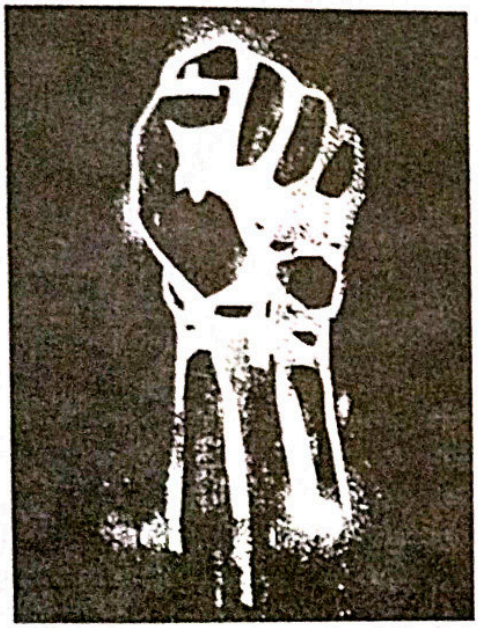

बीते दशक में सरकार की ग़लत नीतियों ने लोगों की ग़रीबी को और बढ़ाया, साथ ही देश ने धर्म के नाम पर फैलाई गई नफ़रत से काफ़ी बदनामी और तबाही झेली, लेकिन इस जनादेश ने यह बता दिया कि नफ़रत एवं क्रोनी पंजीवाद की दुकान इस देश में ज़्यादा दिन नहीं चल सकती।

यह सही है कि भाजपा अभी भी देश का सबसे बड़ा दल है और केंद्र और सबसे ज़्यादा राज्यों में सरकार चला रहा है, किन्तु इस सच से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि पिछली दो सरकारों के समय जिस तरह प्रधानमंत्री और उनके मंत्री फ़ैसले करते, नीतियों का निर्धारण करते रहे हैं, अनेक मौक़ों पर विधेयकों को बिना उचित बहस के पारित करा लिया गया, अब वैसा संभव नहीं होगा। इसलिए कि सदन में एक मज़बूत विपक्ष भी मौजूद रहेगा और उसकी बातों की अनदेखी करना संभव नहीं होगा। उम्मीद है कि इससे लोगों तक अच्छी नीतियां और योजनाएं पहुंच सकेंगी। अभी तक सरकार के फ़ैसले एकतरफा और बिना उचित विचार-विमर्श के किए गए थे। उनमें से कुछ फ़ैसलों पर घटक दलों ने सरकार बनने से पहले ही पुनर्विचार की ज़रूरत भी रेखांकित कर दी है।

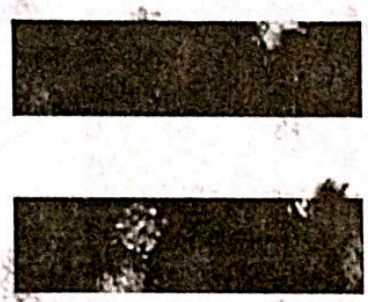

किसी भी देश और समाज के नेतृत्व की ज़िम्मेदारी होती है कि वो अपने यहां धार्मिक और सामाजिक कटुता दूर करे, अंधविश्वास ख़त्म करे और इतिहास की कटुता से अपने समाज और देश को दूर करने का ज़रिया बने। नई पीढ़ी को नया प्रगतिशील समाज और देश बनाने को प्रेरित करे न कि पुरानी कटुता अगली पीढ़ी को सौंपे। फिर भी कुछ राजनेता देश को नफ़रत में उलझा कर असल मुद्दों से मुंह छुपाना चाहते हैं। देश और समाज को इन लोगों को आईना दिखाना ही होगा तभी ऐसे लोगों से मुक्ति मिलेगी।

यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि सही समझ, सोच और मार्गदर्शन के अभाव में पिछले कुछ वर्षों में धर्म की प्रतिक्रियावादी व्याख्या और उसके अनुरूप व्यवहार करने वालों का समूह विकसित हुआ है। दुनिया का इतिहास गवाह है कि प्रतिक्रियावादी विचारधारा वाले संगठन या समूहों की आयु बहुत लंबी नहीं होती। अतिवादी सोच को तात्कालिक जन समर्थन मिलना स्वाभाविक होता है। किंतु सतत रूप से प्रतिक्रियावादी बने रहना किसी को भी उस विचारधारा की सच्ची और गहरी

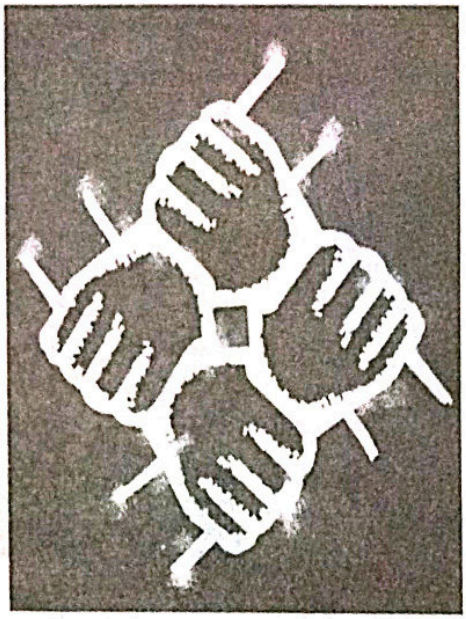

समझ से दूर रखता है। इस कारण उसके विचार और व्यवहार संतुलित, सहज और स्वीकार्य नहीं हो पाते। धर्म की सर्व कल्याणकारी और व्यापक अवधारणा में दूसरे मज़हब से नफ़रत और हिंसा के लिए कोई स्थान ही नहीं है। अतः अब देश की राजकीय व्यवस्था में सृजन की वैकल्पिक रणनीति विकसित करने का समय आ गया है। देश के भविष्य को सुरक्षित और अक्षुण्ण रखना, उसे सदैव मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत रखना ही राजकीय व्यवस्था का धर्म है। ■■

कान्ति के वे सब्सक्राइबर

जिन्होंने अभी तक अपनी ख़रीदारी की रक़म जमा नहीं की है,

बराय मेहरबानी

इस QR Code

के ज़रिये जल्द अदायगी करें।

Name: KANTI

Pay Directly to: kanti8920589292@indianbk

नोट :

अदायगी के बाद

स्क्रीनशॉट

इस नम्बर पर

(9818799223)

ज़रूर भेजें।

असहमति का दमन लोगों को नामंज़ूर



अभिमत

अनिल सिन्हा

चुनाव नतीजों ने स्पष्ट कर दिया है कि आम मतदाताओं को शासन करने का यह तरीक़ा पसंद नहीं आया। वर्ष 2014 के बाद वर्ष 2019 में मोदी की अगुआई वाली पार्टी को ज़्यादा सीटें देने वाली जनता ने इस बार उसे बहुमत से भी नीचे ला दिया तो उसमें छुपे इस संदेश को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता।

इस बार के आम चुनाव पिछले चुनावों से कई मायनों में अलग रहे। इस बार सबसे बड़ा सवाल यह था कि लोकतंत्र विभिन्न पक्षों की भागीदारी से चलेगा या नहीं। संभवतः यह देश का पहला चुनाव था, जिसमें सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच किसी भी मुद्दे पर सहमति नहीं थी। देश की राजनीति में आम सहमति का इस तरह टूट जाना बेहद महत्वपूर्ण घटना मानी जा सकती है।

आम सहमति ख़त्म हुई

ऐसा नहीं कि विपक्ष और सत्ता पक्ष के बीच पहले भारी टकराव नहीं हुए हैं। वर्ष 1975 में लगे आपातकाल का टकराव आज के मुक़ाबले ज़्यादा गंभीर था, लेकिन उस समय भी विदेश नीति और कल्याणकारी कार्यक्रमों को लेकर आम सहमति थी। आपातकाल के ठीक पहले तक संसद और अन्य मंचों पर विपक्ष के साथ सत्ता का संवाद भी जारी था। विरोधी विचारों को सुनने की सरकार को क्षमता काफ़ी अधिक थी। आपातकाल की छोटी-सी अवधि को छोड़ दें तो सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच सहमति का ऐसा लोप कभी नहीं हुआ था। हालात का अंदाज़ा इसी से लगाया जा सकता है कि मणिपुर की हिंसा पर प्रधानमंत्री की राय सुनने के लिए विपक्ष को अविश्वास प्रस्ताव का सहारा लेना पड़ा।

बिना बहस के बिल

सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच संवाद के अभाव को हम उन फ़ैसलों

में भी देख सकते हैं, जिनमें विपक्ष की भागीदारी शून्य थी। नोटबंदी और कोरोना लॉकडाउन ऐसे ही फ़ैसले थे। वैसे भी पिछले एक दशक में बिना बहस के पास होने वाले विधेयकों की संख्या पहले से काफ़ी ज़्यादा रही। ज़रूरी मुद्दे पर सर्वदलीय बैठकों की संख्या भी न के बराबर रही।

विपक्ष से दुश्मनी

नौबत यहां तक आ गई कि सत्ता और विपक्ष का टकराव क़रीब-क़रीब दुश्मनी में बदलता दिखने लगा। सत्ताधारी बीजेपी की पूरी कोशिश रही कि विपक्ष को देश का दुश्मन साबित किया जाए। सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी कांग्रेस पर चीन या पाकिस्तान के लिए काम करने का आरोप लगाया गया। बीजेपी बार-बार कांग्रेस मुक्त भारत का नारा भी दोहराती रही।

एजेंसियों का इस्तेमाल

सरकार के रवैये का अंदाज़ा इस बात से भी होता है कि चुनाव के ठीक पहले ही नहीं, उसके बीच में भी विपक्ष के नेताओं के ख़िलाफ़ एजेंसियों का इस्तेमाल बदस्तूर होता रहा। दो पार्टियों के प्रमुख नेता इस दौरान जेल भेज दिए गए। दोनों अपने-अपने राज्यों के मुख्यमंत्री भी थे। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने जेल जाना तय हो जाने के बाद इस्तीफ़ा दिया। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने इस्तीफ़ा नहीं दिया। सुप्रीम कोर्ट के दख़ल के बाद उन्हें चुनाव प्रचार के लिए कुछ समय तक जेल से बाहर आने का मौक़ा मिला, लेकिन सोरेन को यह सुविधा भी नहीं मिली।

कुछ को अभयदान

चुनाव के दौरान ईडी और आईटी की कार्रवाई से विपक्ष को डराने के अन्य कई उदाहरण भी हैं। झारखंड के एक मंत्री के यहां छापे और गिरफ़्तारी की कार्रवाई ऐन चुनाव के बीच की गई। सवाल उठता है कि भ्रष्टाचार के मामले सिर्फ़ विपक्ष के ख़ेमे में ही क्यों ढूंढे गए? बीजेपी में शामिल होने पर आरोप झेल रहे नेताओं को अभयदान ही नहीं, पुरस्कार भी मिलता रहा। शिवसेना से निकले एकनाथ शिंदे को मुख्यमंत्री और एनसीपी से गए अजित पवार को उपमुख्यमंत्री बना दिया गया। इसके पहले हिमंता विश्व शर्मा को असम का मुख्यमंत्री और पश्चिम बंगाल में शुभेंदु अधिकारी को विपक्ष का नेता बनाकर पुरस्कृत किया गया था।

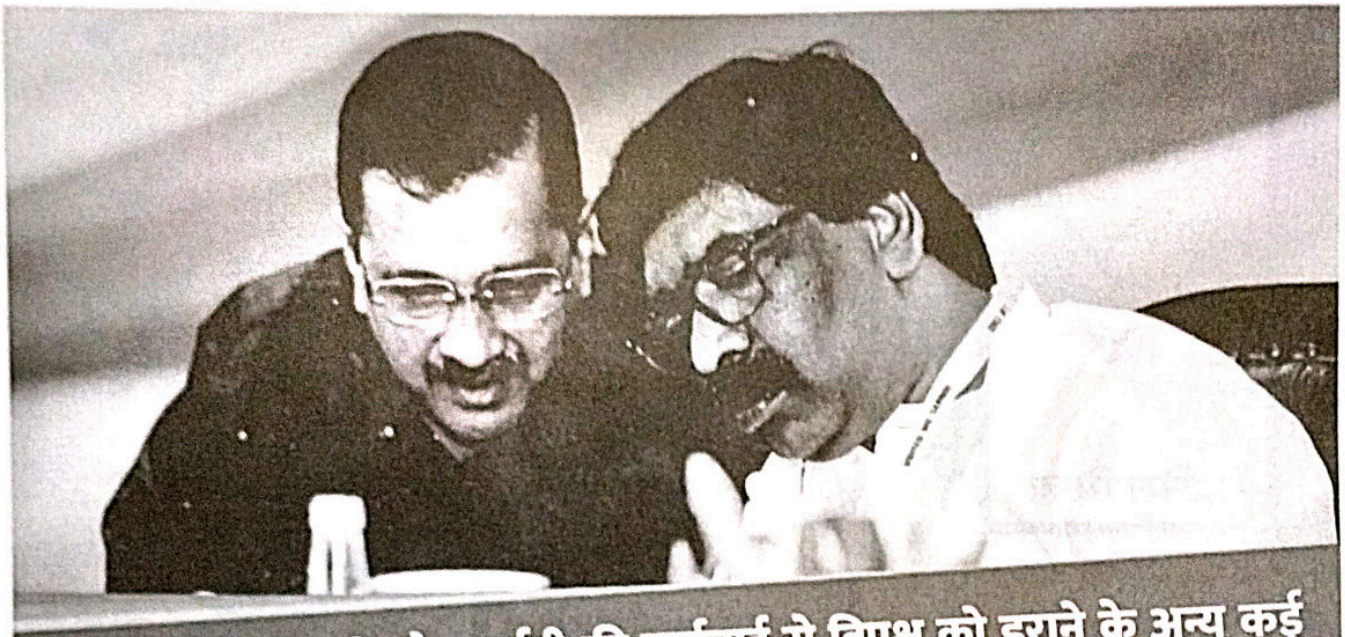

चुनाव के दौरान इडी और आईटी की कार्रवाई से विपक्ष को डराने के अन्य कई उदाहरण भी है। झारखंड के एक मंत्री के यहां छापे और गिरफ़्तारी की कार्रवाई ऐन चुनाव के बीच की गई। सवाल उठता है कि भ्रष्टाचार के मामले सिर्फ़ विपक्ष के खेमे में ही क्यों ढूंढे गए? बीजेपी में शामिल होने पर आरोप झेल रहे नेताओं को अभयदान ही नहीं, पुरस्कार भी मिलता रहा।

पीएम के ख़िलाफ़ शिकायतें

विपक्ष को अपमानित करने में सत्ता पक्ष ने परहेज़ नहीं किया। प्रधानमंत्री ने कांग्रेस पर सत्ता में आने के बाद लोगों

नौबत यहां तक आ गई कि सत्ता और विपक्ष का टकराव क़रीब-क़रीब दुश्मनी में बदलता दिखने लगा। सत्ताधारी बीजेपी की पूरी कोशिश रही कि विपक्ष को देश का दुश्मन साबित किया जाए। सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी कांग्रेस पर चीन या पाकिस्तान के लिए काम करने का आरोप लगाया गया। बीजेपी बार-बार कांग्रेस मुक्त भारत का नारा भी दोहराती रही। विपक्ष को अपमानित करने में सत्ता पक्ष ने परहेज नहीं किया

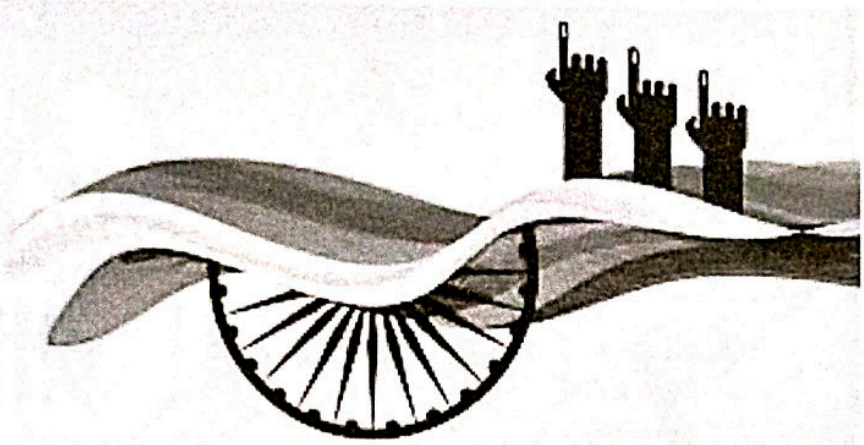

की संपत्ति छीन कर अल्पसंख्यकों को देने की साज़िश रचने का आरोप लगाया। कांग्रेस ने इसे आचार संहिता का उल्लंघन बताया। इस मामले में चुनाव आयोग की भूमिका पर भी सवाल उठे। प्रधानमंत्री के ख़िलाफ़ 14 शिकायतें दर्ज कराई गईं, लेकिन आयोग ने बीजेपी के अध्यक्ष और प्रधानमंत्री कार्यालय को महज़ हिदायत भेजकर छुट्टी पा ली। हालांकि इसी तर्ज़ पर राहुल गांधी के बजाय कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को नोटिस भेजा गया।

एकाधिकार के ख़िलाफ़

चुनाव नतीजों ने स्पष्ट कर दिया है कि आम मतदाताओं को शासन करने का यह तरीक़ा पसंद नहीं आया। वर्ष 2014 के बाद वर्ष 2019 में मोदी की अगुआई वाली पार्टी को ज़्यादा सीटें देने वाली जनता ने इस बार उसे बहुमत से भी नीचे ला दिया तो उसमें छुपे इस संदेश को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। ■■ *(साभार : नभाटा)*

"ऐ इसराईल की संतान, तनिक याद करो मेरी उस नेमत को जो मेरी ओर से तुम पर हुई। मेरे साथ तुम्हारी जो प्रतिज्ञा थी उसे तुम पूरा करो तो मेरी जो प्रतिज्ञा तुम्हारे साथ थी उसे मैं पूरा करूं, और मुझ ही से तुम डरो।" (क़ुरआन, 2:40)

With Best Compliments From :

Md. Akbar Khan

Unhel (MP)

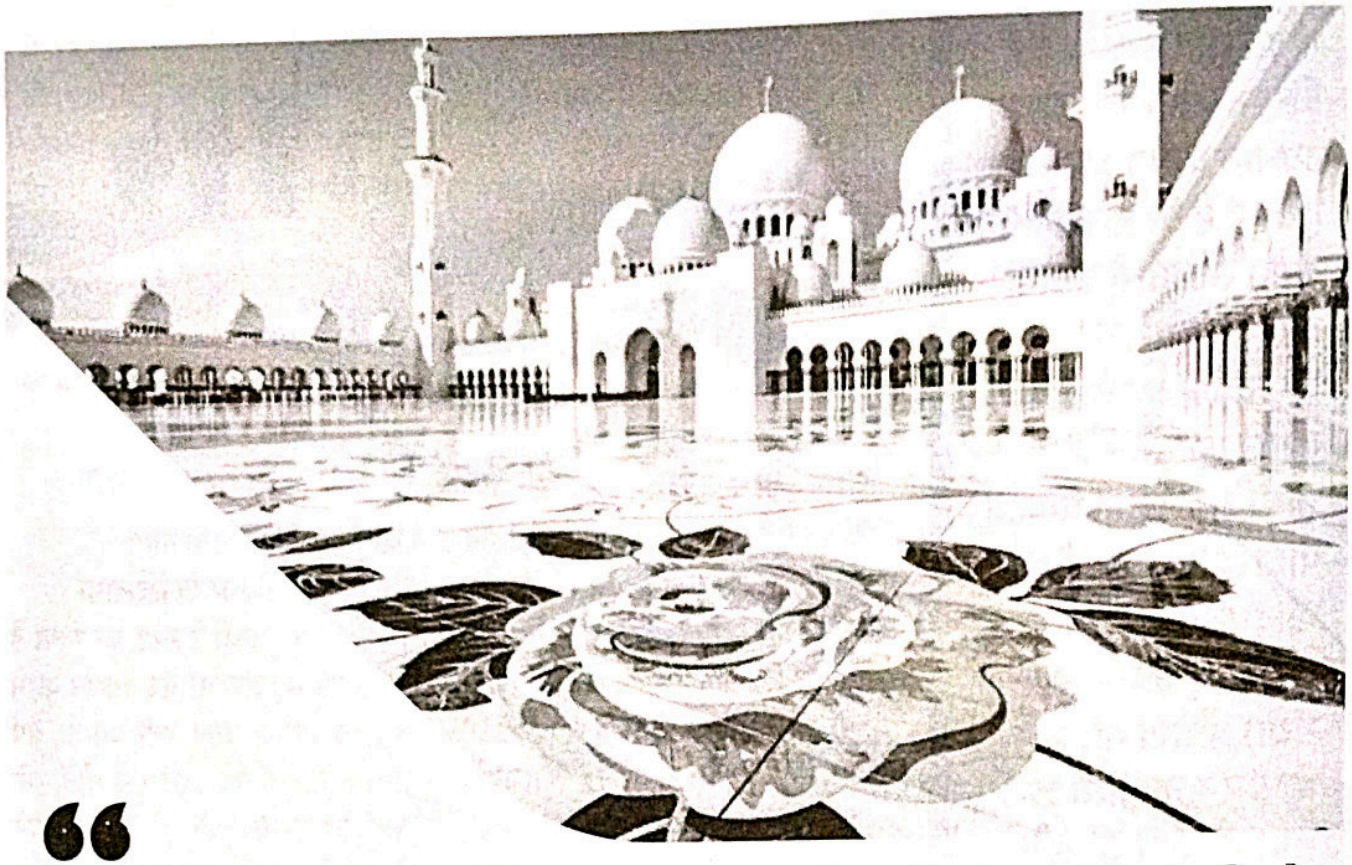

“अगर आदम की सन्तान के पास माल से भरी दो घाटियां भी हों तो उसे तीसरी की इच्छा और तलाश होगी। आदम की सन्तान के पेट को सिर्फ़ मिट्टी ही भरती है, और अल्लाह तौबा करने वाले की तौबा स्वीकार करता है।” (हदीस : बुख़ारी)

with best compliment from

IIH Jabalpur West [MP]



समाधान

संपादन प्रभाग

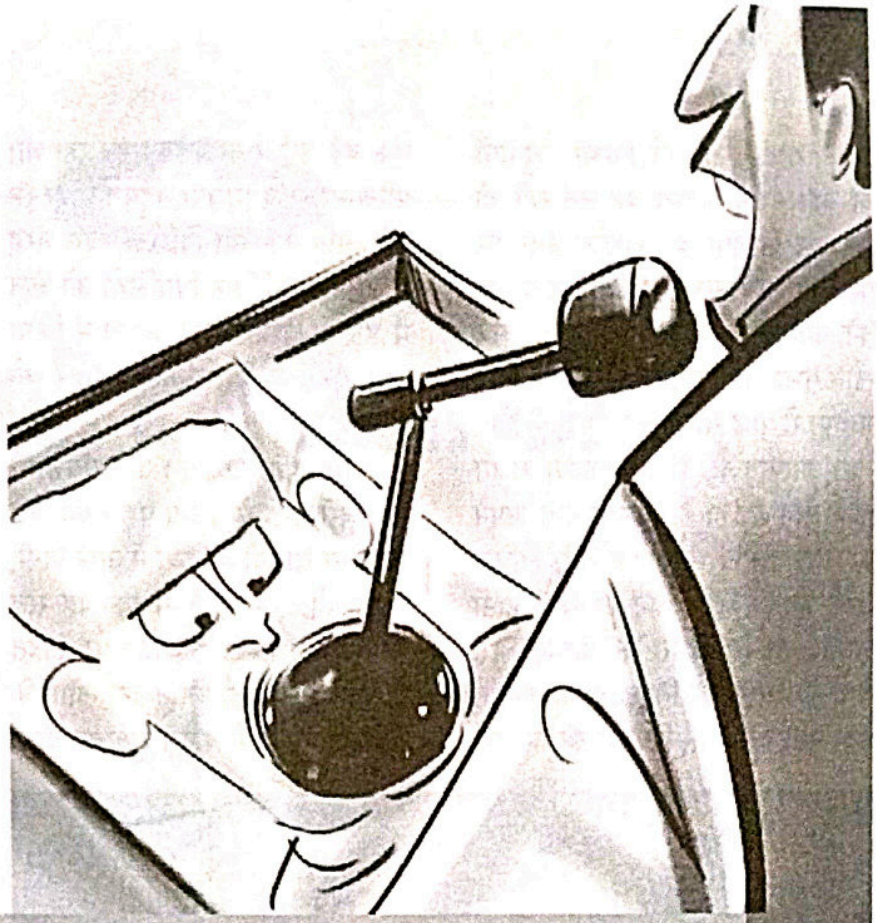

ज़रूरी है अति का अंत

देश में केंद्रीय स्तर पर एक बार फिर गठबंधन सरकार की शुरुआत हो गई है। चुनाव में जब कोई भी पार्टी पूर्ण बहुमत प्राप्त नहीं कर पाती तो गठबंधन के माध्यम से सरकार बनाना एक मजबूरी बन जाती है। गुजरात और फिर केंद्र में लगभग कई दशक तक बहुमत वाली सरकारों की अगुवाई करने के बाद नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री के रूप में अपने तीसरे कार्यकाल में पहली बार एक गठबंधन सरकार का नेतृत्व करने जा रहे हैं। नई सरकार में टीडीपी और जदयू जैसे घटक दलों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी।

मोदी को इस बार लोकसभा में प्रतिनिधित्व करने वाले अपने अन्य सहयोगी दलों के साथ समन्वय बनाए रखना होगा। वैसे तो देश में 1967 से गठबंधन की राजनीति शुरू हुई थी। तब से क्षेत्रवाद के उदय के साथ भारत में गठबंधन आधारित राजनीति में काफ़ी परिवर्तन आया है।

अतिवाद इस समाज का स्वभाव नहीं है। अतिवादी विचार समाज में हावी उस समय होता है जब मानवीय गुण क्षीण हो जाता है तथा यह सामाजिक राजनीतिक संकट की स्थिति है। हम उम्मीद कर सकते हैं कि यह बदलेगा, क्योंकि समाज अंततः प्रेम, समानता, सह-अस्तित्व और सहिष्णुता के साथ जाता है।

गठबंधन सरकार में एक दल की मंत्रिपरिषद के बजाय कई दलों को मिलाकर मंत्रिपरिषद का गठन होता है। गठबंधन की राजनीति अतिवादी दृष्टिकोण पर लगाम लगाती है। एक दल की सरकार जनता पर अपने दृष्टिकोण को थोपने का प्रयास कर सकती है, जबकि गठबंधन में कोई भी दल अकेले अपनी नीतियां और सिद्धांत थोप नहीं सकता, क्योंकि अन्य दल विरोध कर सकते हैं।

गठबंधन सरकार की मंत्रिपरिषद को प्रायः एक न्यूनतम साझा कार्यक्रम के अनुसार काम करना होता है। वह मनमाने तरीक़े से कार्य नहीं कर सकती। प्रधानमंत्री को भी कोई फ़ैसला लेते समय गठबंधन के सभी दलों की नीतियों और सिद्धांतों का ध्यान रखना पड़ता है। गठबंधन में विभिन्न विचारधाराओं और सिद्धांतों वाले दल शामिल होते हैं, जिससे सरकार में संतुलन बना रहता है।

पिछले दो लोकसभा चुनावों के बाद आम धारणा यह बन रही थी कि इस भाजपा को राष्ट्रीय स्तर पर पराजित करना संभव नहीं है। इस धारणा को ज़बरदस्त धक्का पहुंचा है। अब लोकसभा में शक्तिशाली विपक्ष है। बहुमत से पीछे रह जाना भाजपा के लिए बड़ा आपात है, किंतु जनादेश राजग के शासन का ही है। विपक्षी नेता अपने अनुसार इसका मूल्यांकन करें, लेकिन उनके लिए भी यह मंथन का विषय होना चाहिए इतनी मेहनत के बावजूद 10 वर्षों के शासन के विरुद्ध इतना जनमत पैदा नहीं कर सके कि इस सरकार को उखाड़ फेंकें।

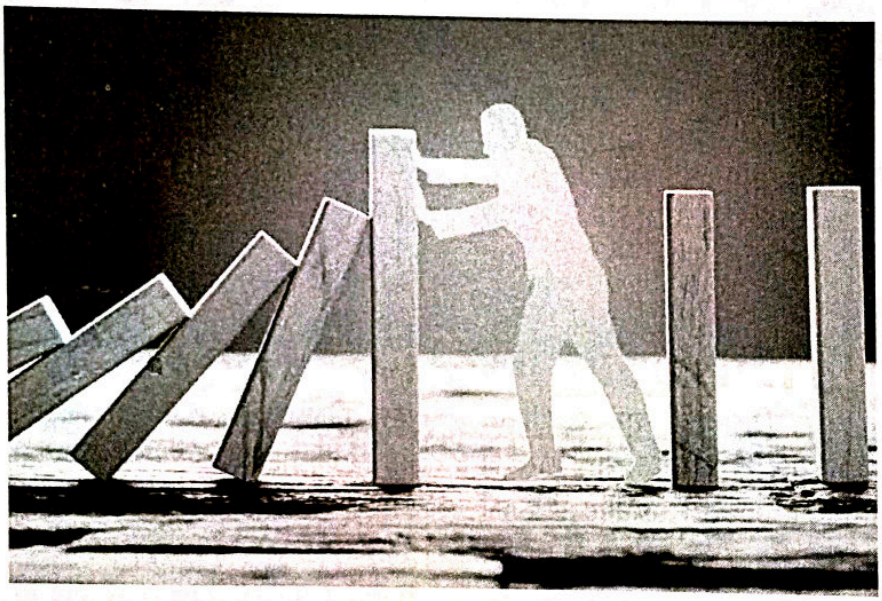

भाजपा आरक्षण ख़त्म कर देगी, संविधान समाप्त कर देगी, मोदी केवल कुछ पूंजीपतियों के दोस्त हैं, दलित-पिछड़ा विरोधी हैं, इस प्रकार की बातें आमजन के एक वर्ग की समझ में आने लगी थी। परन्तु बड़े पैमाने पर यह बात लोगों को समझाने में विपक्ष उतना सफल नहीं हो सका, जितना कि उसे होना चाहिए था।

पिछला एक दशक भाजपा की अति का रहा। अतिअहंकार के साथ वह अतिविभाजनकारी नीतियों पर अमल करती रही। जिससे आमजन के एक बड़े वर्ग में असंतोष पनप रहा था। परिणामस्वरूप भाजपा बहुमत से दूर रह गई। अति का अंत निश्चित। जिस तरह से उसने राजनीतिक विपक्षियों को जेल में डाला, असहमतियों का दमन किया और वह उसकी अतिवादी सोच को दर्शाता है।

400 पार का अति आत्मविश्वासी नारा बुरी तरह से उलटा पड़ गया। जैसे ही प्रचार सामग्री मीडिया में आने लगी, लोगों को एहसास हुआ कि यह सब व्यक्तिगत रूप से एक व्यक्ति पर केंद्रित है। भाजपा ने मोदी कि तुलना लोगों के श्रद्धेय देवताओं से करनी शुरू कर दी।

विपक्षी नेताओं से निपटने के तरीक़े, मीडिया पर कथित रूप से अंकुश लगाना, राहुल गांधी को लोकसभा से बाहर करना या बहुत बड़ी संख्या में सांसदों को निलंबित करना, कुछ ख़ास उद्योगपतियों को बढ़ावा देना और भाजपा के पुराने सहयोगियों को दरकिनार करना-भाजपा की इस हार में परिलक्षित हुआ है। एनडीए ने कुछ हद तक सत्ता विरोधी भावना को मात देकर लगातार तीसरी बार जीत ज़रूर हासिल की है, लेकिन चुनाव परिणामों ने भाजपा को यह एहसास करा दिया कि हमेशा उसकी मर्ज़ी नहीं चल सकती।

राज्यों में डबल इंजन की सरकार और समस्त धन-बल के बावजूद भाजपा यदि 240 सीटों पर सिमट जाती है तो यह उसकी अतिवादी नीति की पराजय ही है। धर्म और नफ़रत की राजनीति के अलावा भी यदि देखें तो किसानों का मुद्दा, महंगाई पर नियंत्रण न होना, संविधान और आरक्षण पर 'ख़तरा' आदि मुद्दों ने भी लोगों को परेशान किया, लेकिन बड़े नेता अपनी वाहवाही में डूबे रहे।

सवाल उठता है कि नए सहयोगियों के साथ अब भाजपा के पास अलग-अलग विचारों और उदारवादी सोच को समायोजित करने के अलावा क्या कोई विकल्प होगा? जो पुराने दल हैं, जो सत्ता में रहे हैं और जिनकी विचारधारा धर्मनिरपेक्ष रही है उनकी विफलता यह है कि वो जनता में प्रेम, भाईचारे और एकता की भावना का प्रसार ठीक से नहीं कर सके।

यदि वे अपनी चीज़ों को जनता तक उनकी भाषा में लेकर जाते, विश्वास को बनाकर रखते तो लोग अतिवाद की तरफ़ नहीं जाते, क्योंकि अतिवाद इस समाज का स्वभाव नहीं है। अतिवादी विचार समाज में हावी उस समय होता है जब मानवीय गुण क्षीण हो जाता है तथा यह सामाजिक राजनीतिक संकट की स्थिति है। हम उम्मीद कर सकते हैं कि यह बदलेगा, क्योंकि समाज अंततः प्रेम, समानता, सह-अस्तित्व और सहिष्णुता के साथ जाता है।

आज यह ज़िम्मेदारी हम सभी पर आ पड़ी है कि हम अपने देश को हर प्रकार के अतिवादियों से बचाएं। अतिवादी हर स्तर पर हमारे समाज को कमज़ोर कर रहे हैं। जबकि आज ज़रूरत इसकी है कि हमारा समाज कैसे हर तरह से सशक्त हो। अतः अतिवाद, हिंसा और नफ़रत को बढ़ावा देने वाले समूहों का अंत आवश्यक है। ■■

मोनिका वर्मा

कविता

यही घड़ी है परीक्षा की

सब्र का बांध
जब टूटने लगे
यही घड़ी है परीक्षा की
बस इतना जान ले

बन चट्टान
खड़ा रह अडिग
कर हौंसले बुलंद इतने
तूफ़ान भी हिला ना सके
यही घड़ी है परीक्षा की
बस इतना जान ले।

विश्वास कि लौ
जब बुझने लगे
यही घड़ी है परीक्षा की
बस इतना जान ले

कर्म की बाती को
लगन से सींच ले
जलाकर ख़ुद को
रोशन ये जहान कर ले
यही घड़ी है परीक्षा की
बस इतना जान ले।

मझधार में कश्ती
जब डूबने लगे
यही घड़ी है परीक्षा की
बस इतना जान ले

उफनती लहरों को
आत्मविश्वास से बांध ले
साहस को साथी बना आज
समंदर का मंथन कर ले
यही घड़ी है परीक्षा की
बस इतना जान ले।

डगर पर कांटे जब
हर तरफ़ दिखने लगे
यही घड़ी है परीक्षा की
बस इतना जान ले

ले प्रेरणा फूलों से
और आगे बढ़
कांटों की सेज पर
स्वयं को महका दे
यही घड़ी है परीक्षा की
बस इतना जान ले।

उम्मीद का तारा
जब डूबने लगे
यही घड़ी है परीक्षा की
बस इतना जान ले

रख विश्वास स्वयं पर
और ऊपर उठ
ख़्वाबों की पराकाष्ठा को
आत्मबल से नाप ले
यही घड़ी है परीक्षा की
बस इतना जान ले।

यही घड़ी है परीक्षा की
बस इतना जान ले।

हादसों की सड़क



मंथन



जितेंद्र गौतम

जम्मू-कश्मीर में अखनूर के पास बीते दिनों एक बस के गहरी खाई में गिरने से 20 से अधिक लोगों की मौत बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। यह सर्वविदित है कि हमारे देश में आए दिन होने वाली सड़क दुर्घटनाओं में लोग बड़ी संख्या में अपनी जान गंवाते हैं। दुर्घटना का मूल कारण कुछ भी हो, लेकिन यह प्रश्न तो अनुत्तरित ही है कि सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के ठोस उपाय कब किए जाएंगे? जबकि बार-बार यह तथ्य सामने आ रहा है कि भारत में सड़क दुर्घटनाओं की संख्या लगातार बढ़ रही है, जिसमें बड़ी संख्या में लोग जान गंवाने के साथ ज़ख़्मी भी हो रहे हैं, लेकिन ऐसे कोई उपाय नहीं किए जा रहे हैं, जिनसे सड़क हादसों पर प्रभावी ढंग से लगाम लगे।

नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, वर्ष 2022 में सड़क दुर्घटनाओं में एक लाख 68 हज़ार लोगों की जान गई। सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों के मामले में भारत दुनिया में तीसरे स्थान पर है, जबकि अन्य देशों के मुक़ाबले अपने देश में कहीं कम संख्या में वाहन हैं। सड़क दुर्घटनाओं के कारण किसी से छिपे नहीं। यातायात नियमों का उल्लंघन, खटारा वाहन, अकुशल चालक, शराब पीकर गाड़ी चलाना सड़क हादसों के मूल कारण हैं। ये ऐसे कारण नहीं, जिनका निवारण न किया जा सके, लेकिन दुर्भाग्य से इस ओर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। परिणाम यह है कि देश के किसी न किसी हिस्से में लगभग प्रतिदिन कोई न कोई बड़ा सड़क हादसा होता है।

> **“नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, वर्ष 2022 में सड़क दुर्घटनाओं में एक लाख 68 हजार लोगों की जान गई। सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों के मामले में भारत दुनिया में तीसरे स्थान पर है, जबकि अन्य देशों के मुकाबले अपने देश में कहीं कम संख्या में वाहन हैं।”**

शासन-प्रशासन इन हादसों पर शोक-संवेदना जताकर कर्तव्य की इतिश्री तो कर लेता है, लेकिन यह देखने से इन्कार करता है कि उन्हें रोका जा सकता है और रोका जाना चाहिए। सड़क दुर्घटनाओं में मरने वाले अधिकांश लोग अपने घर के कमाऊ सदस्य होते हैं। उनके न रहने से परिवार विशेष को ही क्षति नहीं पहुंचती, बल्कि

समाज और राष्ट्र भी किसी न किसी रूप में कमज़ोर होता है। भारत वैश्विक स्तर पर सड़क दुर्घटनाओं में सबसे ज़्यादा जन-धन गंवाने वाले देशों में है। दूर-दराज़ के गांवों से लेकर महानगरों तक, आए दिन कितने ही लोग अपनी जान गंवा रहे हैं। युवा भीषण दुर्घटनाओं में विकलांग हो रहे हैं। परिवार और समाज को सहारा दे रहे कितने ही लोग स्वयं आश्रित बन जा रहे हैं।

विश्व बैंक के एक आकलन के अनुसार, देश का सकल घरेलू उत्पाद अभी जितना है, उसमें हर साल तीन प्रतिशत की और बढ़ोत्तरी होती, यदि भारत में सड़क दुर्घटनाओं में इतने अधिक लोगों की जान न जाती।

संयुक्त राष्ट्र ने सर्वाधिक सड़क दुर्घटनाओं वाले जिन दस देशों की पहचान की थी, उनमें भी भारत सबसे ऊपर है। बावजूद इसके यातायात नियमों के पालन को लेकर सजगता नहीं दिखती। देश के कोने-कोने में आए दिन होने वाले भयावह सड़क हादसे हर बार सड़कों पर दौड़ती मौत का सच सामने ला देते हैं। सवाल उठता है कि आख़िर कब इन दुर्घटनाओं को गंभीरता से लिया जाएगा?

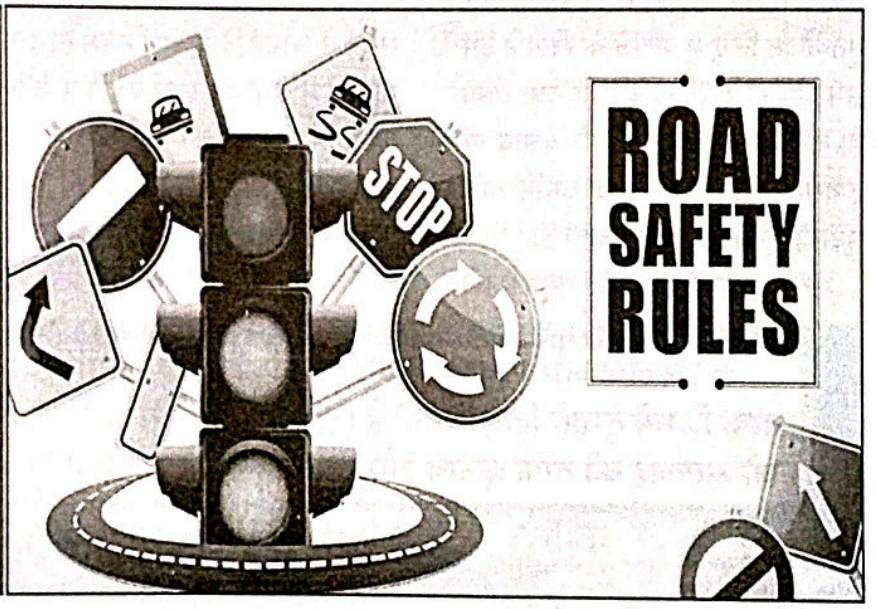

ये दुर्घटनाएं दरअस्ल, बहुस्तरीय लापरवाही का दुर्भाग्यपूर्ण उदाहरण हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक़ भारत सड़क हादसों में दुनिया का अग्रणी देश है। कुछ समय पहले संयुक्त राष्ट्र ने सर्वाधिक सड़क दुर्घटनाओं वाले जिन दस देशों की पहचान की थी, उनमें भी भारत सबसे ऊपर है। बावजूद इसके यातायात नियमों के पालन को लेकर सजगता नहीं दिखती। देश के कोने-कोने में आए दिन होने वाले भयावह सड़क हादसे हर बार सड़कों पर दौड़ती मौत का सच सामने ला देते हैं। सवाल उठता है कि आख़िर कब इन दुर्घटनाओं को गंभीरता से लिया जाएगा?

हमारे देश में दुपहिया वाहनों से लेकर भारी वाहनों तक, शराब पीकर, नियमों की अनदेखी करते हुए और अनियंत्रित गति से गाड़ी चलाना आम बात है। ग़ौरतलब है कि मोटर वाहन संशोधन अधिनियम, 2019 में यातायात उल्लंघन, दोषपूर्ण वाहन, नाबालिग़ों द्वारा वाहन चलाने आदि पर कठोर दंड का प्रावधान किया गया है। यातायात नियमों के कड़े प्रावधान होने के बावजूद सख़्ती से लागू न किया जाना इस दुस्साहस को और बढ़ाता है।

हर दिन सड़कों पर उतर रही महंगी गाड़ियों के चालक भी कितनी ही असामान्य गतिविधियां करते दिखते हैं। विडंबना है कि शिक्षित सजग नागरिक भी यातायात नियमों का उल्लंघन अपनी शान समझते हैं। सड़क दुर्घटनाओं के अधिकतर विश्लेषण यही बताते हैं कि कुल सड़क दुर्घटनाओं में 78.7 प्रतिशत वाहन चला रहे लोगों को ग़लती से ही होते हैं। यही वजह है कि छोटे-मोटे हादसों के अलावा हर दिन कोई न कोई भीषण दुर्घटना भी होती रहती है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के अनुसार, बीते साल सड़क हादसों में हर घंटे सोलह लोग मारे गए। ऐसे में सामाजिक-पारिवारिक व्यवस्था से लेकर देश को अर्थव्यवस्था तक को प्रभावित करने वाले इन हादसों का आंकड़ा वाक़ई चिंतनीय है।

इसलिए कम से कम यातायात नियमों के पालन को लेकर तो सजगता होनी चाहिए। आंकड़े बताते हैं कि सड़क दुर्घटनाओं के चलते होने वाली 63 प्रतिशत मौतें राष्ट्रीय राजमार्गों पर होती हैं। एनसीआरबी के आंकड़ों के मुताबिक़ वर्ष 2021 में हुई 4,03,116 दुर्घटनाओं में 1,55,662 की जान चली गई। वहीं घायल लोगों का आंकड़ा 3,71,884 रहा। सरकारी आंकड़े के अनुसार, देश में सड़क दुर्घटना में प्रतिदिन 415 लोगों की मौत होती है। इनमें सीमा से ज़्यादा गति के कारण 58.7 प्रतिशत और चालकों की लापरवाही या ओवरटेकिंग के कारण 25.77 प्रतिशत हादसे हुए।

देश में हर साल डेढ़ लाख से ज़्यादा लोग सड़क हादसों में जीवन गंवा रहे हैं।

घायल होने वालों में पचासी प्रतिशत बीस से पच्चीस वर्ष की उम्र के युवा हैं। साथ ही लापरवाही जनित इन दुर्घटनाओं का शिकार होने वाले अधिकतर लोग पच्चीस से चालीस वर्ष के आयु समूह के होते हैं। इन हादसों में मृत्यु या अपंगता के कारण ग़रीब परिवारों की लगभग सात महीने की घरेलू आय कम हो जाती है। इन हालात में बहुत से परिवार ऋण के कुचक्र में फंस जाते हैं। ऐसे दुखदायी आंकड़ों के पीछे यातायात नियमों की अनदेखी सबसे बड़ी वजह है। ऐसी ग़लती के लिए सख़्त सज़ा के बजाय नाममात्र जुर्माने की राशि और मृतकों के लिए मुआवज़े के खेल ने इस समस्या की गंभीरता को ही दबा दिया है। कोई ठोस क़दम उठाने के बजाय हर हादसे के बाद कार्यवाही जुर्माने और मुआवज़े तक ही सिमट जाती है।



यही वजह है कि कुछ समय पहले सुप्रीम कोर्ट ने भी देश में बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं पर गहरी चिंता जताई थी। उच्चतम न्यायालय ने सरकार और संसद से आग्रह किया था कि इस तरह के मामलों में दोषी की सज़ा बढ़ाने के लिए क़ानून में संशोधन करने पर विचार करें। इतना ही नहीं, ट्रैफिक सिग्नल पर कुछ पल की प्रतीक्षा न करके हड़बड़ी दिखाने और यातायात नियमों की अनदेखी भी इन हादसों का एक प्रमुख कारण है। जबकि सुरक्षा के मामले में जागरूकता के प्रयासों और क़ानूनी प्रावधानों के साथ-साथ जन सहभागिता और सहयोग भी ज़रूरी है। सड़क हादसों को रोकने के लिए प्रशासनिक व्यवस्थाओं से लेकर जन सामान्य तक सभी को सजग और संवेदनशील बनना होगा।

■■

❊ अल्लाह और रसूल की पुकार पर लब्बैक कहो जबकि वो तुम्हें बुलाते हैं उस चीज़ की तरफ जिसमें तुम्हारे लिए ज़िंदगी है। (क़ुरआन) ❊ उस शख़्स से बेहतर किसकी बात हो सकती है जो अल्लाह की तरफ बुलाये और नेक अमल करे और कहे कि मैं मुसलमानों में से हूँ। (क़ुरआन)



हिन्दुस्तान के मशहूर दीनी-इल्मी, फिक्री और म्यारी अख़बार व रसाइल (पत्रिकाओं) का मुताला(अध्ययन)कीजिए

इस सिलसिले में हमारी ख़िदमात हासिल कीजिए :

पेपर – पत्रिका	प्रति कापी	सालाना खरीददारी
✪ कान्ति साप्ताहिक अख़बार	7/-	350/-
✪ कान्ति मासिक पत्रिका	30/-	350/-
✪ दावत उर्दू अख़बार साप्ताहिक	15/-	750/-
✪ जिंदगी–ए–नौ उर्दू महाना	35/-	400/-

सालाना खरीददारी व ग्राहक बनने के लिए राब्ता करें :

AL FALAH
True Success Both Worlds

अल फलाह

हक़ीक़ी कामयाबी दोनों जहानों में

अख़्तर नवाब
✆ 9926408118

समसामयिक



डॉ. प्रदीप कुमार

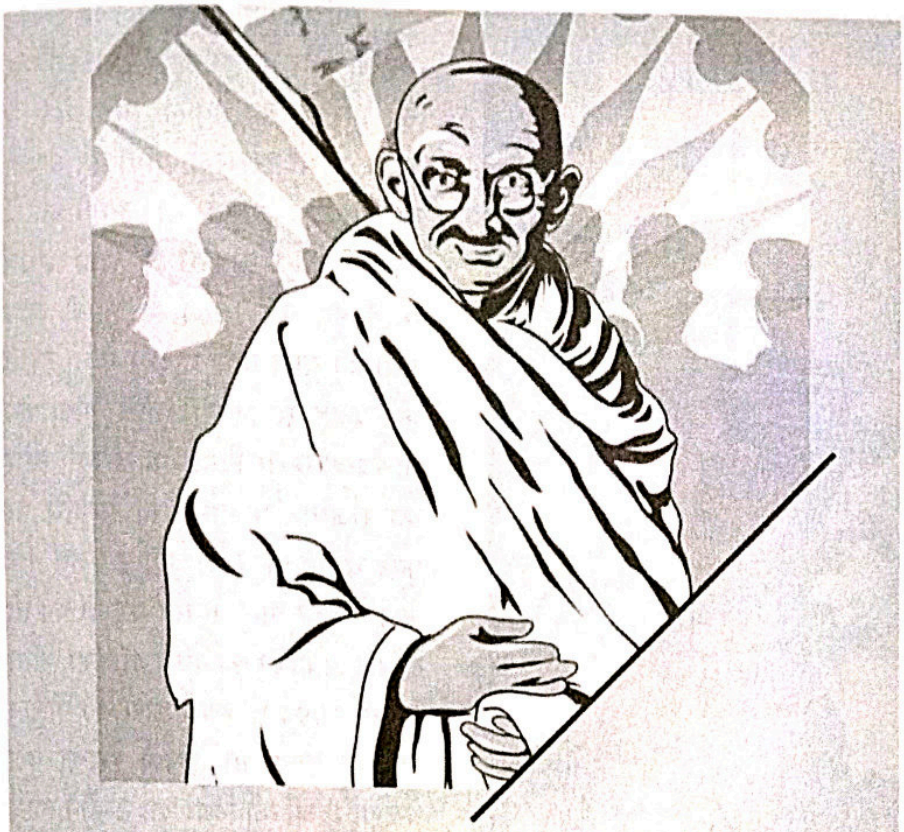

मिथकों का ध्वंस ज़रूरी

मेरे एक मित्र ने मुझे वाट्सएप के माध्यम से एक चुटकुला भेजा, जो कुछ इस प्रकार था–

"जब पहली बार वर्ष 1960 में 'चौदहवीं का चांद' फ़िल्म बनी, तब दुनिया को चांद के बारे में पता चला।"

पाठक इस चुटकुले और इसके संदर्भ को भली-भांति समझ गए होंगे। प्रधानमंत्री मोदी जी की मानें तो वर्ष 1982 में रिलीज़ हुई रिचर्ड एटनबरो की फ़िल्म के ज़रिए पहली बार दुनिया ने गांधी को जाना। यहां गांधी की ख्याति और मोदी की अज्ञानता चर्चा का उद्देश्य नहीं है। कोई व्यक्ति गांधी की ख्याति से अनभिज्ञ हो सकता है, किन्तु कोई ऐसा व्यक्ति जो तीन बार गांधी की जन्मस्थली गुजरात का मुख्यमंत्री रह चुका हो, जो व्यक्ति लगातार तीसरी बार भारत का प्रधानमंत्री बनने जा रहा हो, जिसकी जन्मभूमि और राजनीति की कर्मभूमि गुजरात और जनपद गांधीनगर हो, उसके मुख से ये बात अचंभित करती है।

वास्तविकता यह है कि पिछले 100 साल में कम ही लोग ऐसे हैं, जिन्हें गांधी जितनी ख्याति मिली। तरक्की और आधुनिकता की राह पर हम कितना भी आगे क्यों न बढ़ जाएं गांधी को नकार पाना समय के बस में भी नहीं दिखता। कई लोग आज गांधी के दर्शन को भले ही व्यवहारिक न मानें, लेकिन उसके आकर्षण एवं प्रासंगिकता की अनदेखी नहीं कर सकते।

वास्तविकता यह है कि पिछले 100 साल में कम ही लोग ऐसे हैं, जिन्हें गांधी जितनी ख्याति मिली। तरक़्क़ी और आधुनिकता की राह पर हम कितना भी आगे क्यों न बढ़ जाएं गांधी को नकार पाना समय के बस में नहीं दिखता। कई लोग आज गांधी के दर्शन को भले ही व्यावहारिक न मानें, लेकिन उसके आकर्षण एवं प्रासंगिकता की अनदेखी नहीं कर सकते।

गांधी के विचारों ने दुनिया भर के लोगों को न सिर्फ़ प्रेरित किया बल्कि करुणा, सहिष्णुता और शांति के दृष्टिकोण से भारत और दुनिया को बदलने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अपने समस्त जीवन में सिद्धांतों और प्रथाओं को विकसित करने पर ज़ोर दिया और साथ ही दुनिया भर में हाशिये के समूहों और उत्पीड़ित समुदायों की आवाज़ उठाने में भी अतुलनीय योगदान दिया। साथ ही गांधी ने विश्व के बड़े नैतिक और राजनीतिक नेताओं जैसे-मार्टिन लूथर किंग जूनियर, नेल्सन मंडेला और दलाई लामा आदि को प्रेरित किया तथा लैटिन अमेरिका, एशिया, मध्य पूर्व तथा यूरोप में सामाजिक एवं राजनीतिक आंदोलनों को प्रभावित किया। बीसवीं सदी के



विचित्र बात यह है कि जिन नेल्सन मंडेला और मार्टिन लूथर किंग जूनियर की प्रसिद्धी का हवाला नरेंद्र मोदी ने दिया, वे भी दरअस्ल, गांधी को अपना पथ-प्रदर्शक मानते थे। अमेरिका में अश्वेतों के अधिकारों के लिए संघर्ष करते हुए वर्ष 1964 में अपनी जान गंवा देने वाले मार्टिन लूथर ने तो गांधी की वजह से अपनी भारत यात्रा को तीर्थयात्रा क़रार दिया था। वे जूते उतार कर राजघाट में गांधी की समाधि पर फूल चढ़ाने पहुंचे थे। वहीं 27 वर्ष तक जेल में रहने वाले नेल्सन मंडेला को तो दक्षिण अफ़्रीक़ा का गांधी ही कहा जाता है। वर्ष 1994 में जब मंडेला को नोबेल पुरस्कार मिला तो उन्होंने इसका पूरा श्रेय गांधी जी को दिया था। उन्होंने कहा था–"भारत गांधी को जन्म देने वाला देश है, दक्षिण अफ़्रीक़ा उनका गोद लिया देश है!"

गांधी ने दुनिया भर में हाशिये के समूहों और उत्पीड़ित समुदायों की आवाज़ उठाने में अतुलनीय योगदान दिया। साथ ही गांधी ने विश्व के बड़े नैतिक और राजनीतिक नेताओं जैसे-मार्टिन लूथर किंग जूनियर, नेल्सन मंडेला और दलाई लामा आदि को प्रेरित किया तथा लैटिन अमेरिका, एशिया, मध्य पूर्व तथा यूरोप में सामाजिक एवं राजनीतिक आंदोलनों को प्रभावित किया।

महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन गांधी और उनके अहिंसा के सिद्धांत के बड़े प्रशंसक थे। वे अपने तमाम साक्षात्कारों और वक्तव्यों में गांधी की प्रशंसा करते हुए दिखते हैं।

16 जून, सन 1950 में संयुक्त राष्ट्र रेडियो को दिए गए एक साक्षात्कार में आइंस्टीन ने कहा था–"मुझे विश्वास है की गांधी के विचार हमारे समय के सभी राजनीतिज्ञों से श्रेष्ठ थे। हमें उनके विचारों के अनुरूप कार्य करने के प्रयास करने चाहिए। अपने किसी भी कार्य के लिए संघर्ष करते हुए हमें हिंसा से बचते हुए, जो हमें ग़लत लगता है उसमें शामिल नहीं होना चाहिए।"

यूरोप, अमेरिका और अफ़्रीक़ा के देशों में गांधी के क़द और ख्याति से जो लोग अनभिज्ञ हैं, उन्हें मोबाइल की एक क्लिक से यह समझ आ जाएगा कि उस समय दुनिया के किसी भी हिस्से में सत्य और अहिंसा का ज़िक्र गांधी को याद किए बिना पूरा नहीं होता था।

आज इतना लंबा वक़्त बीतने के बाद भी गांधी महज़ नोटों, सड़कों और इमारतों पर ख़ुद अपने नाम की वजह से ही याद नहीं किए जा रहे हैं। यह तो उनके व्यक्तित्व का ही कमाल है, जिससे आज भी वे लोगों के दिलो-दिमाग़ पर अपनी पहचान बरक़रार रखे हुए हैं।

नरेंद्र मोदी का जिस साल जन्म हुआ, उसी साल यानी वर्ष 1950 में अमेरिकी पत्रकार लुई फ़िशर की मशहूर किताब 'द लाइफ़ ऑफ़ महात्मा गांधी' का प्रकाशन हुआ था। इस किताब की धूम पूरी दुनिया में थी और इसे पढ़कर ही रिचर्ड एटनबरो गांधी जी पर फ़िल्म बनाने को बेचैन हो उठे थे।

वैसे महान भौतिक विज्ञानी अलबर्ट आइंस्टीन को एटनबरो की फ़िल्म

'गांधी' देखने का अवसर नहीं मिला था फिर भी गांधी जी को श्रद्धांजलि देते हुए उन्होंने कहा था–"भविष्य की पीढ़ियों को इस बात पर विश्वास करने में मुश्किल होगी कि हाड़-मांस से बना ऐसा कोई व्यक्ति भी कभी धरती पर आया था।"

गांधी की हत्या की ख़बर पाकर संयुक्त राष्ट्र संघ ने शोक में झंडा झुका दिया था। यह सब तब हो रहा था जब महज़ 25 साल के रिचर्ड एटनबरो अभिनेता के तौर पर सफल होने का प्रयास कर रहे थे। गांधी फ़िल्म के रिलीज़ होने में अभी 34 साल का लंबा समय बाक़ी था जो मोदी जी के हिसाब से दुनिया के सामने गांधी जी को लाने का पहला ज़रिया बनी।



वैसे गांधी जी की ख्याति के बारे में मोदी जी का ज्ञान चाहे जितना कम हो लेकिन, उनकी इस आलोचना में दम है कि गांधी जी के विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए अपेक्षित प्रयास नहीं किया गया। महज़ करेंसी नोट में गांधी जी की तस्वीर छाप देने या स्कूली किताबों के आख़िरी पन्ने पर 'गांधी जी का जंतर' छाप देना काफ़ी नहीं था। न यह देखकर ख़ुश हुआ जा सकता है कि दुनिया के ज़्यादातर देशों में गांधी जी की प्रतिमा स्थापित है।

अस्ल मसला है गांधी जी के 'सत्य और अहिंसा' के विचार को सार्वजनिक जीवन में एक 'मूल्य' की तरह स्थापित करना। समाज में प्रेम, करुणा और भाईचारा की भावना बढ़ाना। पर इसके रास्ते में सबसे बड़ी बाधा तो वही विचारधारा है, जिसके प्रभाव में आकर नाथूराम गोडसे ने गांधी की हत्या की थी। गांधी तो हिंदू-मुस्लिम एकता के सबसे बड़े पैरोकार थे, लेकिन उनके विचारों के प्रचार-प्रसार में कमी रखने की उलाहना देने वाले मोदी जी ने अपने चुनावी भाषणों में इन दोनों समुदायों के बीच नफ़रत बढ़ाने में कोई क़सर नहीं छोड़ी।

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ गांधी जी की महानता से इस क़दर चमत्कृत थे कि उन्होंने टिप्पणी की थी, 'बहुत अच्छा होना ख़तरनाक है।' ऐसे अनगिनत बुद्धिजीवी और विद्वान हैं, जो गांधी जी को असाधारण रूप से महान मानते थे। विडंबना यह है कि आजकल अपने ही देश में उन पर चौतरफ़ा हमले हो रहे हैं। कोई उन्हें अंग्रेज़ों का एजेंट कहता है, तो कोई यौन विकृति का शिकार बताता है। आलोचना किसी की भी हो सकती है, लेकिन वह तथ्यों पर आधारित होनी चाहिए न कि झूठ एवं प्रोपेगेंडे पर।

एक बार आचार्य जेबी कृपलानी ने गांधी जी से कहा था, 'मैं इतिहास का प्राध्यापक हूं। मैंने पूरी दुनिया का इतिहास पढ़ा है। कहीं स्वतंत्रता बिना हथियार उठाए नहीं मिली है।' इस पर गांधी जी ने कहा था, 'तुम इतिहास पढ़ते हो, इतिहास पढ़ाते हो, लेकिन मैं इतिहास बनाने जा रहा हूं। और मैं जो इतिहास बनाऊंगा, कल तुम उसको पढ़ाओगे।'

गांधी के जीवन की एक घटना का उल्लेख यहां महत्वपूर्ण है, जिससे गांधी को समझने में मदद मिलेगी। इस घटना का ज़िक्र प्यारेलाल की डायरी में है। एक दिन मध्यरात्रि को उनकी नींद खुली तो उन्होंने देखा कि गांधी जी परेशान बैठे हुए हैं और उनका पूरा शरीर पसीने से तर-ब-तर है। वह घबरा गए कि गांधी जी को हार्टअटैक आया है। उन्होंने पूछा, आप इतने परेशान क्यों हैं? गांधी जी ने जवाब दिया, आज मैं प्रार्थना करना भूल गया। प्यारेलाल ने कहा, तो क्या हुआ? कल कर लीजिएगा। गांधी जी ने कहा, ऐसा कैसे हुआ? मैं खाना खाना नहीं भूला, कोई और काम नहीं भूला। फिर प्रार्थना करना कैसे भूल गया?

ये घटनाएं बताती हैं कि उनका विवेक कितना जाग्रत था। गांधी जी ने जीवन में कभी सत्ता अपने हाथ में नहीं ली। न पद लिया, न पैसे बनाए, न परिवार के लिए कुछ किया। वह सही मायने में एक युगपुरुष थे। ■■

180 क्रांतिकारियों की शहादत का गवाह

बसौद का विद्रोह



इतिहास का सच और सच का इतिहास

ख़ुर्शीद आलम
(संकलनकर्ता)

भारत को अंग्रेज़ों की ग़ुलामी से आज़ादी दिलाने के लिए प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की शुरुआत 10 मई 1857 ई. में मेरठ शहर से हुई थी। 1857 ई. की क्रांति की चिंगारी बसौद गांव में भी पहुंची, जो वर्तमान में जनपद बाग़पत में महाक्रांति ग्राम के नाम से मशहूर है। इस गांव को क्रांतिकारियों का मुख्यालय बनाया गया था और इस क्षेत्र के क्रांतिकारी नेता बाबा शाहमल थे।

बसौद गांव भौगोलिक दृष्टि से गुप्त स्थान था जहां बाबा शाहमल क्रांतिकारियों के साथ मिलकर अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ योजना बनाते थे इसी जामा मस्जिद से क्रांतिकारियों के लिए रसद सप्लाई की जाती थी। ग्रामवासी प्रत्येक वर्ष 17 जुलाई को शहादत दिवस के रूप में मनाते हैं, क्योंकि इसी दिन ब्रिटिश हुकूमत ने यहां पर क़हर बरपाया था। गांव के समीप लगभग 3 किलोमीटर पर डौला गांव भी है जहां के निवासी नवल सिंह अंग्रेज़ों की मुखबिरी करते थे, नवल सिंह की सूचना पर ही अंग्रेज़ों ने 17 जुलाई को बसौद पर हमला किया था, उनको बताया गया था कि बाबा शाहमल बसौद की जामा मस्जिद में ठहरे हुए हैं।

16 जुलाई 1857 को मेरठ छावनी से मेजर विलियम के नेतृत्व में प्रशिक्षित ब्रिटिश फ़ौज ने तोपों, घुड़सवारों, रायफलों के साथ बसौद पर आक्रमण करने के लिए कूच किया और रात में डौला गांव में हिंडन नदी के किनारे



गांव में हुए नरसंहार को देखकर लोग इसे मिनी जलियांवाला भी कहते हैं, यहां पर सालाना युवा चेतना मंच बसौद बागपत के तत्वावधान में 17 जुलाई को शहादत दिवस मनाया जाता है और देश के अमर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है तथा गांव के गौरवशाली इतिहास को आने वाली पीढ़ियों को बताया जाता है।

कैंप किया तथा 17 जुलाई को भोर में डौला से पूर्वी नहर के किनारे होते हुए बसौद पर हमला कर दिया। बसौद के ग्रामीणों ने औरतों और बच्चों को खेतों में छुपा दिया और अंग्रेज़ी सेना का डटकर सामना किया। बसौद के लोगों को जादूगर भी कहा जाता था और ये पटा (खेल) में भी माहिर थे, जिसका इन्हें अंग्रेज़ों से मुक़ाबला करने में फ़ायदा मिला। यह लोग लाठी, डंडों, बलकटी, दराती आदि लेकर ही अंग्रेज़ों से भिड़ गए थे।

इतिहासकार बताते हैं कि इस दिन लगभग 10 घंटे युद्ध चला जिसमें दो ग़ाज़ी भी अंग्रेज़ों से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। अंग्रेज़ों से लड़ते हुए इस जंग में लगभग 180 लोग शहीद हुए। गांव के ही निवासी व युवा चेतना मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष मास्टर सत्तार अहमद बताते हैं कि गांव के समीप तालाब है जिसका रंग भी ख़ून से लाल हो गया था, क्योंकि लड़ाई का स्थान ऊंचाई पर था, जो भी ख़ून बहा बहकर तालाब में जा गिरा, इस दिन तेज़ बारिश भी हुई थी। इस तालाब को आज ग्रामवासी ख़ूनी तालाब के नाम से पुकारते हैं। मास्टर सत्तार अहमद बताते हैं कि ग्राम वासियों ने अपने नेता बाबा शाहमल को सुरक्षित गांव से बाहर रात में ही निकाल दिया था और अंग्रेज़ों से लोहा लेने के लिए प्रत्येक आदमी बूढ़ा-जवान खड़े हो गए थे। कुछ क्रांतिकारी आसपास से भी बसौद में आए हुए थे, जिन्होंने अंग्रेज़ों से आमने-सामने की लड़ाई लड़ी। इस दिन बसौद में दो चरणों में युद्ध हुआ था जिसके पहले चरण में अंग्रेज़ों ने मार-काट करके रसद व अन्य सामानों को आग के हवाले कर दिया और गांव में जो भी दिखा उसे गोली से उड़ा दिया।

दूसरे चरण में शाम के समय अंग्रेज़ डॉ. कैनन के नेतृत्व में 10 घुड़सवारों के साथ कुछ सैनिकों को गांव में ही छोड़ गए थे, जिन पर ग्रामीणों ने फिर से हमला कर मौत के घाट उतार दिया था। उसके बाद फिर अंग्रेज़ी सेना वापस गांव लौटी और प्रत्येक घर में घुसकर गांव के बचे लोगों को मार गिराया। जाते-जाते ब्रिटिश सैनिकों ने 15 लोगों को ज़िंदा पकड़ लिया था और मस्जिद के समीप बरगद के वृक्ष पर उनको फांसी पर लटकाकर मार दिया और पूरे गांव को आग के हवाले कर दिया, गांव बाद में

शाहमल व उनके साथियों द्वारा बागपत में यमुना नदी पर बने नाव के पुल को तोड़ना

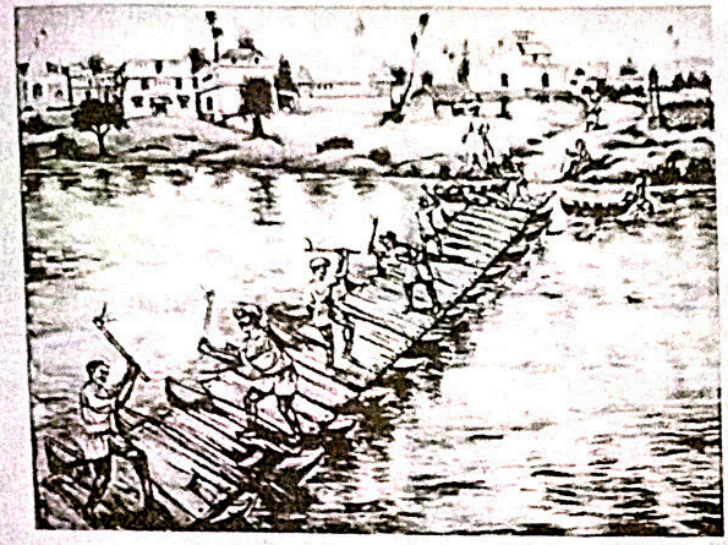

क्रान्ति ग्राम बसोद की जामा मस्ज़िद

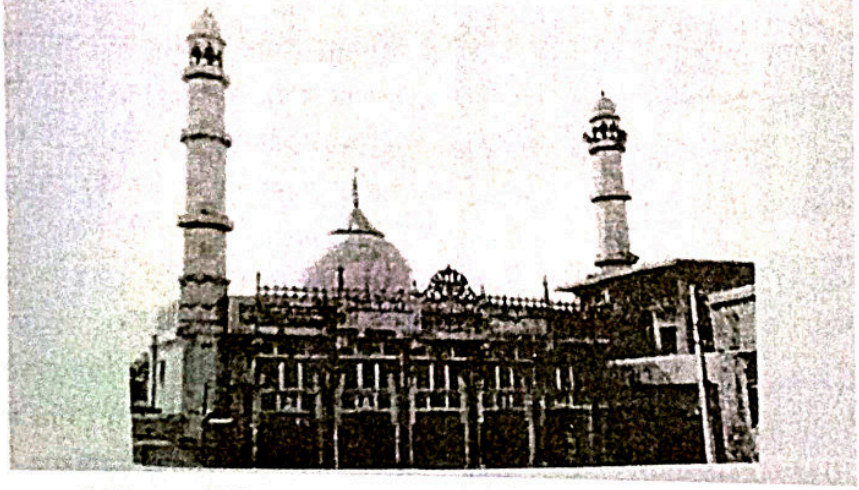

अंग्रेज़ों द्वारा गांव की ज़मीनें भी छीन ली गईं थीं, दुर्भाग्य की बात है कि आज भी इस गांव का कोई रकबा नहीं है। आज़ादी के वर्षों बाद भी गांव का विकास नहीं हो पाया है। यहां की ज़मीनें छिन जाने के बाद से यह गांव मज़दूर बन गया, यहां पर शासन प्रशासन की ओर से कोई विशेष सुविधा नहीं है यहां तक की सरकारी इंटर कॉलेज, बैंक भी गांव में नहीं है। शासन प्रशासन से मीडिया के माध्यम से कई बार मांग की जा चुकी है कि गांव का विकास ऐतिहासिक स्थल के रूप में होना चाहिए।

कुछ औरतों व बच्चों से आबाद हुआ।

भारत स्वतंत्रता संग्राम में आज़ादी के लिए लड़ने वाले मुस्लिम बाहुल्य गांव बसौद का योगदान एक अनोखा उदाहरण है। गांव में हुए नरसंहार को देखकर लोग इसे मिनी जलियांवाला भी कहते हैं, यहां पर सालाना युवा चेतना मंच बसौद बाग़पत के तत्वावधान में 17 जुलाई को शहादत दिवस मनाया जाता है और देश के अमर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है तथा गांव के गौरवशाली इतिहास को आने वाली पीढ़ियों को बताया जाता है। इस दिन मंच के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में बच्चों को प्रोत्साहित करके सम्मानित किया जाता है। आसपास व देश भर से काफ़ी संख्या में लोग यहां पर इस दिन एकत्रित होते हैं।

युवा चेतना मंच के महासचिव समीर अहमद बताते हैं कि वर्ष 2007 से पहले ग्रामवासियों के पास लिखित में कोई इतिहास नहीं था, वे केवल बुज़ुर्गों से सुनते थे कि बसौद गांव को अंग्रेज़ों ने बागी घोषित कर दिया था और गांव की ज़मीन भी छीन ली थी, जिससे गांव के ज़्यादातर लोग मज़दूरी का काम करते हैं।

28 दिसम्बर 2007 में शहज़ाद राय शोध संस्थान बड़ौत बाग़पत और कैंटोनमेंट हेरीटेज़ सोसाइटी मेरठ के तत्वावधान में वरिष्ठ इतिहासकार डॉ. अमित राय जैन, डॉ. अमित पाठक, डॉ. केडी शर्मा, डॉ. के.के. शर्मा आदि शहीद नमन यात्रा लेकर बसौद गांव पहुंचे और यहां के लोगों से मिलकर उन्होंने इतिहास का मिलान किया, जो लोग उनको बता रहे थे, वह लिखित में भी उनके पास था।

वर्ष 2018 में हिस्ट्री एंड कल्चर एसोसिएशन मेरठ ने गांव को महा क्रांति ग्राम का दर्जा दिया। अब गांव को

महाक्रांति ग्राम बसौद के नाम से जाना जाता है, लेकिन सरकारी दस्तावेज़ों में अभी दर्ज नहीं हो पाया इसकी मांग ग्रामीणों ने कई बार की है कि सरकारी दस्तावेज़ों में गांव को महाक्रांति ग्राम बसौद के नाम से दर्ज किया जाना चाहिए।

शहज़ाद राय शोध संस्थान बड़ौत के निदेशक व वरिष्ठ इतिहासकार डॉ. अमित राय जैन बताते हैं कि अंग्रेज़ अफ़सर जनरल हैबिट के आदेश पर सैनिकों को बसौद में क्रांतिकारियों पर हमला करने के लिए डौला भेजा गया था, जिन्होंने 17 जुलाई को क्रांतिकारियों के मुख्यालय जामा मस्जिद पर हमला किया था और अंग्रेज़ी फ़ौज ने इस दिन अपना क्रूरतम रवैया अपनाया था। डॉ. अमित राय जैन बताते हैं कि अंग्रेज़ कलेक्टर डनलप ने अपनी पुस्तक खाकी रिसाला में लिखा है कि बसौद गांव के सभी बूढ़े, जवान अंग्रेज़ों से मुक़ाबला करने के लिए खड़े हो गए थे। ज़बरदस्त संघर्ष हुआ, जिसमें यहां के सैकड़ों लोगों को मार डाला गया।

नैरेटिव इवेंट्स 1857-58 के दस्तावेज़ों में विवरण मिलता है कि बसौद की जामा मस्जिद को टोपों से उड़ा दिया गया था और वहां मौजूद हज़ारों मन अनाज व गोला-बारूद में आग लगा दी गई थी। वर्ष 1857 से 1947 तक बसौद गांव अंग्रेज़ों के शोषण का शिकार रहा। डॉ. जैन का कहना है कि बसौद गांव का विकास ऐतिहासिक स्थल के रूप में होना चाहिए।

महाक्रांति ग्राम बसौद के गौरवशाली इतिहास पर हिंदी, अंग्रेज़ी और उर्दू में भी किताबें लिखी जा चुकी हैं, बसौद के इतिहास पर पहली पुस्तक वरिष्ठ इतिहासकार व कैंटोनमेंट हेरिटेज सोसाइटी के सचिव डॉ. अमित पाठक ने लिखी, उन्होंने बसौद के इतिहास को प्रमाण के साथ अपनी पुस्तक "1857.. लिविंग हिस्ट्री" में लिखा है। पुस्तक के पेज नंबर 218 से 259 में बसौद के बहादुर लोगों की दास्तान दर्ज है।

डॉ. अमित पाठक, डॉ. अमित राय जैन, डॉ. के.के शर्मा के प्रयासों से मेरठ संग्रहालय में बसौद को एक विशेष पैनल दिया गया है, जिसमें बसौद की लड़ाई के इतिहास को देश के सामने लाया गया है। इसका उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी व माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने किया था।

वरिष्ठ इतिहासकार डॉक्टर के.के. शर्मा (प्रमुख इतिहास विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ) ने अपनी पुस्तक "1857 की क्रांति में बाग़पत जनपद के कृषकों की भूमिका" में भी बसौद के इतिहास और रणबांकुरों का उल्लेख किया है (पेज नंबर 135 से 140) उन्होंने नैरेटिव इवेंट्स 1857-58 के हवाले से बताया कि बसौद की लड़ाई बहुत ही बड़ी लड़ाई थी। यहां के साधारण किसानों ने एक विश्व प्रसिद्ध व सैनिक प्रशिक्षण प्राप्त सेना से मुक़ाबला किया था। वे लिखते हैं कि बसौद के लोग इस सेना से घबराए नहीं और न भागे बल्कि अपने आम कृषकों के हथियारों के साथ डटकर लड़े और अपनी शहादत दी। यह इस क्षेत्र की सबसे बड़ी शहादत थी। बसौद के इतिहास पर इतिहासकार ए.के. गांधी ने भी अपनी पुस्तक "1857

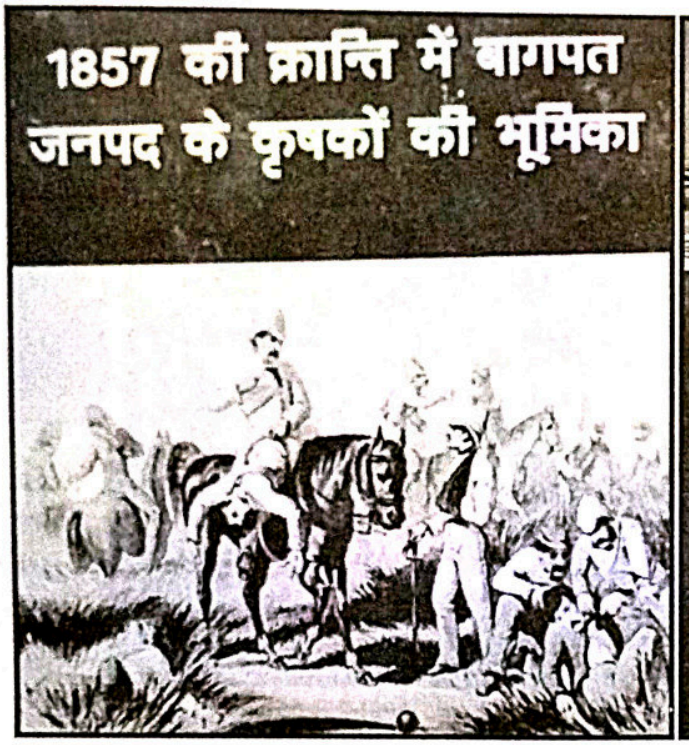

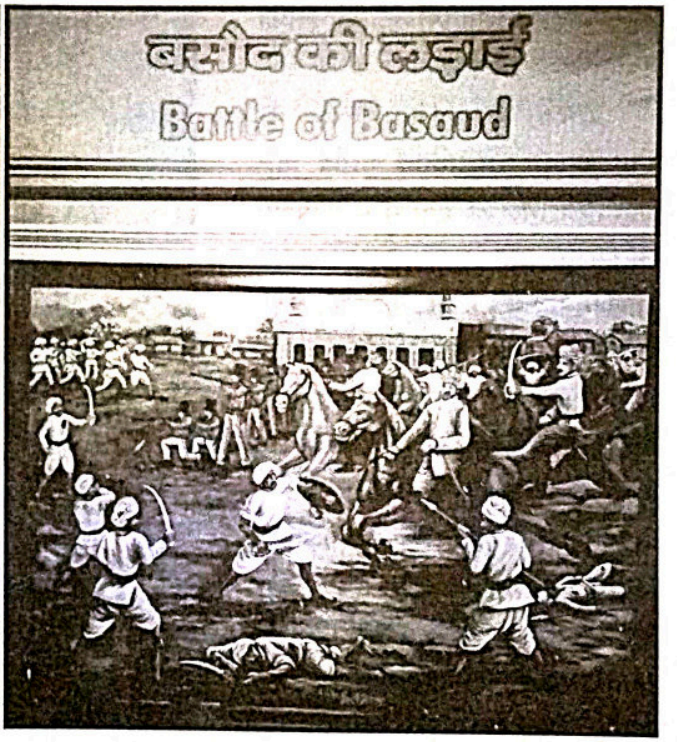

क्रांति व क्रांतिधरा" में बसौद के इतिहास का उल्लेख (पेज 82 से 84) में किया है। वे कहते हैं कि बसौद के निवासियों को शायद अंदाज़ा भी नहीं था कि 17 जुलाई को गांव में अंग्रेज़ी सेना इतना क़हर बरपाएगी।

इतिहासकार डॉक्टर शाहिद सिद्दीक़ी ने भी उर्दू में प्रकाशित अपनी किताब, "आज़ादी के सरखील" में बसौद की गाथा को लिखा है। वह कहते हैं कि बसौद गांव वर्ष 1857 की क्रांति में जांबाज़ी का गवाह है। यहां की जामा मस्जिद, बरगद का वृक्ष, तालाब शहादत की निशानियां हैं, जो इसकी गवाही आज भी दे रही हैं।

प्रत्येक वर्ष 17 जुलाई को युवा चेतना मंच-समिति बसौद और ग्रामवासी मिलकर एक भव्य कार्यक्रम आयोजित करते हैं, जिसमें अमर बलिदानियों को श्रद्धांजलि अर्पित कर गांव के गौरवशाली इतिहास को याद कर, आपसी भाईचारे और देशभक्ति की भावना को प्रोत्साहित किया जाता है। साथ ही इस अवसर पर मेधावी बच्चों, शिक्षकों, समाजसेवियों को सम्मानित भी किया जाता है।

दुर्भाग्य की बात है कि गांव की ज़मीनें भी छीन ली गईं थीं और आज भी इस गांव का कोई रक़बा नहीं है। आज़ादी के वर्षों बाद भी गांव का विकास नहीं हो पाया है। यहां की ज़मीनें छिन जाने के बाद से यह गांव मज़दूर बन गया, यहां पर शासन-प्रशासन की ओर से कोई विशेष सुविधा नहीं है यहां तक की सरकारी इंटर कॉलेज, बैंक भी गांव में नहीं है। शासन-प्रशासन से मीडिया के माध्यम से कई बार मांग की जा चुकी है कि गांव का विकास ऐतिहासिक स्थल के रूप में होना चाहिए। सरकार को गांव का विकास आदर्श ग्राम के रूप



में करना चाहिए, जिससे आने वाली पीढ़ियां देश-प्रेम की भावना से ओतप्रोत हो सकें। यदि प्रशासन इच्छाशक्ति दिखाए तो आने वाले समय में इसे एक ऐतिहासिक पर्यटन स्थल के रूप में भी विकसित किया जा सकता है।

साभार, युवा चेतना मंच/समिति बसौद बाग़पत, उत्तर प्रदेश।

मास्टर सत्तार अहमद, संस्थापक/अध्यक्ष युवा चेतना मंच/समिति बसौद बाग़पत, उप्र.

समीर अहमद, महासचिव-युवा चेतना मंच बसौद।

ख़ुर्शीद आलम, वरिष्ठ उपाध्यक्ष-युवा चेतना मंच बसौद।

बसौद के इतिहास को प्रकाश में लाने वाले वरिष्ठ इतिहासकार, डॉ. अमित राय जैन निदेशक-शहज़ाद राय शोध संस्थान बड़ौत बाग़पत।

डॉक्टर अमित पाठक, सचिव-कैंटोनमेंट हेरीटेज़ सोसाइटी मेरठ।

डॉ. के.के. शर्मा-प्रमुख इतिहास विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ। ■■

इबारत



संपादन प्रभाग

विश्व का पहला मानचित्र

पिरी रीस (Piri Reis) एक तुर्क नौसेना कमांडर, भूगोलवेत्ता और मानचित्रकार थे। इन्हें आज अपने मानचित्रों और रेखाचित्रों के लिए जाना जाता है जिसे उन्होंने अपनी पुस्तक 'किताब-ए-बहरी' (Kitab-e-Bahriye) में एकत्र किए थे। इस पुस्तक में शिपिंग के बारे में विस्तृत जानकारी है और यह प्रमुख बंदरगाहों और शहरों के सटीक नक़्शे पर आधारित है। पिरी रीस के बारे में दुनिया को तब पता चला जब दुनिया को नक़्शे का एक टुकड़ा मिला, जिसे पेरी रीस (1513 में बनाया गया) के नक़्शे के रूप में पाया गया, जिसे सन् 1929 में खोजा गया और इस्तांबुल के टॉपकापी पैलेस में रखा गया। यह नक़्शा दुनिया का सबसे पुराना वह नक़्शा है जो यूरोप के पश्चिमी तटों और उत्तरी अफ़्रीक़ा और ब्राजील के तट को उचित सटीकता के साथ दिखाता है। यह अमेरिका का सबसे पुराना नक़्शा है। पुस्तक में यात्राओं का जो वर्णन है उसके आधार पर अनुमान है कि इसमें पूरे विश्व का नक़्शा रहा होगा, लेकिन दुर्भाग्य से जब ये पुस्तक प्राप्त हुआ तब तक इसके कई पृष्ठ और नक़्शे का 2/3 हिस्सा ख़राब हो चुका था।

गज़ले स्किन चर्मपत्र पर बनाया गया यह नक़्शा सन् 1517 में ओटोमन सुल्तान सलीम प्रथम को प्रस्तुत किया गया था। सन् 1528 में पिरी रीस ने अपना दूसरा विश्व मानचित्र बनाया, जिसमें ग्रीनलैंड, उत्तरी अमेरिका, लैब्राडोर, न्यूफ़ाउंडलैंड, फ्लोरिडा, क्यूबा और मध्य अमेरिका के कुछ हिस्सा दिखाया गया है। उनके लेखन के अनुसार, उन्होंने अपने नक़्शे को बनाने के लिए कई (अरबी, स्पेनिश, पुर्तगाली, चीनी, भारतीय और ग्रीक) मानचित्रों का उपयोग किया, जिसमें क्रिस्टोफर कोलंबस का एक नक़्शा भी शामिल था।



आज आधुनिक समय में सेटेलाइट की मदद से कहीं का भी नक़्शा बनाना आसान हो गया है, लेकिन पूर्व-आधुनिक (आधुनिक युग से पहले की) युग में लोग नक़्शे को बनाने के लिए उस जगह पर जा के अपने क़दमों की मदद से उस जगह को नापते थे। इस नक़्शे में नॉर्थ अमेरिका, साउथ अमेरिका, ग्रीनलैंड, अंटार्कटिका और वेस्ट अफ़्रीक़ा को उनके छोटे-बड़े टापुओं के साथ दिखाया गया है, आख़िर कैसे इतनी बारीकी से 4 महाद्वीपों को अपने क़दमों से पिरी रीस ने नापा होगा। माना कई नक़्शों का भी प्रयोग किया है, लेकिन हर नक़्शा बहुत सारी त्रुटियों से भरा था, जबकि पिरी मैप आधुनिक नक़्शे के बहुत हद तक समान है। इसके अलावा पिरी मैप में अंटार्कटिका का भी कुछ हिस्सा दिखाया गया है, लेकिन सबसे हैरानी की बात यही है, क्योंकि यह नक़्शा बर्फ़ से मुक्त अंटार्कटिका महाद्वीप को दर्शाता है। जबकि यह कैसे संभव है कि औसतन 1.9 किलोमीटर मोटे बर्फ़ से ढके महाद्वीप का नक़्शा बनाया जा सके और जब इस नक़्शे को बनाया गया तब तक मनुष्यों द्वारा अंटार्कटिका की खोज ही नहीं हुई थी।

अंटार्कटिका तक पहुंचने वाले पहले खोजी अभियान का नेतृत्व ब्रिटिश खोजकर्ता जेम्स कुक ने किया था, जिन्होंने 1772 में केवल बर्फ़ ही देखने में कामयाब रहे। जबकि 250 साल पहले ही पिरी रीस ने अंटार्कटिका का नौवहन चार्ट पर खींच लिया था, जो इस महाद्वीप को बर्फ़ से मुक्त दिखा रहा था।

चर्मपत्र पर बनाया गया यह नक़्शा सन् 1517 में ओटोमन सुल्तान सलीम प्रथम को प्रस्तुत किया गया था। सन् 1528 में पिरी रीस ने अपना दूसरा विश्व मानचित्र बनाया, जिसमे ग्रीनलैंड, उत्तरी अमेरिका, लैब्राडोर, न्यूफ़ाउंडलैंड, फ्लोरिडा, क्यूबा और मध्य अमेरिका के कुछ हिस्सा दिखाया गया हैं। उनके लेखन के अनुसार, उन्होंने अपने नक़्शो को बनाने के लिए कई (अरबी, स्पेनिश, पुर्तगाली, चीनी, भारतीय और ग्रीक) मानचित्रों का उपयोग किया, जिसमें क्रिस्टोफर कोलंबस का एक नक़्शा भी शामिल था।



ओटोमन दस्तावेज़ों से पता चलता है कि उनका पूरा नाम हाजी अहमद मोहियुद्दीन पेरी था। वे हाजी मुहम्मद पेरी के पुत्र थे। उन्होंने 1481 से निजी शिपिंग में भाग लेना शुरू कर दिया, इस समय के दौरान उन्होंने अपने चाचा के साथ ओटोमन साम्राज्य के लिए कई नौसैनिक युद्ध लड़े, जिनमें स्पेन, जेनोआ गणराज्य, वेनिस गणराज्य और लेपैंटो की लड़ाई शामिल है।

सन् 1511 में अपने चाचा कमल रईस की मृत्यु के बाद (जहां उनका जहाज़ भूमध्य सागर में एक तूफ़ान में बर्बाद हो गया था और वह मिस्र के रास्ते में थे) वह ग्लिबोलो लौट आये और शिपिंग शिक्षा पर काम करना शुरू कर दिया।

सन् 1516 में वह एक तुर्क बेड़े के कप्तान के रूप में फिर से समुद्र में उतर गए। 1522 में, उन्होंने नाइट्स ऑफ़ सेंट जॉन के ख़िलाफ़ रोड आइलैंड की घेराबंदी में भाग लिया, जिसके कारण 25 दिसंबर 1522 को द्वीप पर ओटोमन का क़ब्ज़ा हो गया।

सन् 1547 में, पियरे को हिंद महासागर में ओटोमन नौसेना के कमांडर और मिस्र में नौसेना के कमांडर के रूप में अमीर (नौसेना के कमांडर) के पद पर पदोन्नत किया गया था। 26 फ़रवरी, 1548 को, उन्होंने अदन को पुर्तगाली क़ब्ज़े से मुक्त कराया। उन्होंने 1552 में पुर्तगालियों से मस्कट और कैश को भी वापस ले लिया, और फिर उन्होंने फ़ारस की खाड़ी के मुहाने पर होर्मुज के जलडमरूमध्य में होर्मुज द्वीप पर क़ब्ज़ा कर लिया। जब पुर्तगालियों ने अपना ध्यान फ़ारस की खाड़ी की ओर लगाया, तो इन्होंने क़तरी प्रायद्वीप और बहरीन द्वीप पर भी क़ब्ज़ा कर लिया, ताकि पुर्तगाली अरब तट पर उपयुक्त ठिकानों का पता न लगा सकें।

एक बूढ़े व्यक्ति के रूप में, पिरी रीस 90 वर्ष की आयु में मिस्र में बस गए। सन् 1553 में उसके सिर को काट दिया गया जब उन्होंने उत्तरी फ़ारस की खाड़ी में पुर्तगालियों के ख़िलाफ़ एक अन्य अभियान में बसरा के तुर्क वली (गवर्नर) का समर्थन करने से इन्कार कर दिया।

पियरे रीस पुस्तक 'किताब-ए-बहरी' (Kitab-e-Bahriye) के लेखक हैं, जो सबसे अच्छी पूर्व-आधुनिक (आधुनिक युग से पहले) नौ-परिवहन (शिपिंग) पुस्तकों में से एक है। उन्होंने एक व्यापक मानचित्र बनाने के लिए बीस से अधिक अरबी, स्पेनिश, पुर्तगाली, चीनी, भारतीय और प्राचीन ग्रीक मानचित्रों का उपयोग किया जो पूरी तरह से उनके समय का प्रतिनिधित्व करता है। ■■

तीन में से एक युवा हाई ब्लड प्रेशर की चपेट में



सेहत

संपादन प्रभाग

उच्च रक्तचाप यानी हाई ब्लड प्रेशर से हर तीन में से एक वयस्क प्रभावित है। यह कहना है विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) का। लेकिन ग़ौर करने वाली बात यह है कि इनमें से 90 फ़ीसद लोगों को यह पता नहीं है कि उन्हें उच्च रक्तचाप है। इसलिए जागरूकता फैलाने के लिए वर्ल्ड हाइपरटेंशन लीग (WHL) ने 2005 में हाइपरटेंशन पर एक वैश्विक जागरूकता अभियान शुरू किया था। तब से हर साल 17 मई वर्ल्ड हाइपरटेंशन डे के रूप में मनाया जाता है।

हाई ब्लड प्रेशर, वैश्विक स्तर पर बढ़ती गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं में से एक है, यह हृदय रोगों का कारण बन सकती है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं कि ब्लड प्रेशर बढ़ने को पहले उम्र बढ़ने के साथ होने वाली समस्या के तौर पर जाना जाता था, हालांकि अब कम उम्र के लोग भी इसके शिकार होते जा रहे हैं।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार, अस्वास्थ्यकर जीवनशैली के कारण ब्लड प्रेशर की समस्या के शिकार कम उम्र के लोग भी होते जा रहे हैं। नियमित रूप से शारीरिक व्यायाम की कमी, आहार में सोडियम की अधिकता, जंक-फास्ट फूड का अधिक सेवन आपमें उच्च रक्तचाप के जोखिम को बढ़ा सकती हैं। गर्भावस्था के दौरान भी हाई ब्लड प्रेशर का ख़तरा हो सकता है। अगर आप इस तरह की लाइफ़ स्टाइल वाले हैं तो सतर्क हो जाएं ये आपमें ब्लड प्रेशर के ख़तरे को बढ़ाने वाली हो सकती है।

हाई ब्लड प्रेशर, वैश्विक स्तर पर बढ़ती गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं में से एक है, यह हृदय रोगों का कारण बन सकती है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं ब्लड प्रेशर बढ़ने को पहले उम्र बढ़ने के साथ होने वाली समस्या के तौर पर जाना जाता था, हालांकि अब कम उम्र के लोग भी इसके शिकार होते जा रहे हैं।

हाइपरटेंशन क्या और क्यों होता है?

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के मुताबिक़ हाइपरटेंशन हृदय संबंधी बीमारियों और मृत्यु का प्रमुख कारण है। WHL का यह भी कहना है कि दुनिया भर में हाई ब्लड प्रेशर से ग्रस्त आधी आबादी हाइपरटेंशन के लक्षणों से अनजान है।

हाइपरटेंशन का मतलब है हमारे ब्लड प्रेशर का बढ़ जाना। यानी ब्लड वेसेल्स (रक्त वाहिकाओं) में ब्लड फ्लो का बहुत अधिक (140/90 mmHg या अधिक) होना। कभी-कभार ब्लड फ्लो बढ़ना सामान्य है, लेकिन अगर यह स्थिति लंबे समय तक बनी रहे और

इसका इलाज न किया जाए तो यह गंभीर हो सकता है। हाइपरटेंशन वाले लोगों को इसके लक्षण महसूस नहीं होते हैं। इसका पता लगाने का एकमात्र तरीक़ा है ब्लड प्रेशर की वक़्त-वक़्त पर जांच करवाना।

ब्लड प्रेशर को दो नंबरों के रूप में लिखा जाता है। पहला सिस्टोलिक नंबर होता है, जो हार्ट बीट के दौरान ब्लड वेसेल पर पड़े प्रेशर को बताता है। वहीं दूसरा होता है डायस्टोलिक नंबर, जो दिल की दो धड़कनों के बीच वाहिकाओं पर पड़े प्रेशर को बताता है। 120/80 mmHg नॉर्मल ब्लड प्रेशर रीडिंग है। अगर इससे ज़्यादा रीडिंग हो तो यह हाइपरटेंशन की शुरुआत है।

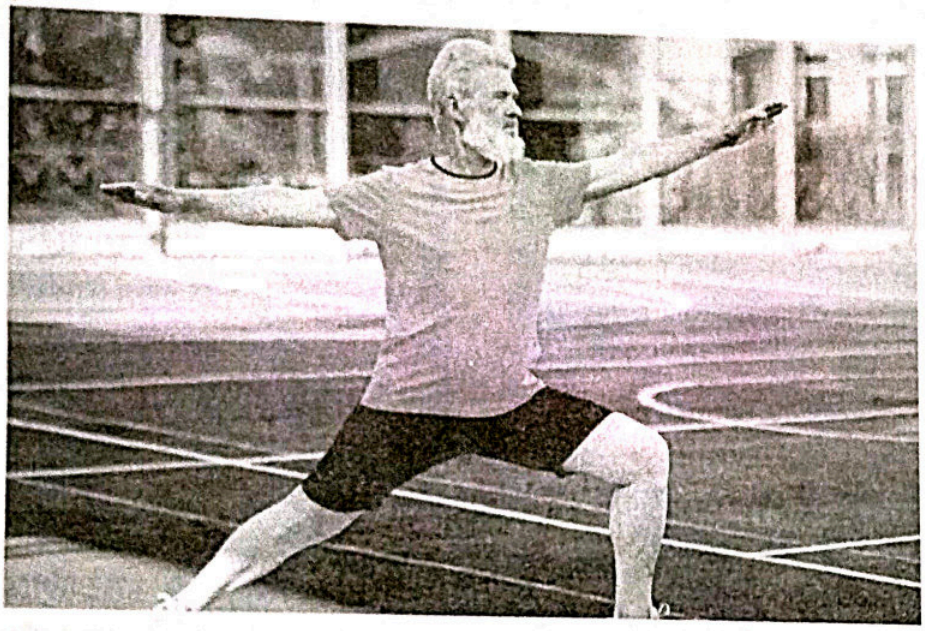

कैसे पता करें कि आपको हाइपरटेंशन है?

हाइपरटेंशन के कई लक्षण होते हैं, जो किसी अन्य बीमारी की तरह दिखाई नहीं देते हैं, क्योंकि आमतौर पर इसका कई वर्षों तक कोई लक्षण नहीं प्रकट होता। जब तक कि शरीर का कोई महत्वपूर्ण ऑर्गन डैमेज न हो जाए। इसलिए भी हाई ब्लड प्रेशर को 'साइलेंट किलर' कहा जाता है। इसके लक्षण छिपे रहते हैं, जिसे हम नज़रअंदाज़ करते हैं।

हाइपरटेंशन से बढ़ रही दिल की बीमारियां

कई लोगों के लिए, हाइपरटेंशन का मतलब ओवर स्ट्रेस, घबराहट होना होता है। मेडिकल की भाषा में, हाइपरटेंशन का मतलब ब्लड प्रेशर का लगातार बढ़ना होता है। कारण चाहे कुछ भी हो। जब हाई BP कंट्रोल नहीं होता तो यह स्ट्रोक, हार्ट फेल्योर, दिल के दौरे और कई गंभीर समस्याओं का जोखिम बढ़ा देता है।

बढ़ती उम्र वालों को हाइपरटेंशन की ज़्यादा शिकायत

उम्र बढ़ने के साथ और जेनेटिक कारणों से हाई ब्लड प्रेशर का ख़तरा बढ़ सकता है, लेकिन ज़्यादा नमक वाला आहार खाना, शारीरिक रूप से सक्रिय न होना और बहुत अधिक शराब पीने जैसे कारण भी हाइपरटेंशन के ख़तरे को बढ़ा सकते हैं।

हाई ब्लड प्रेशर का इलाज क्या है?

अगर आपको हाई ब्लड प्रेशर है तो उसके लिए आपको डॉक्टर द्वारा रिकमेंड की गई मेडिसिन ही लेनी चाहिए। हाई ब्लड प्रेशर चेक करने के साथ डॉक्टर यह भी देखेगा कि कहीं आपको कोई और हेल्थ से जुड़ी समस्याएं तो नहीं हैं। इसको देखते हुए ही आपको इसका ट्रीटमेंट दिया जाएगा।

इसके साथ आप हाइपरटेंशन से बचने के लिए अपनी लाइफ़ स्टाइल में कुछ बदलाव कर सकते हैं, जिससे आपका BP नॉर्मल बना रहेगा। अपनी लाइफ़ स्टाइल में कुछ बदलाव, जैसे स्वस्थ आहार लेना, तंबाकू-सिगरेट छोड़ना और ज़्यादा एक्टिव रहना आपके ब्लड प्रेशर को कम करने में मदद कर सकता है। कुछ लोगों को ऐसी दवाओं की आवश्यकता हो सकती है, जो हाई BP को प्रभावी ढंग से कंट्रोल कर सकें और इसे बढ़ने से रोक सकें।

ब्लड प्रेशर कंट्रोल करने के लिए ज़्यादा से ज़्यादा एक्टिव रहें, एक्सरसाइज करें या मेडिटेशन करें। इससे आपका बीपी कंट्रोल में रहेगा। साथ ही आप फिट महसूस करेंगे। अगर आप नियमित रूप से व्यायाम करते हैं तो यह आदत न सिर्फ़ आपको ब्लड प्रेशर के ख़तरे से बचाने के लिए मददगार हो सकती है साथ ही इससे हृदय रोग-डायबिटीज के जोखिम और इसकी जटिलताओं को कम किया जा सकता है। अध्ययनों में पाया गया है कि जो लोग सेडेंटरी लाइफ़ स्टाइल यानी की शारीरिक निष्क्रियता के शिकार हैं, उनमें इन बीमारियों के विकास का जोखिम अधिक होता है।

कैफ़ीन ब्लड प्रेशर बढ़ाता है और ऐसे में आपको चाय-कॉफी का सेवन कम कर देना चाहिए। स्मोकिंग और अत्यधिक शराब पीने से भी हाइपरटेंशन होता है। इसलिए इन हैबिट्स से आपको दूरी बना लेनी चाहिए। ऐसा करने से न केवल आप अपने ब्लड प्रेशर को कंट्रोल कर पाएंगे। साथ ही आप इससे जुड़ी बीमारियों से भी छुटकारा पाएंगे। ■■

सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनने के लिए डिग्री की ज़रूरत नहीं

करियर



संपादन प्रभाग

क्या आप सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग में करियर बनाने में रुचि रखते हैं, लेकिन आपके पास पढ़ाई के लिए समय या धन नहीं है? आपको अपनी आकांक्षाओं को छोड़ने का कोई कारण नहीं है। जानकारों का कहना है कि इस क्षेत्र में काम कर रहे सैकड़ों लोगों के पास पारंपरिक कॉलेज की डिग्री नहीं है।

सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग की डिग्री के बिना इस क्षेत्र में प्रवेश करना चुनौतीपूर्ण है, लेकिन यह किसी भी तरह से असंभव नहीं है। सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनने के लिए कंप्यूटर विज्ञान में डिग्री आवश्यक नहीं है, लेकिन बिना डिग्री के सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनने के लिए कड़ी मेहनत और समर्पण की आवश्यकता होती है। कंप्यूटर विज्ञान क्षेत्र उन लोगों के लिए विभिन्न प्रकार की नौकरी के अवसर प्रदान करता है जिनके पास सही कौशल है।

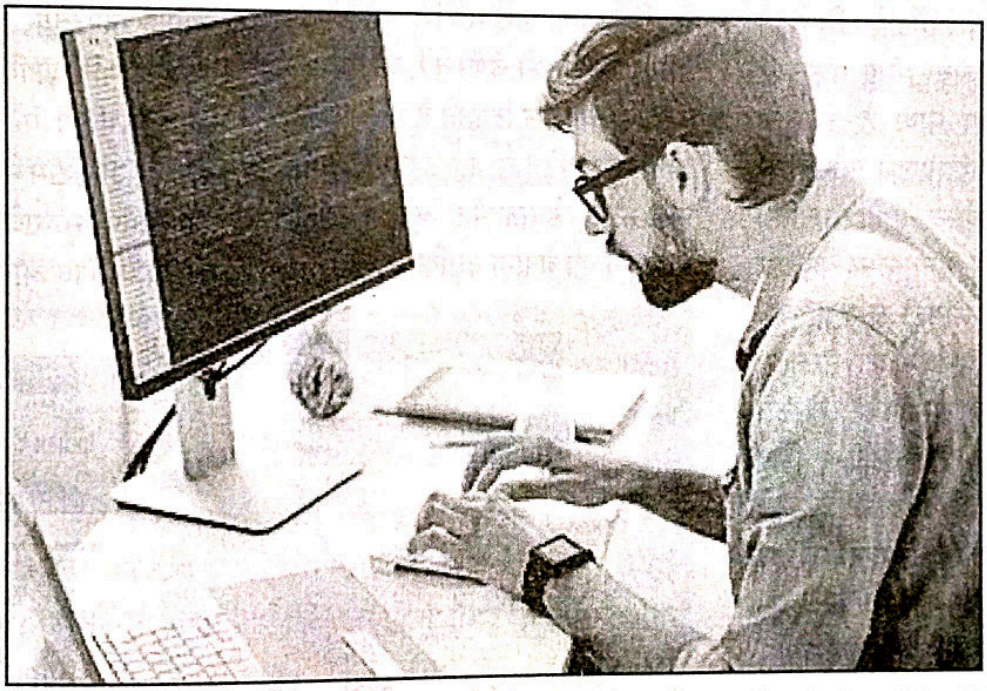

डिजिटलाइज़ेशन के दौर में सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग सेक्टर आजकल बहुत तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। विभिन्न मोबाइल एप्स, ऑनलाइन पोर्टल और वेबसाइट के लिए सॉफ्टवेयर इंजीनियरों की मांग बढ़ रही है जो प्रॉडक्ट और सर्विसेज के लिए उन्हें विकसित करते हैं। आजकल दुनियाभर में कंपनियां डिजिटल संसाधनों का उपयोग करके अपने बिजनेस को बढ़ाने के लिए डिजिटलाइज़ेशन पर ज़ोर दे रहीं हैं। इसलिए, सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग में बहुत स्कोप है। आप कोडिंग एक्सपर्ट बनकर लाखों रुपये महीना कमा सकते हैं।

जानकार बताते हैं कि एक ऐसा क्षेत्र है जो आधुनिक तकनीकी ज्ञान के साथ बेहतर वेतन के लिए भी लोकप्रिय है। सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग में अधिकतम वेतन प्रत्येक देश और कंपनी के अनुसार भिन्न होता है। जबकि शुरुआती दौर में सॉफ्टवेयर इंजीनियर का वेतन स्केल चार लाख रुपये से छह लाख रुपये सालाना तक रहता है।

एक अनुभवी सॉफ्टवेयर इंजीनियर का वेतन 20-30 लाख रुपये सालाना तक हो सकता है। कम समय में ज़्यादा तरक़्क़ी के लिए नवीनतम तकनीक और सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट टूल के साथ आधुनिक तकनीकी ज्ञान भी आवश्यक है। आईटी इंडस्ट्री में एक्सपीरियंस और ज़रूरी स्किल्स के साथ तरक़्क़ी जल्द हो सकती है।

इस क्षेत्र में प्रवेश करने वाले कुछ

व्यक्तियों के पास सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग की डिग्री है, वहीं कुछ बिना डिग्री के इस क्षेत्र में अच्छा करियर बना रहे हैं। एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर सॉफ्टवेयर एप्लिकेशन और सिस्टम को डिज़ाइन करने, विकसित करने, परीक्षण करने और अपडेट करने के लिए ज़िम्मेदार होता है। यदि आपके पास कोई डिग्री नहीं है, लेकिन आप इस क्षेत्र में प्रवेश करना चाहते हैं, तो कुछ सॉफ्टवेयर अनुप्रयोगों और प्रोग्रामिंग भाषाओं में महारत हासिल करके आप इसमें करियर बना सकते हैं।

प्रोग्रामिंग भाषा में दक्षता पाएं

सॉफ्टवेयर इंजीनियरों के लिए सामान्य प्रवेश स्तर की प्रोग्रामिंग भाषाएं शामिल हैं। आपके द्वारा चुनी गई भाषा आपके करियर लक्ष्यों के लिए प्रासंगिक होनी चाहिए। वैकल्पिक रूप से, गेम या ऐप डेवलपमेंट में रुचि रखने वाले उम्मीदवार जावा सीख सकते हैं, जो एक प्रोग्रामिंग भाषा है, जिसका उपयोग अक्सर एंटरप्राइज सॉफ्टवेयर अनुप्रयोगों में किया जाता है। प्रोग्रामिंग अवधारणाओं में एक ठोस आधार बनाने के लिए शुरुआती लोग पायथन सीख सकते हैं। पायथन की सरलता, पठनीयता और अनुप्रयोगों की विस्तृत श्रृंखला इसे शुरुआती लोगों के लिए एक लोकप्रिय विकल्प बनाती है, जो बिना किसी परेशानी के अपनी कोडिंग शुरू करना चाहते हैं।

डेटा संरचनाएं एवं एल्गोरिदम सीखें

एक बार जब आप एक या दो प्रोग्रामिंग भाषाओं में महारत हासिल कर लेते हैं, तो अगला क़दम डेटा संरचनाओं और एल्गोरिदम सीखना होता है। डेटा संरचनाएं डेटा को संग्रहीत करने, लाने और व्यवस्थित करने की दक्षता में सुधार करती हैं। एल्गोरिदम, जिन्हें आप संचालन और निर्देशों के सेट के रूप में सोच सकते हैं, वांछित आउटपुट प्राप्त करने के लिए डेटा संरचनाओं पर लागू होते हैं। एल्गोरिदम और डेटा संरचनाओं के बारे में सीखना महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस क्षेत्र में इसका प्रयोग होता है और तकनीकी कंपनियों के कोडिंग साक्षात्कारों में अक्सर इससे संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं।

कोडिंग सीखें और प्रोजेक्ट बनाना शुरू करें

यदि आपके पास कार्य अनुभव नहीं है, तो यह अनुभाग आपके बायोडाटा का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। केवल उन तकनीकों और भाषाओं को सूचीबद्ध न करें, जिन्हें आप जानते हैं, बल्कि यह भी दिखाएं कि आपने उनका उपयोग कैसे किया है।

अपने बायोडाटा में प्रत्येक प्रोजेक्ट के लिए एक हाइपरलिंक जोड़ें। उन परियोजनाओं का चयन करें, जो विभिन्न प्रकार के कौशल दिखाते हैं, जैसे मानक विभिन्न सॉफ्टवेयर का उपयोग करना, फुल-स्टैक डेवलपमेंट को समझना, मोबाइल ऐप बनाना आदि।

GitHub पर एक पोर्टफ़ोलियो बनाएं

यदि आपके पास पेशेवर अनुभव की कमी है, तो GitHub के बारे में जानें और ऑनलाइन पोर्टफ़ोलियो के साथ इसकी सुविधाओं का उपयोग करें। इस प्लेटफॉर्म की मदद से, आप अन्य डेवलपर्स के साथ काम करने, अपनी तकनीकी क्षमताओं को निखारने और अपने कौशल का प्रदर्शन करने के तरीक़े के रूप में ओपन सोर्स प्रोजेक्ट्स में योगदान कर सकते हैं।

सतत अध्ययन और सेल्फ़ अपग्रेडेशन हैं ज़रूरी

जावा डेवलपर नितिन गौर कहते हैं कि सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग के क्षेत्र में बने रहने के लिए लेटेस्ट वर्जन और टेक्नोलॉजी का अध्ययन करते रहें। इसके अलावा, विनम्रता और टीम वर्क के लीडरशिप स्किल्स भी आवश्यक हैं, क्योंकि सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट में एक से अधिक व्यक्ति शामिल होते हैं। क्लाइंट्स की समस्याओं को जल्दी समझें, उन्हें हल करें और टीम में सहयोग करें, ये सब कुशलताएं सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग में करियर के लिए आवश्यक होती हैं। ■■

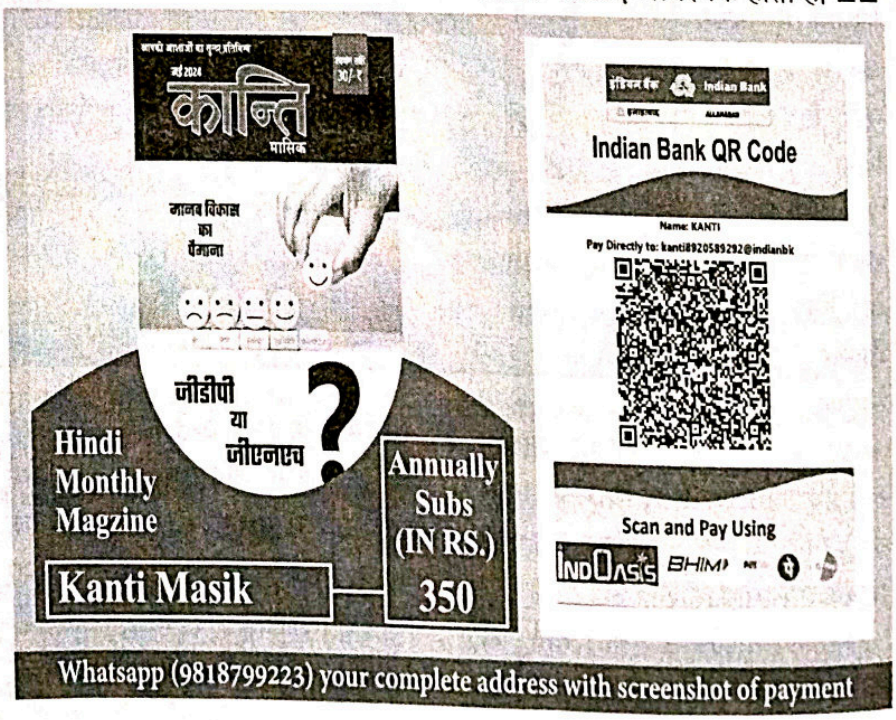

मैं हाज़िर हूं...

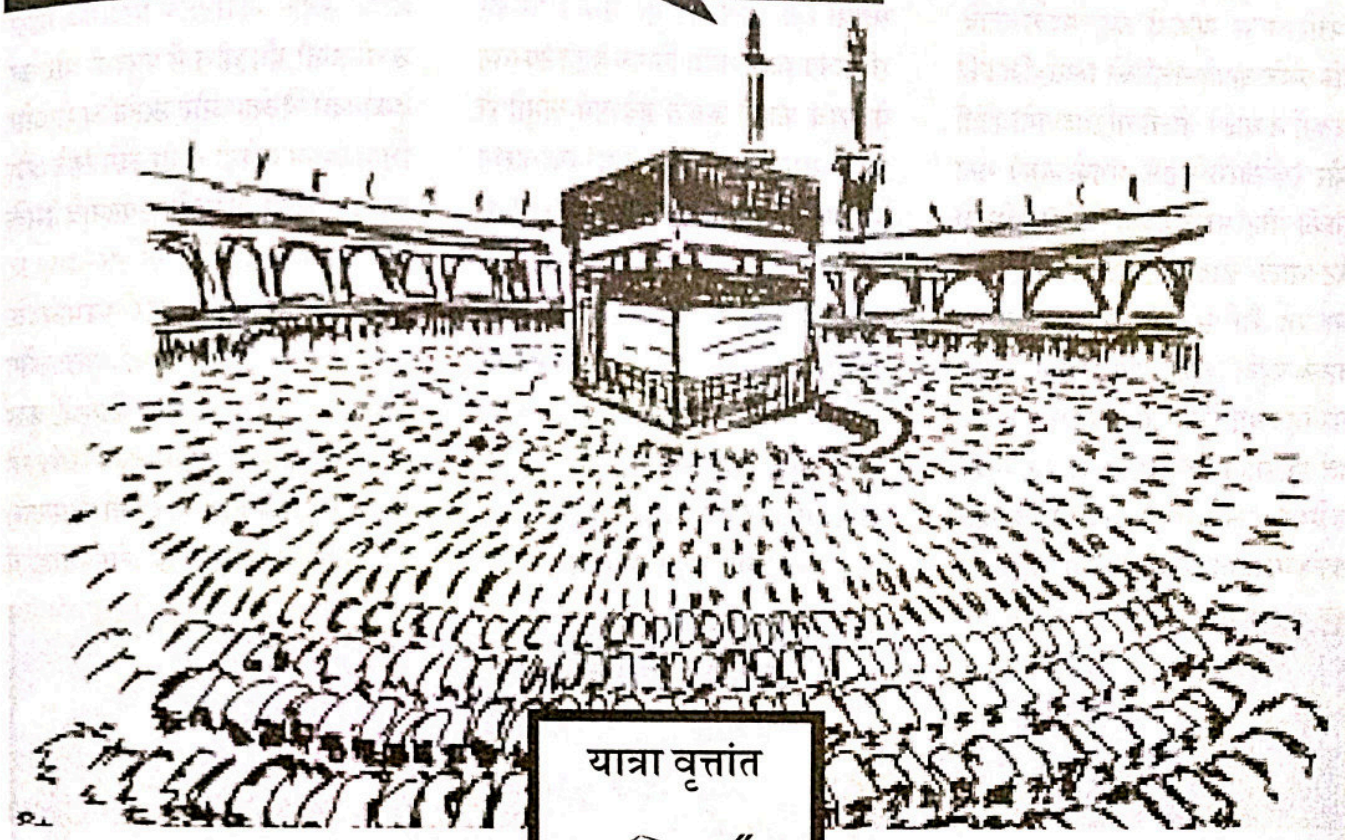

यात्रा वृत्तांत



लियोपोल्ड

ठंडी और नम हवा समुद्र को छूती हुई चल रही थी। जहाज़ में हाजियों के अलावा और कोई मुसाफ़िर न था। यह जहाज़ (सन् 1927 में) मुझे मिस्र से अरब प्रायद्वीप लिये जा रहा था और लाल सागर को पार कर रहा था। हाजियों की तादाद ही इतनी अधिक थी कि जहाज़ में बड़ी तंगी पैदा हो गई थी, इसलिये कि जहाज़ की कम्पनियां ज़्यादा कमाने की लालच में और हज के मौसम से पूरा फ़ायदा उठाने के लिये इसमें जितने आदमी ठूंसे जा सकते थे, ठूंस देती थीं, उनके सुख-सुविधा का विचार किये बिना—कमरों में, सीढ़ियों और रास्तों पर और दूसरे-तीसरे दर्जे के बावर्चीख़ानों में हर जगह उनको भर दिया गया था।

हाजी लोग अधिकतर मिस्र और उत्तरी अफ़्रीक़ा के थे जो खुले मन से ये कष्ट सहन कर रहे थे। हज सिर्फ़ उनका मक़सद था, उन्हें इस तंगी की कोई शिकायत न थी। जिसे मौक़ा मिलता वह देख लेता कि वे लकड़ी के फ़र्श पर किस तरह पालती मारे हुये बैठे हैं, मर्द, औरत, बच्चे सभी गिरोह बनाये हुए और कैसी कठिनाई और तकलीफ़ के साथ अपना खाना ख़ुद पकाते थे (इसलिए कि कम्पनी ने उनके खाने का प्रबन्ध नहीं किया था) और किस तरह पानी के पीपे लाने के लिये वे दौड़ते भागते रहते थे।

अगर किसी को यह देखने का मौक़ा मिलता तो वह इस ईमानी शक्ति का अन्दाज़ा किये बिना न रहता जिससे इन हाजियों के दिल छलक रहे थे। यह पता ही नहीं चलता था कि उनको इन कष्टों और कठिनाइयों का कुछ एहसास भी है, इसलिए कि वे मक्का के विचार में इतने डूबे हुये थे कि हज के अलावा उनके पास बातें करने का और कोई विषय ही न था। और सच तो यह है कि जिस दशा और भावना के साथ वे अपने भविष्य की ओर देख रहे थे, उसने चेहरों को चमका दिया था।

समय बीतने के साथ धीरे-धीरे रेतीला मैदान तंग होना शुरू हुआ और टीले एक दूसरे से क़रीब आते गये। हम एक तंग रास्ते से गुज़र रहे थे। सुबह की धुंध में मक्के के पहले मकान दीख पड़ रहे थे। सूर्य निकलते समय हम मक्के में दाख़िल हो चुके थे। अभी सुबह हुए कुछ ज़्यादा देर नहीं हुई थी, पर गर्मी बराबर बढ़ती जा रही थी। बहुत से घरों के सामने बेंचें पड़ी थीं, जिन पर थके-हारे लोग सो रहे थे। हमारा क़ाफ़िला बीच में चल रहा था। और कच्ची सड़कें धीरे-धीरे तंग होती जा रही थीं। चूंकि हज में अभी बहुत कम दिन बाक़ी रह गये थे, इसलिए सड़कों पर भीड़ बहुत ज़्यादा थी। अनगिनत हाजी इहराम बांधे दीख पड़ रहे थे, कुछ लोगों ने सामूहिक रूप

से अपने राष्ट्रीय पहनावे पहन लिए थे। पनभरे कमर झुकाए हुए, मश्कें लादे, गधे वाले अपने गधों को लिए, जिनकी गरदनों में बजने वाली घंटियां लगी होतीं और रंग-बिरंगे तड़क-भड़क वाले वस्त्र उनकी पीठ पर पड़े हुए, दूसरी ओर से ऊँट वाले, होदज ख़ाली करके वापस आ रहे थे। सड़कों पर एक विचित्र चहल-पहल और शोर-हंगामा नज़र आ रहा था। ऐसा जान पड़ता था, जैसे हज हर साल नहीं आता, बल्कि संयोग से ऐसी हालत में आ गया है कि लोग उसके स्वागत के लिए तैयार भी न हो सके थे। हमारा क़ाफ़िला सिर्फ़ क़ाफ़िला नहीं था, बल्कि ऊँट, हौदज, सामान, हाजी, ऊँट वाले और एक हलचल का योग था।

मैंने एक प्रसिद्ध तवाफ़ (परिक्रमा) कराने वाले (मुतव्विफ़) हसन आबिद के घर में ठहरने का फ़ैसला कर लिया था, लेकिन भारी भीड़ में उनके मिल जाने की कुछ अधिक आशा मुझे नहीं थी कि यकायकी एक ओर से आवाज़ आई हसन आबिद के हाजी किस ओर हैं? सहसा एक नौजवान मेरे सामने आकर सीधा खड़ा हो गया। फिर बड़े ही सम्मान के साथ काफ़ी झुकते हुये हम लोगों से अपने साथ चलने को कहा। यह हसन आबिद का दूत था, जो हमको लेने के लिए आया था।

मुतव्विफ़ के मकान पर एक शानदार नाश्ते के बाद मैं मस्जिदे-हराम के इरादे से बाहर निकला। उस समय भी मेरा रहनुमा वही नौजवान था जिसने इससे पहले हम लोगों का स्वागत किया था। हमने चाल और शोर वाली सड़कों पर चलना शुरू किया। रास्ते में कुछ तरकारी बेचने वाले दीख पड़े जो चटाइयों पर तरकारियां लगाये बैठे थे। मक्खियों की अधिकता, तरकारी की गन्ध, धूल और पसीने का सबको सामना करना पड़ रहा था। फिर एक छतदार तंग बाज़ार आया, यह वहाँ का बज़्ज़ाज़ा था। हर रंग और हर प्रकार के कपड़े यहां मिल सकते थे। यहां पश्चिमी एशिया और उत्तरी अफ़्रीक़ा की दुकानों की तरह एक छोटी-सी कोठरी की दुकान थी जो सड़क की सतह से सिर्फ़ एक मीटर ऊंची होती थी। बीच में पालथी मार कर दुकानदार बैठता और उसके चारों ओर भिन्न-भिन्न कपड़ों के ढेर लगे रहते और इस्लामी जगत के विभिन्न पहनावे उसके सिर पर लटकते होते।

यहां हर टाइप और स्वभाव के आदमी दीख पड़ रहे थे। कुछ लोग अमामा बांधे थे, कुछ नंगे सिर थे, कुछ लोग सिर झुकाये चुपके-चुपके चल रहे थे, कभी उनके हाथ में तसबीह (माला) भी होती थी और कुछ लोग भीड़ में बहुत तेज़ी से चल रहे थे। सांवले और भरे शरीश वाले सोमाली, जिनका देह उनके कपड़ों के भीतर से तांबे की तरह चमकता था, ऊंचे क़द, तंग चेहरे और तीखे तेवरों वाले नज्द के अरब, भरे हुए देह और मोटे हाथ-पैर वाले बुख़ारा तुर्किस्तानी, जो इस तेज़ गर्मी में भी अपने कई रंगों वाले जुब्बे, पगड़ी और इबाएं पहने हुए थे, जो उनके घुटनों तक थीं, बादाम जैसी आंखों वाली जावा की



लड़कियां, मराक़शी जो बहुत गंभीरता और सम्मान के साथ अपने सफ़ेद कपड़ों में घूम-फिर रहे थे, मक्का के लोग अपने सफ़ेद पहनावे में थे, सिरों पर छोटी-छोटी गोल टोपियां रखे हुए मिस्री किसान, जिनके चेहरों पर हर्ष व प्रसन्नता के चिन्ह थे, भारतवासी अपने उजले कपड़ों में, जिनके बर्फ़ की तरह की पगड़ियों से उनकी काली आंखें झांकती थीं, भारतीय औरतें जो अपने सफ़ेद कपड़ों में इस तरह सिमटी-सिमटाई रहती थीं कि निगाह को उनके हरम (भीतर) में दाख़िल होने का कैसे भी मौक़ा न मिल सके, ऐसा जान पड़ता था मानो वे चलते-फिरते तम्बू हों।

टम्बक्टो और दाहोमी के काले लोग जो अपना नीला पहनावा पहने और लाल टोपियां लगाये थे, चीनी लड़कियां दुबली-पतली कोमल, सुन्दर तितलियों की तरह जो हिरन के पैरों की तरह अपने छोटे-छोटे पैरों पर बहुत अन्दाज़ के साथ चल रही थीं, सार यह है कि हर ओर एक विचित्र हलचल और अजीब शोर था। ऐसा महसूस होता था मानो कोई व्यक्ति हज़ारों मौजों के बीच घिर गया है, जिसकी कुछ रेखाएं तो वह खींच सकता है, लेकिन सबका एक साथ चित्र नहीं बना सकता, हर चीज़ अनगिनत जीभों और तेज़ चलत-फिरत के बीच में तैर रही थी कि यकायकी हमने अपने-आपको हरम के एक दरवाज़े पर पाया।

वह एक त्रिभुजाकार मेहराबों वाला दरवाज़ा था जो पत्थर की सीढ़ी के बाद मिलता था। ड्योढ़ी पर एक भारतीय भिख़ारी अर्द्धनग्न दशा में अपना कमज़ोर व दुबला हाथ फैलाये बैठा था। मैंने पहली बार हरम के भीतर चौकोर दालान देखा था, जो सड़क की सतह के नीचे और ड्योढ़ी से काफ़ी क़रीब था और इस ढंग से एक "बड़ा कटोरा" मालूम होता था। एक बड़ा वर्गाकार मैदान जिसके चारों ओर शामियाने थे, और बहुत से खम्भे थे, इसके बीच में एक घनाकार था, जिसकी लम्बाई लगभग 40 इंच होगी। यह एक काले कपड़े से लपेट दिया गया था, जिस पर एक चौड़ी बेल थी और इस पर सुनहरे अक्षरों से क़ुरआन की आयतें लिखी हुई थीं, यह बेल वस्त्र के ऊपरी हिस्से पर थीं। तो यह वह काबा था जो शताब्दियों से आज तक लाखों-करोड़ों मनुष्यों के प्रेम का केन्द्र है, न जाने कितने हाजियों ने हज के इस केंद्र तक पहुँचने के लिए बड़ी-बड़ी क़ुर्बानियां दीं, बहुत से रास्ते ही में ख़त्म हो गये और बहुत से मेहनत के बाद पहुंच गये। सबकी निगाहों में यह छोटी-सी वर्गाकार इमारत बसी हुई थी, उनकी कामनाओं का केंद्र और सुन्दर सपनों का संसार।

मैंने अपना तवाफ़ जारी रखा और इसी दशा में कई मिनट बीत गये। मैंने महसूस किया कि जो भी मैल-कुचैल मेरे मन में था, वह सब ख़त्म हो रहा है। मैं भी उस गोल भीड़ का एक अंग बन गया था। आह! क्या यही हमारी गतिविधियों का अर्थ था कि मनुष्य को यह महसूस हो कि वह धुरा की हरकत का अंग है? क्या यही तमाम अशान्ति और अव्यवस्था का अंत था? मिनट मिटते गये, ख़ुद समय चुप हो गया और यह जगह संसार की धुरा बन गई।

यहां काबा हमारे सामने मौजूद था, पूरी तरह काले रेशमी कपड़े में लिपटा हुआ, मस्जिद के फैले हुए विशाल वर्गाकार मैदान में एक शान्त द्वीप, संसार की हर रचनात्मक यादगार और ऐतिहासिक इमारत से अधिक सादा। ऐसा जान पड़ता था कि इसके पहले बनाने वालों ने—काबे का निर्माण और मरम्मत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बाद से बराबर होती आई है—इसको अल्लाह के सामने मनुष्य की दुर्बलता और विवशता का एक रहस्य बनाना चाहा है। काबा के बनाने वालों को मालूम था कि सुन्दर-सुन्दर निर्माण-कला अल्लाह के विचार को स्पष्ट नहीं कर सकती, इसलिए उसने एक तीन भुजाओं की शक्ल बनाई जिसे बुद्धि पत्थर का एक त्रिभुजाकार टुकड़ा सोच सकती है।

मुझे इससे पहले विभिन्न इस्लामी देशों में शानदार मस्जिदों को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, जिसमें निर्माताओं और इंजीनियरों ने अपनी कला का उत्कर्ष दिखाया था, मैंने उत्तरी अफ़्रीक़ा की मस्जिद और पूजा-घर देखे जो संगमरमर से बनाये गये थे। बैतुल-मक़्दिस का "क़ुब्बतुस्सख़रा" भी देखा जो एक कलात्मक इमारत के ऊपर बनाया गया था, भारी और हल्केपन का ऐसा सपना जो किसी प्रतिकूलता के बिना पूरा हो गया। इस्तम्बूल की शानदार इमारतें, सुलैमानिया, मस्जिद बायज़ीद और अनातूलिया की मस्जिदें, बोरसा और ईरान की सफ़वी मस्जिदें, जो क़ीमती और सुन्दर पत्थरों और रंगीन पच्चीकारी और चाँदी के काम वाले दरवाज़ों पर सम्मिलित हैं; समरक़न्द में मैंने तैमूर लंग की शानदार मस्जिद के चिन्ह देखे, जो इस टूटी-फूटी हालत में

भी बहुत शानदार लग रही थी।

यह सब मैं देख चुका था, पर मेरी चेतना और मेरी भावना इतनी शक्तिशाली और इतनी जगी हुई कभी न हुई थी, जितनी काबे को अपने सामने देखकर, इसलिए कि इसके बनाने वाले का हाथ धार्मिक अर्थों से अधिक निकट था। त्रिभुजाकार की पूरी सादगी और रूपों व रेखाओं से साज-सज्जा का इन्कार इस विचार को प्रकट कर रहा था कि "मनुष्य सौन्दर्य की रचना जो भी अपने हाथ से बनाता है, उसको यह समझना कि यह अल्लाह के योग्य है, एक धोखा है, इसलिए यद्यपि मनुष्य इसको सादा न मानना चाहे, फिर भी अपने पैदा करने वाले की बड़ाई बखानने के लिए वह अधिक से अधिक यही कर सकता है।"

कुछ ऐसा ही विचार मिस्र के फ़ौजियों को देखकर होता है। यद्यपि इसकी लम्बाई-चौड़ाई की वजह से धोखाधड़ी को मनुष्य के भीतर दाख़िल होने का रास्ता मिल जाता है, पर यहां काबे में उसकी मोटाई तक विनम्रता का दृश्य प्रस्तुत करती है। इस छोटी-सी इमारत में इस प्रसन्नतापूर्ण विनम्रता का उदाहरण संसार में मिलना कठिन है।

मुसल्ला (नमाज़ पढ़ने की जगह) इब्राहीम के सामने मैं कुछ देर के लिए रुक गया और उसकी महानता बिना किसी सोच-विचार के देखता रहा। मेरे मन की गहराइयों से हर्ष व शान्ति का एक सोता उबलने लगा, जैसे वह कोई शान्त गीत हो।

संगमरमर के टुकड़ों पर, जिस पर सूर्य की किरणें नाच रही थीं और जो काबे के चारों ओर एक वृत्ति में फैले हुये थे, बहुत से मर्द और औरतें इस काले पहनावे वाले अल्लाह के घर की परिक्रमा कर रहे थे, इनमें बहुत से ऐसे थे जो रो रहे थे, कुछ ऊंची आवाज़ से गिड़गिड़ा कर दुआएं मांग रहे थे, कुछ ऐसे थे जो न बोलते थे, न रो रहे थे, बल्कि केवल सिर झुकाये तवाफ़ में लगे हुए थे।

हज का एक अंग यह भी है कि काबे का सात बार तवाफ़ (परिक्रमा) किया जाए, केवल इस्लाम के पवित्र केन्द्र के नाते नहीं, बल्कि मन को इस्लामी जीवन का मूल ध्येय याद दिलाने के लिए कि काबा अल्लाह के 'एक होने' का केन्द्र है, इसके चारों ओर हाजी की

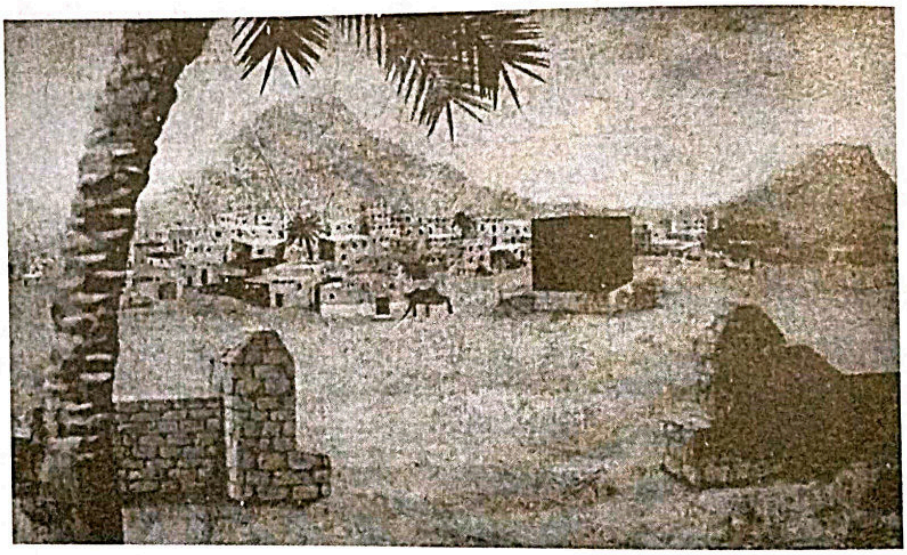

शारीरिक गतिविधियां वास्तव में मनुष्य की प्रसन्नता का व्यक्त रूप हैं जिसका मतलब यह है कि हमारे विचार और भावनाएं और जो चीज़ें भी "आन्तरिक जीवन" से संबंध रखती हैं, केवल उन्हीं की धुरा अल्लाह को नहीं होना चाहिए, बल्कि हमारे बाह्य जीवन, हमारे कर्म, हमारी कोशिश और दौड़-धूप की धुरा भी अल्लाह ही का होना चाहिए।

मैं आगे बढ़ा और काबे के चारों ओर उस गोल बाढ़ का एक अंग बन गया। कभी-कभी मुझे अपने क़रीब किसी मर्द या औरत का एहसास होता, भिन्न-भिन्न रूप मेरी निगाहों के सामने आते और फिर छट जाते। एक मोटा-ताज़ा हब्शी इहराम बांधे हुए आया, उसकी कलाई से लकड़ी की इतनी मोटी तसबीह (माला) लटक रही थी मानो ज़ंजीर हो। फिर मेरे सामने एक बूढ़ा जावी गुज़रा जिसकी बाहें इतनी लचकदार और ढीली थीं मानो उसमें कोई जान बाक़ी न रही हो। 'काले पत्थर'—के सामने गोल भीड़ में मुझे एक नवजवान भारतीय औरत दीख पड़ी, उस पर कमज़ोरी के चिन्ह थे और इसके छोटे चेहरे से एक विचित्र कामना और अनोखी भावना इतनी साफ़ दीख पड़ रही थी, जैसे साफ़-सुथरे पानी के तलाब में मछलियां दीख पड़ती हैं। इसकी दोनों हथेलियां ऊपर की ओर उठी हुई काबे की तरफ़ फैली थीं। उसकी उंगलियां कांप रही थीं, जैसे वे भी दुआ में शरीक हों। मैंने अपना तवाफ़ जारी रखा और इसी दशा में कई मिनट बीत गये। मैंने महसूस किया कि जो भी मैल-कुचैल मेरे मन में था, वह सब ख़त्म हो रहा है। मैं भी उस गोल भीड़ का एक अंग बन गया था। आह! क्या यही हमारी गतिविधियों का अर्थ था कि मनुष्य को यह महसूस हो कि वह धुरा की हरकत का अंग है? क्या यही तमाम अशान्ति और अव्यवस्था का अंत था? मिनट मिटते गये, ख़ुद समय चुप हो गया और यह जगह संसार की धुरा बन गई। ■■

धर्म का उद्देश्य



आख़िरी पन्ना

ज़ियाउल-हसन उस्मानी

धर्म के तीन उद्देश्य होते हैं—प्रथम उद्देश्य यह है कि मनुष्यों को पाश्विकता और उद्दंडता के गर्त से निकल कर मनुष्य बनाना। फिर उनको पवित्र सदाचार सिखाकर सर्वगुण सम्पन्न मानव बनाना और तीसरे वह कि उनके अन्तर में उच्च भाव उत्पन्न करके उनको सदात्मा बनाकर अपने रब से मिलन के योग्य बनाना। मुस्लिम विद्वानों ने भी इस्लाम के यही तीन उद्देश्य बताए हैं। इन तीनों उद्देश्यों के सम्बन्ध में पवित्र क़ुरआन में जो कुछ बताया गया है, वह निम्नलिखित है–

पहला उद्देश्य : सभ्य मानव बनाना

(1) "ऐ ईमानवालो! तुम अपने घरों के अतिरिक्त दूसरे घरों में उस समय तक प्रवेश न करो, जब तक अनुमति न ले लो और उनमें रहने वालों को सलाम न कर लो। यही तुम्हारे लिए उचित है। कदाचित तुम ध्यान रखो। फिर यदि वहां किसी को न पाओ तो प्रवेश न करो जब तक कि तुमको अनुमति न मिले और यदि तुम से कह दिया जाए कि लौट जाओ तो तुम लौट आया करो।"

(क़ुरआन, 24:27-28)

(2) "ऐ नबी! ईमान वाले पुरुषों से कहो कि अपनी निगाहें बचाकर रखें और अपने गुप्तांगों (शर्मगाहों) की रक्षा करें। यह उनके लिए अधिक शुद्धता की बात है। निस्सन्देह, ईश्वर उसकी ख़बर रखता है जो कुछ वे करते हैं।"

(क़ुरआन, 24:30)

(3) "और लोगों से मुंह फेरकर बात न करो और न धरती में अकड़ कर चलो। निस्सन्देह, किसी अहंकारी और अपने मुंह अपनी प्रशंसा करने वाले को अल्लाह पसन्द नहीं करता। अपनी चाल में संतुलन बनाए रखो और अपनी आवाज़ को पस्त रखो। निश्चय ही सब आवाज़ों में सबसे बुरी आवाज़ गधों की होती है।" (क़ुरआन, 31:19)

(4) "निन्दनीय तो वे हैं, जो दूसरों पर ज़ुल्म करते हैं और धरती में नाहक़ उपद्रव मचाते हैं। ऐसे ही लोगों के लिए दुःखदायिनी यातना है।"

(क़ुरआन, 42:42)

दूसरा उद्देश्य : मानव को सही अर्थों में मानव बनाना

(1) "ऐ ईमान वालो! तुम शैतान का अनुसरण न करो और जो व्यक्ति शैतान का अनुसरण करेगा तो वह उसे अश्लीलता और बुराई का ही आदेश देगा।" (क़ुरआन 24:21)

(2) "और हमने हर मनुष्य का शकुन-अपशकुन उसकी अपनी गर्दन से बांध दिया है और क़ियामत के दिन हम उसका कर्म-पत्र निकालकर उसके सामने रख देंगे, जिसको वह खुला हुआ देख लेगा। पढ़ ले अपना कर्म-पत्र, आज तू स्वयं ही अपना हिसाब करने के

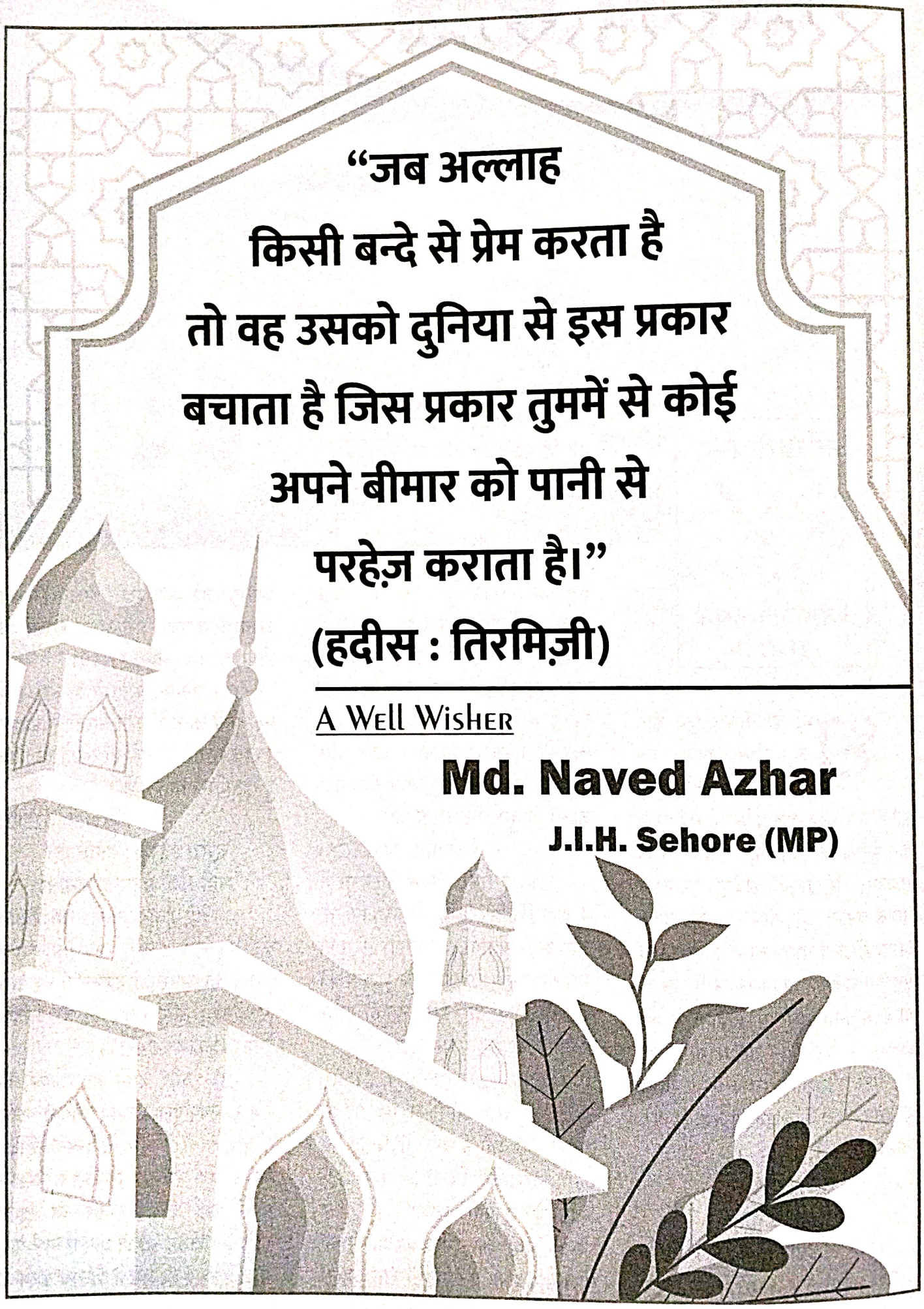
"जब अल्लाह
किसी बन्दे से प्रेम करता है
तो वह उसको दुनिया से इस प्रकार
बचाता है जिस प्रकार तुममें से कोई
अपने बीमार को पानी से
परहेज़ कराता है।"
(हदीस : तिरमिज़ी)
A Well Wisher
Md. Naved Azhar
J.I.H. Sehore (MP)

लिए काफ़ी है। जो व्यक्ति सीधे मार्ग पर चलता है वह अपने ही लाभ के लिए चलता है और जो कुमार्ग पर चलता है तो अपनी हानि के लिए चलता है और कोई व्यक्ति किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा।" (क़ुरआन, 17:13-15)

(3) "ऐ ईमान वालो! परस्पर एक-दूसरे का धन अवैध रूप से न खाओ। लेन-देन होना चाहिए आपस की

प्रथम उद्देश्य यह है कि मनुष्यों को पाश्विकता और उद्दंडता के गर्त से निकल कर मनुष्य बनाना। फिर उनको पवित्र सदाचार सिखाकर सर्वगुण सम्पन्न मानव बनाना और तीसरे वह कि उनके अन्तर में उच्च भाव उत्पन्न करके उनको सदात्मा बनाकर अपने रब से मिलन के योग्य बनाना।

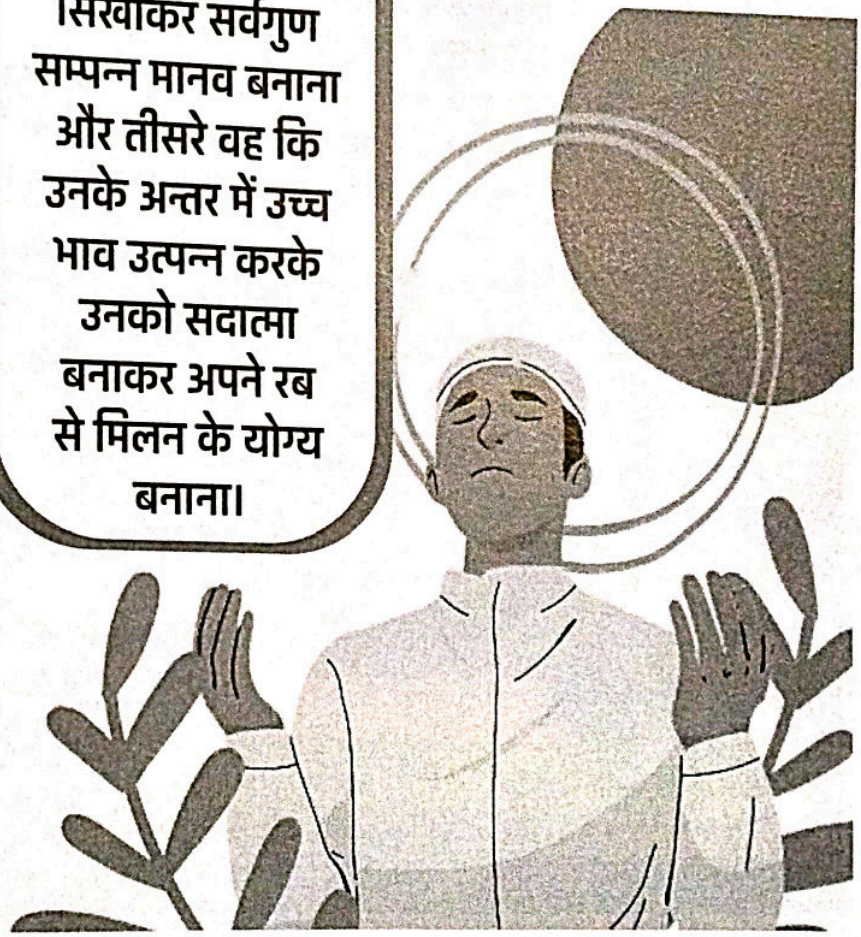

रज़ामन्दी से और ख़ुद अपनी हत्या न करो।" (क़ुरआन, 4:29)

(4) "ऐ ईमान वालो! जानते-बूझते ईश्वर और उसके पैग़म्बर के साथ विश्वासघात न करो। अपनी अमानत में ग़द्दारी के दोषी न बनो।" (क़ुरआन, 8:27)

(5) "ऐ ईमान वालो! ईश्वर के लिए ख़ूब उठने वाले, इनसाफ़ की गवाही देने वाले बनो। किसी (विशेष) जाति की शत्रुता तुमको इतना उत्तेजित न कर दे कि तुम इन्साफ़ से फिर जाओ। तुम न्याय किया करो कि यह ईश-भक्ति और विनम्रता के अधिक अनुकूल है और ईश्वर से डरकर काम करते रहो। निस्सन्देह, ईश्वर को तुम्हारे सभी कार्यों की पूरी सूचना है।" (क़ुरआन, 5:8)

(6) "रहे वे लोग जो ईश्वर की प्रतिज्ञा को सुदृढ़ करने के बाद तोड़ देते हैं और ईश्वर ने जिन सम्बन्धों को जोड़े रखने का आदेश दिया है, उनको भी तोड़ देते हैं और धरती पर उपद्रव मचाते हैं, ऐसे लोगों पर ईश्वर की फटकार होगी और उनके लिए आख़िरत में बहुत बुरा ठिकाना है।" (क़ुरआन, 13:25)

(7) "और दुनिया में सुधार के पश्चात् बिगाड़ न पैदा करो और तुम ईश्वर की उपासना, उससे डरते हुए और उम्मीद रखते हुए, किया करो। निस्सन्देह, ईश्वर की कृपा सुकर्म करने वालों के निकट है।" (क़ुरआन, 7:56)

(8) "ये लोग ईश्वर को छोड़कर जिनकी उपासना करते हैं उनको गाली न दो। ऐसा न हो कि अज्ञानता के कारण सीमा से गुज़रकर वे ईश्वर के सम्बन्ध में भी अपशब्दों का प्रयोग करने लगें।" (क़ुरआन, 6:108)

तीसरा उद्देश्य : मानव को ईश्वर प्रिय बनाना

(1) "तुम सब ईश्वर की उपासना किया करो और उसके साथ किसी को सम्मिलित न करो, माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो, सगे-सम्बन्धियों,

अनाथों, दीन-दुखियों के साथ भी और निकट एवं दूर के पड़ोसियों के साथ, साथ उठने-बैठने वालों और यात्रियों के साथ और अपने दास-दासियों के साथ भी, निस्सन्देह ईश्वर ऐसे लोगों को प्रिय नहीं रखता जो अपने-आपको बड़ा समझते हैं और डींग हांकते हैं।"

(क़ुरआन, 4:36)

(2) "ऐ नबी! उनसे कह दो कि श्रेष्ठता और बड़ाई तो ईश्वर के हाथ में है, जिसे चाहता है प्रदान करता है। ईश्वर बहुत समाई वाला है और सब कुछ जानता है। वह जिसे चाहता है अपनी दयालुता के लिए ख़ास कर लेता है। उसकी उदारता और अनुकम्पा बहुत बड़ी है।" (क़ुरआन, 3:73-74)

(3) "धन और संतान सांसारिक जीवन की शोभा हैं। वस्तुतः बाक़ी रह जाने वाली नेकियां ही तेरे प्रभु के यहाँ परिणाम की दृष्टि से उत्तम हैं और उन्हीं से अच्छी आशाएं जोड़ी जा सकती हैं।"

(क़ुरआन, 18:46)

(4) "ईश्वर जिसको चाहता है अधिक जीविका देता है और जिसे चाहता है नपी-तुली देता है और ये लोग पारलौकिक जीवन के मुक़ाबले में सांसारिक जीवन पर इतराते हैं जबकि सांसारिक जीवन परलोक की अपेक्षा अल्प सुख-सामग्री के अलावा कुछ नहीं है।" (क़ुरआन, 13:26)

(5) "सदा नमाज़ क़ायम करो और ज़कात (धर्मदान) देते रहो और तुम अपने लिए जो भलाई कमाकर आगे भेजोगे, उसे अल्लाह के पास पाओगे, क्योंकि वह तुम्हारे सभी कार्यों को देख रहा है।" (क़ुरआन, 2:210)

(6) "ऐ लोगो! अपने पालनहार के प्रकोप से बचो और डरो और उस दिन से जब न कोई बाप अपने बेटे की ओर से कोई तावान (बदला) अदा कर सकेगा और न कोई बेटा ही अपने बाप की तरफ़ से तावान अदा करेगा। निस्सन्देह ईश्वर का वादा सच्चा है। अतः यह सांसारिक जीवन तुमको धोखे में न डाले और न धोखेबाज़ शैतान तुमको अल्लाह के मामले में धोखे में डाले।" (क़ुरआन, 31:33)

(7) "अपने रब के मार्ग की ओर तत्त्वदर्शिता और सदुपदेश के साथ बुलाओ और उनसे ऐसे ढंग से वाद-विवाद करो जो उत्तम हो। तुम्हारा रब उसे भली-भांति जानता है जो उसके मार्ग से भटक गया और उन्हें भी भली-भांति जानता है जो मार्ग पर हैं।"

(क़ुरआन, 16:125)

(8) "सच्चे ईमान वाले तो वे लोग हैं जिनके दिल अल्लाह का ज़िक्र सुनकर कांप जाते हैं और जब अल्लाह की आयतें उनके सामने पढ़ी जाती हैं तो उनका ईमान बढ़ जाता है और वे अपने रब (पालनहार) पर भरोसा रखते हैं।"

(क़ुरआन, 8:2)

(9) "रहमान (कृपाशील) के (वास्तविक) बन्दे वे हैं जो धरती पर नम्रता के साथ चलते हैं और जब उनसे मूर्ख लोग बात करते हैं तो वे (उनसे उलझते नहीं और) कह देते हैं कि तुम को सलाम।" (क़ुरआन, 25:63)

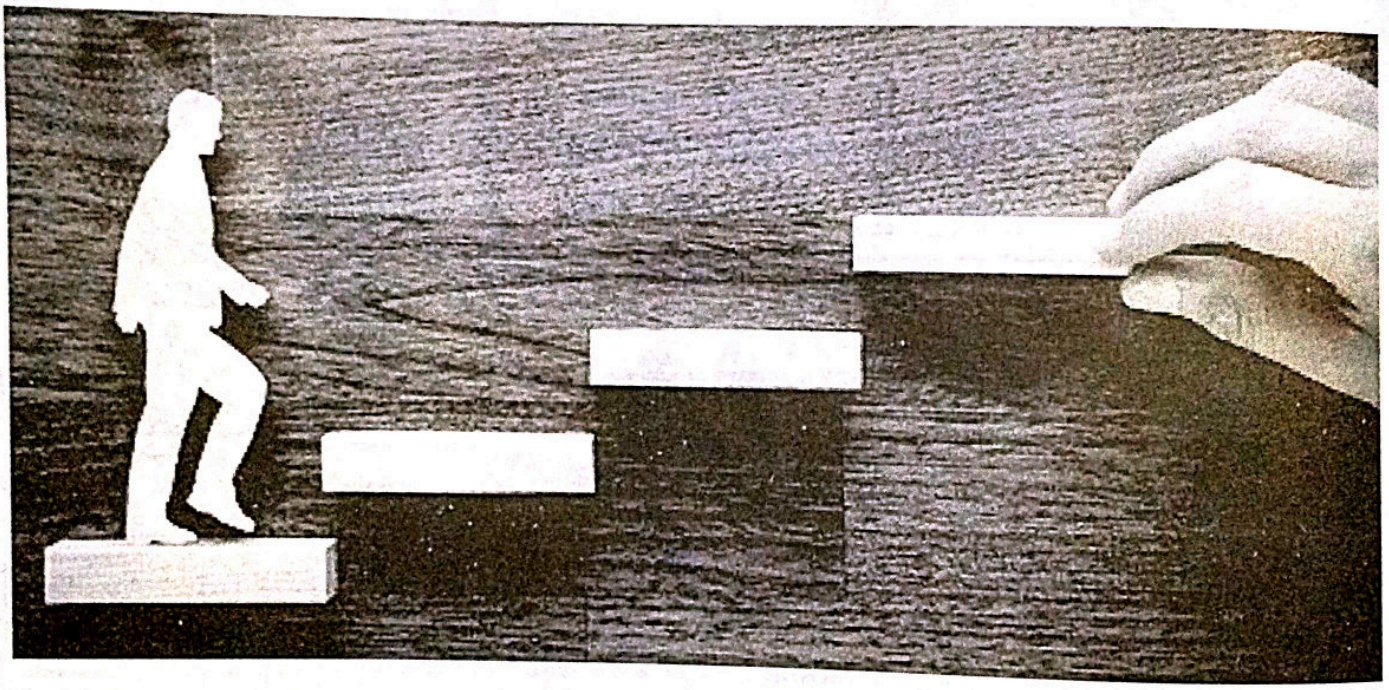

(10) "यह कि कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा और यह कि मनुष्य के लिए बस वही है जिसके लिए उसने प्रयास किया और यह कि उसका प्रयास शीघ्र ही देखा जाएगा फिर उसको पूरा बदला दिया जाएगा। और यह कि आख़िरकार पहुंचना तेरे रब ही के पास है।" (क़ुरआन, 53:38-42) ■■

"ऐ नबी,
तुम्हारे रब की किताब में से
जो कुछ तुम पर प्रकाशना की गई है उसे
(ज्यों का त्यों) सुना दो, कोई उसके फ़रमानों को बदल देने का
अधिकारी नहीं है, (और अगर तुम किसी के लिए उसमें परिवर्तन
करोगे तो) उससे बचकर भागने के लिए कोई
पनाह का ठिकाना न पाओगे।"

(क़ुरआन, 18:27)

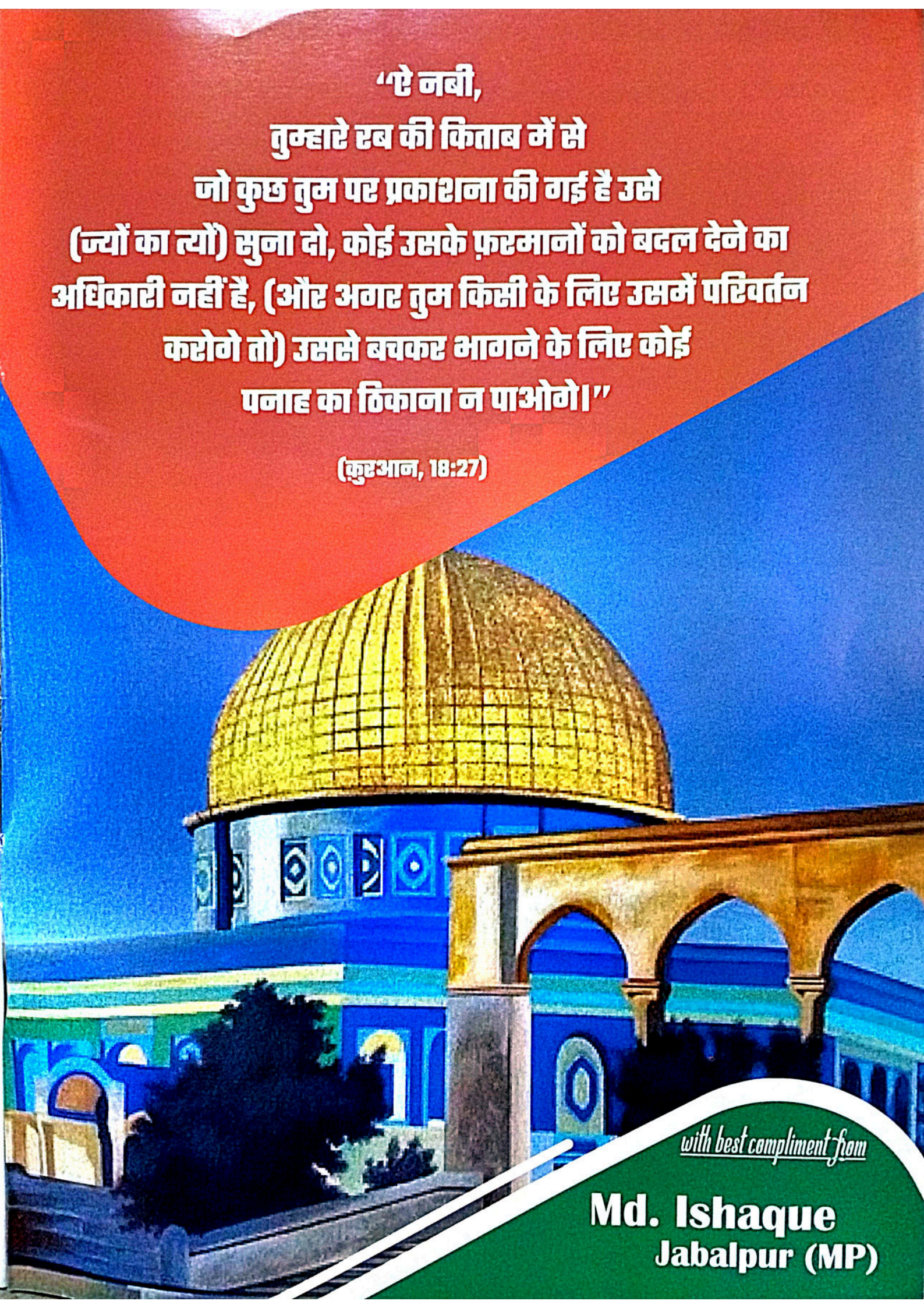

with best compliment from
Md. Ishaque
Jabalpur (MP)

KANTI Monthly, New Delhi
JULY 2024
Posted on 20-21 June 2024
Published on 18 June 2024
Posted Delhi RMS Delhi-110006

RNI 53372/91
DL(S)-05/3147/2024-2026
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U(SE)-73/2024-26
Total Pages with Cover: 52

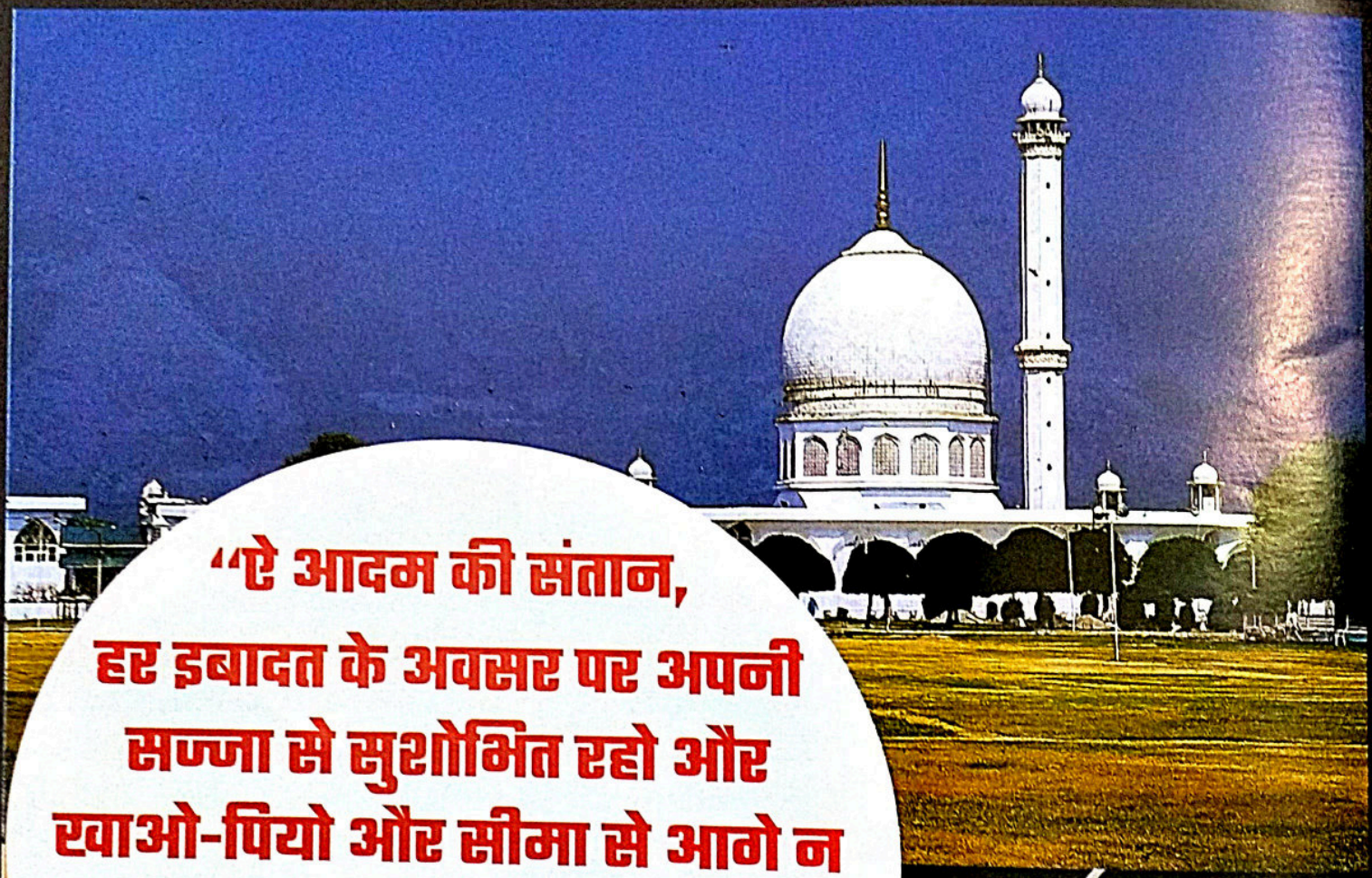

"ऐ आदम की संतान, हर इबादत के अवसर पर अपनी सज्जा से सुशोभित रहो और खाओ-पियो और सीमा से आगे न बढ़ो, अल्लाह सीमा से आगे बढ़ने वालों को पसन्द नहीं करता।"
(क़ुरआन, 7:31)

A Well Wisher

Md. Irshad Khan

Jabalpur (MP)